सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

मै. संदीप प्रेस, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित


जून 2022



# IN-SPACe

## अनगिनत संभावनाएँ

# मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

# सूची क्रम


01 **प्रधानमंत्री का संदेश** 1

02 **प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख** 15

2.1 **भारत का अद्भुत अंतरिक्ष सफ़र**
युवा नेतृत्व के साथ अंतरिक्ष के नए युग में प्रवेश 16

2.1.1 **अंतरिक्ष-अनुसंधान के क्षेत्र में सुधार — डॉ. के सिवन का लेख** 20

2.1.2 **पवन गोयनका का साक्षात्कार** 24

2.2 **भारत में फलती-फूलती खेल संस्कृति**
युवाओं के भविष्य की निर्माता 30

2.2.1 **गेम, सेट, मैच : प्रधानमंत्री मोदी के खेलो इंडिया मंत्र की धूम — अनुराग सिंह ठाकुर का लेख** 34

2.2.2 **44वाँ शतरंज ओलम्पियाड : भारत सुर्खियों में — विश्वनाथ आनंद का लेख** 42

2.3 **विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र**
लोकतंत्र की अमर भावना को सँजोकर रखता भारत 44

2.3.1 **नागरिकों में लोकतंत्र के प्रति जागरूकता बढ़ी — स्वपन दासगुप्ता का लेख** 50

2.4 **भारतीय तीर्थस्थान**
सांस्कृतिक अन्वेषण की दिव्य यात्राएँ 52

2.4.1 **अमीश त्रिपाठी का साक्षात्कार** 56

2.5 **वेस्ट टू वेल्थ**
स्वच्छ, हरित और विकसित भारत की ओर 62

03 **प्रतिक्रियाएँ** 71

# प्रधानमंत्री का संदेश

# मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

'मन की बात' के लिए मुझे आप सभी के बहुत सारे पत्र मिले हैं, सोशल मीडिया और NaMo App पर भी बहुत से संदेश मिले हैं, मैं इसके लिए आपका बहुत आभारी हूँ। इस कार्यक्रम में हम सभी की कोशिश रहती है कि एक-दूसरे के प्रेरणादायी प्रयासों की चर्चा करें, जन-आंदोलन से परिवर्तन की गाथा, पूरे देश को बताएँ। इसी कड़ी में, मैं आज आपसे, देश के एक ऐसे जन-आंदोलन की चर्चा करना चाहता हूँ जिसका देश के हर नागरिक के जीवन में बहुत महत्व है। **लेकिन, उससे पहले मैं आज की पीढ़ी के नौजवानों से, 24-25 साल के युवाओं से एक सवाल पूछना चाहता हूँ और सवाल बहुत गम्भीर है, और मेरे सवाल पर ज़रुर सोचिए। क्या आपको पता है कि आपके माता-पिता जब आपकी उम्र के थे तो एक बार उनसे जीवन का भी अधिकार छीन लिया गया था! आप सोच रहे होंगे कि ऐसा कैसे हो सकता है? ये तो असम्भव है।** लेकिन मेरे नौजवान साथियो, हमारे देश में एक बार ऐसा हुआ था। ये बरसों पहले 1975 की बात है। जून का वही समय था जब इमरजेंसी लगाई गई थी, आपातकाल लागू किया गया था। उसमें, देश के नागरिकों से सारे अधिकार छीन लिए गए थे। उसमें से एक अधिकार, संविधान के आर्टिकल 21 के तहत सभी भारतीयों को मिला 'राइट टू लाइफ एंड पर्सनल लिबर्टी' भी था। उस समय भारत के लोकतंत्र को कुचल देने का प्रयास किया गया था। देश की अदालतें, हर

THE TIMES OF INDIA

STATE OF EMERGENCY DECLARED

Several leaders arrested

Rights suspended

Borooah blames opposition

Security in peril, says P.M.

Situation peaceful

संवैधानिक संस्था, प्रेस, सब पर नियंत्रण लगा दिया गया था। सेंसरशिप की ये हालत थी कि बिना स्वीकृति कुछ भी छापा नहीं जा सकता था। मुझे याद है, तब मशहूर गायक किशोर कुमार जी ने सरकार की वाह-वाही करने से इनकार किया तो उन पर बैन लगा दिया गया। रेडियो पर उनकी एंट्री ही हटा दी गई। लेकिन बहुत कोशिशों, हज़ारों गिरफ्तारियों और लाखों लोगों पर अत्याचार के बाद भी भारत के लोगों का लोकतंत्र से विश्वास डिगा नहीं, रत्ती भर नहीं डिगा। भारत के हम लोगों में सदियों से जो लोकतंत्र के संस्कार चले आ रहे हैं, जो लोकतांत्रिक भावना हमारी रग-रग में है आख़िरकार जीत उसी की हुई। भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से ही इमरजेंसी को हटाकर वापस लोकतंत्र की स्थापना की। तानाशाही की मानसिकता को, तानाशाही वृत्ति-प्रवृत्ति को लोकतांत्रिक तरीके से पराजित करने का ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में मिलना मुश्किल है। इमरजेंसी के दौरान देशवासियों के संघर्ष का गवाह रहने का साझेदार रहने का सौभाग्य मुझे भी मिला था- लोकतंत्र के एक सैनिक के रूप में। **आज, जब देश अपनी आज़ादी के 75 वर्ष का पर्व मना रहा है, अमृत महोत्सव मना रहा है, तो आपातकाल के उस भयावह दौर को भी हमें कभी भी भूलना नहीं चाहिए। आने वाली पीढ़ियों को भी भूलना नहीं चाहिए। अमृत महोत्सव सैकड़ों वर्षों की गुलामी से मुक्ति की विजयगाथा ही नहीं, बल्कि, आज़ादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा भी समेटे हुए है। इतिहास के हर अहम पड़ाव से सीखते हुए ही हम आगे बढ़ते हैं।**

**मेरे प्यारे देशवासियो,** हममें से शायद ही कोई ऐसा हो जिसने अपने जीवन में आकाश से जुड़ी कल्पनाएँ न की हों। बचपन में हर किसी को आकाश के चाँद-तारे उनकी कहानियाँ आकर्षित करती हैं। युवाओं के लिए आकाश छूना, सपनों को साकार करने का पर्याय होता है। **आज हमारा भारत जब इतने सारे क्षेत्रों में सफलता का आकाश छू रहा है, तो आकाश या अंतरिक्ष इससे अछूता कैसे रह सकता है! बीते कुछ समय में हमारे देश में स्पेस सेक्टर से जुड़े कई बड़े काम हुए हैं। देश की इन्हीं उपलब्धियों में से एक है IN-SPACe नाम की एजेंसी का निर्माण। एक ऐसी एजेंसी, जो स्पेस सेक्टर में भारत के प्राइवेट सेक्टर के लिए नए अवसरों को प्रोमोट कर रही है।** इस शुरुआत ने हमारे देश के युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित किया है। मुझे बहुत से नौजवानों के इससे जुड़े संदेश भी मिले हैं। कुछ दिन पहले जब मैं IN-SPACe के हेडक्वार्टर के लोकार्पण के लिए गया था, तो मैंने कई युवा स्टार्ट-अप के आइडियाज़ और उत्साह को देखा। मैंने उनसे काफ़ी देर तक बातचीत भी की। आप भी जब इनके बारे में जानेंगे तो हैरान हुए बिना नहीं रह पाएँगे, जैसे कि, स्पेस स्टार्ट-अप की संख्या और स्पीड को ही ले लीजिए। आज से कुछ साल पहले तक हमारे देश में, स्पेस सेक्टर में स्टार्ट-अप्स के बारे में कोई सोचता तक नहीं था। आज इनकी संख्या सौ से भी ज्यादा है। ये सभी स्टार्ट-अप्स ऐसे-ऐसे आइडिया पर काम कर रहे हैं, जिनके बारे में पहले या तो सोचा ही नहीं जाता था, या फिर प्राइवेट सेक्टर के लिए असम्भव

2

3

माना जाता था। उदाहरण के लिए, चेन्नई और हैदराबाद के दो स्टार्ट-अप्स हैं- Agnikul और Skyroot! ये स्टार्ट-अप्स ऐसे लाँच व्हीकल विकसित कर रही हैं जो अंतरिक्ष में छोटे पेलोड्स लेकर जाएँगे। इससे स्पेस लॉंचिंग की कीमत बहुत कम होने का अनुमान है। ऐसे ही हैदराबाद का एक और स्टार्ट-अप्स Dhruva Space, सैटेलाइट डिप्लॉयर और सैटेलाइट के लिए हाई टेक्नोलॉजी सोलर पैनल्स पर काम कर रहा है। मैं एक और स्पेस स्टार्ट-अप्स Digantara के तनवीर अहमद से भी मिला था, जो स्पेस के कचरे को मैप करने का प्रयास कर रहे हैं। मैंने उन्हें एक चैलेंज भी दिया है, कि वो ऐसी टेक्नोलॉजी पर काम करें जिससे स्पेस के कचरे का समाधान निकाला जा सके। Digantara और Dhruva Space दोनों ही 30 जून को इसरो के लाँच व्हीकल से अपना पहला लाँच करने जा रहे हैं। इसी तरह, बेंगलुरु के एक स्पेस स्टार्ट-अप्स Astrome की फाउंडर नेहा भी एक कमाल के आइडिया पर काम कर रही हैं। ये स्टार्ट-अप्स ऐसे फ्लैट एंटीना बना रहा है जो न केवल छोटे होंगे, बल्कि उनकी कॉस्ट भी काफी कम होगी। इस टेक्नोलॉजी की डिमांड पूरी दुनिया में हो सकती है।

साथियो, IN-SPACe के कार्यक्रम में मैं मेहसाणा की स्कूल स्टूडेंट बेटी तन्वी पटेल से भी मिला था। वो एक बहुत ही छोटी सैटेलाइट पर काम कर रही है, जो अगले कुछ महीनों में स्पेस में लाँच होने जा रही है। तन्वी ने मुझे गुजराती

में बड़ी सरलता से अपने काम के बारे में बताया था। तन्वी की तरह ही देश के करीब 750 स्कूल स्टूडेंट्स, अमृत महोत्सव में ऐसे ही 75 सैटेलाइट पर काम कर रहे हैं, और भी ख़ुशी की बात है कि इनमें से ज्यादातर स्टूडेंट्स देश के छोटे शहरों से हैं।

**साथियो, ये वही युवा हैं जिनके मन में आज से कुछ साल पहले स्पेस सेक्टर की छवि किसी सीक्रेट मिशन जैसी होती थी, लेकिन, देश ने स्पेस रिफॉर्म्स किए, और वही युवा अब अपनी सैटेलाइट लॉन्च कर रहे हैं। जब देश का युवा आकाश छूने को तैयार है, तो फिर हमारा देश कैसे पीछे रह सकता है?**

**मेरे प्यारे देशवासियो,** 'मन की बात' में अब एक ऐसे विषय की बात, जिसे सुनकर आपका मन प्रफुल्लित भी होगा और आपको प्रेरणा भी मिलेगी। बीते दिनों, हमारे ओलम्पिक गोल्ड मेडल विजेता नीरज चोपड़ा फिर से सुर्ख़ियों में छाए रहे। ओलम्पिक के बाद भी वो एक के बाद एक सफलता के नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। फिनलैंड में नीरज ने पावो नुरमी गेम्स में सिल्वर जीता। यही नहीं, उन्होंने अपने ही जैविलिन थ्रो के रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया। कुआर्तने गेम्स में नीरज ने एक बार फिर गोल्ड जीतकर देश का गौरव बढ़ाया। ये गोल्ड उन्होंने ऐसे हालातों में जीता जब वहाँ का मौसम भी बहुत ख़राब था। यही हौसला आज के युवा की पहचान है। स्टार्ट-अप्स से लेकर स्पोर्ट्स वर्ल्ड तक भारत के युवा नए-नए रिकॉर्ड बना रहे हैं। अभी हाल में ही आयोजित हुए खेलो इंडिया यूथ गेम्स में भी हमारे खिलाड़ियों ने कई रिकॉर्ड बनाए। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि इन खेलों में कुल 12 रिकॉर्ड टूटे हैं - इतना ही नहीं, 11 रिकॉर्ड्स महिला खिलाड़ियों के नाम दर्ज़ हुए हैं। मणिपुर की एम. मार्टिना देवी ने वेटलिफ्टिंग में आठ रिकॉर्ड्स बनाए हैं।

इसी तरह संजना, सोनाक्षी और भावना ने भी अलग-अलग रिकॉर्ड्स बनाए हैं। अपनी मेहनत से इन खिलाड़ियों ने बता दिया है कि आने वाले समय में अंतरराष्ट्रीय खेलों में भारत की साख कितनी बढ़ने वाली है। मैं इन सभी खिलाड़ियों को बधाई भी देता हूँ और भविष्य के लिए शुभकामनाएँ भी देता हूँ।

**साथियो, खेलो इंडिया यूथ गेम्स की एक और ख़ास बात रही है, इस बार भी कई**

**ऐसी प्रतिभाएँ उभरकर सामने आई हैं, जो बहुत साधारण परिवारों से हैं। इन खिलाड़ियों ने अपने जीवन में काफ़ी संघर्ष किया और सफलता के इस मुक़ाम तक पहुँचे हैं। इनकी सफलता में, इनके परिवार, और माता-पिता की भी बड़ी भूमिका है।**

70 किलोमीटर साइक्लिंग में गोल्ड जीतने वाले श्रीनगर के आदिल अल्ताफ के पिता टेलरिंग का काम करते हैं, लेकिन, उन्होंने अपने बेटे के सपनों को पूरा करने के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। आज, आदिल ने अपने पिता और पूरे जम्मू-कश्मीर का सिर गर्व से ऊँचा किया है। वेट लिफ्टिंग में गोल्ड जीतने वाले चेन्नई के एल. धनुष के पिता भी एक साधारण कारपेंटर हैं। सांगली की बेटी काजोल सरगार के पिता चाय बेचने का काम करते हैं। काजोल अपने पिता के काम में हाथ भी बँटाती थीं, और वेट लिफ्टिंग की प्रैक्टिस भी करती थीं। उनकी और उनके परिवार की ये मेहनत रंग लाई और काजोल ने वेट लिफ्टिंग में खूब वाह-वाही बटोरी है। ठीक इसी प्रकार का करिश्मा रोहतक की तनु ने भी किया है। तनु के पिता राजबीर सिंह रोहतक में एक स्कूल के बस ड्राईवर हैं। तनु ने कुश्ती में स्वर्ण पदक जीतकर अपना और अपने परिवार का, अपने पापा का सपना सच करके दिखाया है।

साथियो, खेल जगत में अब भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा तो बढ़ ही रहा है, साथ ही, भारतीय खेलों की भी नई पहचान बन रही है। जैसे कि, इस बार खेलो इंडिया यूथ गेम्स में ओलम्पिक में शामिल होने वाली स्पर्धाओं के अलावा पाँच स्वदेशी खेल भी शामिल हुए थे। ये पाँच खेल हैं- गतका, थांग-टा, योगासन, कलरीपायट्टु और मल्लखम्ब।

साथियो, भारत में एक ऐसे खेल का अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट होने जा रहा है जिस खेल का जन्म सदियों पहले हमारे ही देश में हुआ था, भारत में हुआ था। ये आयोजन है 28 जुलाई से शुरू हो रहे शतरंज ओलम्पियाड का। इस बार, शतरंज ओलम्पियाड में 180 से भी ज्यादा देश हिस्सा ले रहे हैं। खेल और फिटनेस की हमारी आज की चर्चा एक और नाम के बिना पूरी नहीं हो सकती है - ये नाम है तेलंगाना की माउंटेनर पूर्णा मालावथ का। पूर्णा ने 'सेवेन समिट्स चैलेंज' को पूरा कर कामयाबी का एक और परचम लहराया है। सेवेन समिट्स चैलेंज यानी दुनिया की सात सबसे कठिन और ऊँची पहाड़ियों पर चढ़ने की चुनौती। पूर्णा ने अपने बुलंद हौसलों के साथ, नॉर्थ अमेरिका की सबसे ऊँची चोटी, 'माउंट देनाली' की चढ़ाई पूरी कर देश को गौरवांवित किया है। पूर्णा, भारत की वही बेटी है जिन्होंने महज 13 साल की उम्र में माउंट एवरेस्ट पर जीत हासिल करने का अद्भुत कारनामा कर दिखाया था।

साथियो, जब बात खेलों की हो रही है, तो मैं आज भारत की सर्वाधिक

प्रतिभाशाली क्रिकेटरों में, उनमें से एक मिताली राज की भी चर्चा करना चाहूँगा। उन्होंने इसी महीने क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की है, जिसने कई खेल प्रेमियों को भावुक कर दिया है। मिताली, महज एक असाधारण खिलाड़ी नहीं रही हैं, बल्कि अनेक खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत भी रही हैं। मैं मिताली को उनके भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ देता हूँ।

**मेरे प्यारे देशवासियो,** हम 'मन की बात' में वेस्ट टू वेल्थ से जुड़े सफल प्रयासों की चर्चा करते रहे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है मिज़ोरम की राजधानी का। आइज़ोल में एक खूबसूरत नदी है 'चिटे लुई', जो बरसों की उपेक्षा के चलते, गंदगी और कचरे के ढेर में बदल गई। पिछले कुछ वर्षों में इस नदी को बचाने के लिए प्रयास शुरू हुए हैं। इसके लिए स्थानीय एजेंसियाँ, स्वयंसेवी संस्थाएँ और स्थानीय लोग मिलकर सेव चिटे लुई एक्शन प्लान भी चला रहे हैं। नदी की सफ़ाई के इस अभियान ने वेस्ट से वेल्थ क्रिएशन का अवसर भी बना दिया है। दरअसल, इस नदी में और इसके किनारों पर बहुत बड़ी मात्रा में प्लास्टिक और पॉलिथीन का कचरा भरा हुआ था। नदी को बचाने के लिए काम कर रही संस्था ने इसी पॉलिथिन से सड़क बनाने का फैसला लिया, यानी जो कचरा नदी से निकला, उससे मिज़ोरम के एक गाँव में राज्य की पहली प्लास्टिक रोड बनाई

गई, यानी स्वच्छता भी और विकास भी।

साथियो, ऐसा ही एक प्रयास पुदुचेरी के युवाओं ने भी अपनी स्वयंसेवी संस्थाओं के जरिए शुरू किया है। पुदुचेरी समंदर के किनारे बसा है। वहाँ के बिचेज़ और समुद्री खूबसूरती देखने बड़ी संख्या में लोग आते हैं। लेकिन पुदुचेरी के समंदर तट पर भी प्लास्टिक से होने वाली गंदगी बढ़ रही थी, इसलिए अपने समंदर, बिचेज़ और इकॉलॉजी को बचाने के लिए यहाँ लोगों ने रिसाइकिलिंग फॉर लाइफ अभियान शुरू किया है। आज पुदुचेरी के कराईकल में हज़ारों किलो कचरा हर दिन कलेक्ट किया जाता है और उसे सेग्रीगेट किया जाता है। इसमें जो ऑर्गेनिक कचरा होता है, उससे खाद बनाई जाती है, बाकी दूसरी चीज़ों को अलग करके, रिसाइकल कर लिया जाता है। इस तरह के प्रयास प्रेरणादायी तो है ही, सिंगल यूज प्लास्टिक के ख़िलाफ़ भारत के अभियान को भी गति देते हैं।

साथियो, इस समय जब मैं आपसे बात कर रहा हूँ, तो हिमाचल प्रदेश में एक अनोखी साइक्लिंग रैली भी चल रही है। मैं इस बारे में भी आपको बताना चाहता हूँ। स्वच्छता का संदेश लेकर साइकिल सवारों का एक समूह शिमला से मंडी तक निकला है। पहाड़ी रास्तों पर करीब पौने दो सौ किलोमीटर की ये दूरी, ये लोग, साइकिल चलाते हुए ही पूरी करेंगे। इस समूह में बच्चे भी और बुज़ुर्ग भी हैं। **हमारा पर्यावरण स्वच्छ रहे, हमारे पहाड़-नदियाँ, समंदर, स्वच्छ रहें, तो स्वास्थ्य भी उतना ही बेहतर होता जाता है। आप मुझे, इस तरह के प्रयासों के बारे में ज़रुर लिखते रहिए।**

**मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में मानसून का लगातार विस्तार हो रहा है। अनेक राज्यों में बारिश बढ़ रही है। ये समय 'जल' और 'जल संरक्षण' की दिशा में विशेष प्रयास करने का भी है। हमारे देश में तो सदियों से ये ज़िम्मेदारी समाज ही मिलकर उठाता रहा है।** आपको याद होगा, 'मन की बात' में हमने एक बार स्टेप वेल्स यानी बावड़ियों की विरासत पर चर्चा की थी। बावड़ी उन बड़े कुओं को कहते हैं जिन तक सीढ़ियों से उतरकर पहुँचते हैं। राजस्थान के उदयपुर में ऐसी ही सैकड़ों

साल पुरानी एक बावड़ी है- 'सुल्तान की बावड़ी'। इसे राव सुल्तान सिंह ने बनवाया था, लेकिन, उपेक्षा के कारण धीरे-धीरे ये जगह वीरान होती गई और कूड़े-कचरे के ढेर में तब्दील हो गई है। एक दिन कुछ युवा ऐसे ही घूमते हुए इस बावड़ी तक पहुँचे और इसकी स्थिति देखकर बहुत दुखी हुए। इन युवाओं ने उसी क्षण सुल्तान की बावड़ी की तस्वीर और तकदीर बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने अपने इस मिशन को नाम दिया- 'सुल्तान से सुर-तान'। आप सोच रहे होंगे, कि ये सुर-तान क्या है। दरअसल, अपने प्रयासों से इन युवाओं ने न सिर्फ़ बावड़ी का कायाकल्प किया, बल्कि इसे, संगीत के सुर और तान से भी जोड़ दिया है। सुल्तान की बावड़ी की सफ़ाई के बाद, उसे सजाने के बाद, वहाँ सुर और संगीत का कार्यक्रम होता है। इस बदलाव की इतनी चर्चा है कि विदेश से भी कई लोग इसे देखने आने लगे हैं। इस सफल प्रयास की सबसे ख़ास बात यह है कि अभियान शुरू करने वाले युवा चार्टर्ड अकाउंटेंट्स हैं। संयोग से, अब से कुछ दिन बाद, एक जुलाई को चार्टर्ड अकाउंटेंट्स डे है। मैं देश के सभी सीए को अग्रिम बधाई देता हूँ। **हम, अपने जल-स्रोतों को संगीत और अन्य सामाजिक कार्यक्रमों से जोड़कर उनके प्रति इसी तरह जागरूकता का भाव पैदा कर सकते हैं। जल संरक्षण तो वास्तव में जीवन संरक्षण है। आपने देखा होगा, आजकल कितने ही 'नदी महोत्सव' होने लगे हैं। आपके शहरों में भी इस तरह के जो भी जल-स्रोत हैं वहाँ कुछ-न-कुछ आयोजन अवश्य करें।**

**मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे उपनिषदों का एक जीवन मंत्र है- 'चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति' - आपने भी इस मंत्र को ज़रुर सुना होगा। इसका अर्थ है- चलते रहो, चलते रहो, चलते रहो। ये मंत्र हमारे देश में इतना लोकप्रिय इसलिए है क्योंकि सतत् चलते रहना, गतिशील बने रहना, ये हमारे स्वभाव का हिस्सा है। एक राष्ट्र के रूप में हम हज़ारों सालों की विकास यात्रा करते हुए यहाँ तक पहुँचे हैं। एक समाज के रूप में, हम हमेशा नए विचारों, नए बदलावों को स्वीकार करके आगे बढ़ते आए हैं। इसके पीछे हमारे सांस्कृतिक गतिशीलता और यात्राओं का बहुत बड़ा योगदान है। इसीलिए तो, हमारे ऋषियों-मुनियों ने तीर्थयात्रा जैसी धार्मिक जिम्मेदारियाँ हमें सौंपी थीं।** अलग-अलग तीर्थ यात्राओं पर तो हम सब जाते ही हैं। आपने देखा है कि इस बार चारधाम यात्रा में किस तरह बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। हमारे देश में समय-समय पर अलग-अलग देव-यात्राएँ भी निकलती हैं। देव-यात्राएँ, यानी जिसमें केवल श्रद्धालु ही नहीं बल्कि हमारे भगवान् भी यात्रा पर निकलते हैं। अभी कुछ ही दिनों में एक जुलाई से भगवान् जगन्नाथ की प्रसिद्ध यात्रा शुरू होने जा रही है। ओडिशा में, पुरी की यात्रा से तो हर देशवासी परिचित है। लोगों का प्रयास रहता है कि इस अवसर पर पुरी जाने का सौभाग्य मिले। दूसरे राज्यों में भी जगन्नाथ यात्रा खूब धूमधाम से निकाली जाती है। भगवान् जगन्नाथ यात्रा आषाढ़ महीने की द्वितीया से शुरू होती है। हमारे ग्रंथों में 'आषाढस्य द्वितीयदिवसे...रथयात्रा', इस तरह संस्कृत श्लोकों में वर्णन मिलता है। गुजरात के अहमदाबाद में भी हर वर्ष आषाढ़ द्वितीया से रथयात्रा चलती है। मैं गुजरात में था, तो मुझे भी हर वर्ष इस यात्रा में सेवा का सौभाग्य मिलता था। आषाढ़ द्वितीया, जिसे आषाढ़ी बिज भी कहते हैं, इस दिन से ही कच्छ का नववर्ष भी शुरू होता है। मैं, मेरे सभी कच्छी भाइयो-बहनों को नववर्ष की शुभकामनाएँ भी देता हूँ। मेरे लिए इसलिए भी ये दिन बहुत खास है - मुझे याद है, आषाढ़ द्वितीया से एक दिन पहले, यानी

आषाढ़ की पहली तिथि को हमने गुजरात में एक संस्कृत उत्सव की शुरुआत की थी, जिसमें संस्कृत भाषा में गीत-संगीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इस आयोजन का नाम है- 'आषाढस्य प्रथम दिवसे'। उत्सव को ये खास नाम देने के पीछे भी एक वज़ह है। दरअसल, संस्कृत के महान कवि कालिदास ने आषाढ़ महीने से ही वर्षा के आगमन पर मेघदूतम् लिखा था। मेघदूतम् में एक श्लोक है- आषाढ़स्य प्रथम दिवसे मेघम् आश्लिष्ट सानुम्, यानी आषाढ़ के पहले दिन पर्वत शिखरों से लिपटे हुए बादल, यही श्लोक इस आयोजन का आधार बना।

साथियो, अहमदाबाद हो या पुरी, भगवान् जगन्नाथ अपनी इस यात्रा के ज़रिए हमें कई गहरे मानवीय संदेश भी देते हैं। भगवान् जगन्नाथ जगत के स्वामी तो हैं ही, लेकिन उनकी यात्रा में ग़रीबों, वंचितों की विशेष भागीदारी होती है। भगवान् भी समाज के हर वर्ग और व्यक्ति के साथ चलते हैं। ऐसे ही हमारे देश में जितनी भी यात्राएँ होती हैं, सबमें ग़रीब-अमीर, ऊँच-नीच ऐसे कोई भेदभाव नज़र नहीं आते। सारे भेदभाव से ऊपर उठकर यात्रा ही सर्वोपरि होती है। जैसेकि महाराष्ट्र में पंढरपुर की यात्रा के बारे में आपने ज़रुर सुना होगा। पंढरपुर की यात्रा में कोई भी न बड़ा होता है, न छोटा होता है। हर कोई वारकरी होता है, भगवान् विट्ठल का सेवक होता है। अभी 4 दिन बाद ही 30 जून से अमरनाथ यात्रा भी शुरू होने जा रही है। पूरे देश से श्रद्धालु अमरनाथ यात्रा के लिए जम्मू और कश्मीर पहुँचते हैं। जम्मू और कश्मीर के स्थानीय लोग उतनी ही श्रद्धा से इस यात्रा की ज़िम्मेदारी उठाते हैं और तीर्थयात्रियों का सहयोग करते हैं।

साथियो, दक्षिण में ऐसा ही महत्व सबरीमाला यात्रा का भी है। सबरीमाला की पहाड़ियों पर भगवान अयप्पा के दर्शन करने के लिए ये यात्रा तब से चल रही है, जब ये रास्ता पूरी तरह जंगलों से घिरा रहता था। **आज भी लोग जब इन यात्राओं में जाते हैं, तो उसे धार्मिक अनुष्ठानों से लेकर रुकने-ठहरने की व्यवस्था तक ग़रीबों के लिए कितने अवसर पैदा होते हैं यानी ये यात्राएँ प्रत्यक्ष रूप से हमें ग़रीबों की सेवा का अवसर देती हैं और ग़रीब के लिए उतनी ही हितकारी होती हैं। इसीलिए तो, देश भी अब आध्यात्मिक यात्राओं में श्रद्धालुओं के लिए सुविधाएँ बढ़ाने के लिए इतने सारे प्रयास कर रहा है। आप भी ऐसी किसी यात्रा पर जाएँगे तो आपको अध्यात्म के साथ-साथ एक भारत-श्रेष्ठ भारत के भी दर्शन होंगे।**

**मेरे प्यारे देशवासियो,** हमेशा की तरह इस बार भी 'मन की बात' के जरिए आप सभी से जुड़ने का ये अनुभव बहुत ही सुखद रहा। हमने देशवासियों की सफलताओं और उपलब्धियों की चर्चा की। इस सबके बीच हमें कोरोना के ख़िलाफ़ सावधानी को भी ध्यान रखना है। हालाँकि, संतोष की बात है कि आज देश के पास वैक्सीन का व्यापक सुरक्षा कवच मौजूद है। हम 200 करोड़ वैक्सीन डोज़ के करीब पहुँच गए हैं। **देश में तेजी से प्रीकॉशन डोज़ भी लगाई जा रही है। अगर आपकी सेकंड डोज़ के बाद प्रीकॉशन डोज़ का समय हो गया है, तो आप ये तीसरी डोज़ ज़रुर लें। अपने परिवार के लोगों को, ख़ासकर बुजुर्गों को भी प्रीकॉशन डोज़ लगवाएँ। हमें हाथों की सफ़ाई और मास्क जैसी ज़रुरी सावधानी भी बरतनी ही है। हमें बारिश के मौसम में आस-पास गंदगी से होने वाली बीमारियों से भी आगाह रहना है। आप सब सजग रहिए, स्वस्थ रहिए और ऐसी ही ऊर्जा से आगे बढ़ते रहिए। अगले महीने हम एक बार फिर मिलेंगे, तब तक के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, नमस्कार।**

# मन की बात

*प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख*

# भारत का अद्भुत अंतरिक्ष सफ़र

## युवा नेतृत्व के साथ अंतरिक्ष के नए युग में प्रवेश

**“आज जब हमारा भारत इतने अधिक क्षेत्रों में सफलता की ऊँचाइयों को छू रहा है, तो आकाश या अंतरिक्ष उससे अछूता कैसे रह सकता है! पिछले कुछ वर्षों में हमारे देश में अंतरिक्ष क्षेत्र से जुड़े कई बड़े कमाल हुए हैं। इनमें से एक IN-SPACe का निर्माण रहा है।”**

**-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
**(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)**

“प्रधानमंत्री का ‘मन की बात’ का आज (26 जून) का एपिसोड अग्निकूल कॉसमॉस में सभी के लिए एक अविस्मरणीय एपिसोड रहेगा। हम इस रिकग्निशन से बेहद खुश हैं और हम अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं कि जब इस तरह के ऐतिहासिक रिफॉर्म्स हो रहे हैं तब स्पेस सेक्टर में हमें काम करने का मौका मिल रहा है।”

**-श्रीनाथ रविचंद्रन**
सीईओ और सह-संस्थापक,
अग्निकूल कॉसमॉस

21 नवंबर, 1963 - भारत ने केरल के तिरुवनंतपुरम के पास थुंबा से अपना पहला साउंडिंग रॉकेट लॉन्च किया। गाँव के मैदान से की गई यह छोटी-सी शुरुआत ऊपरी वातावरण की जाँच करने की एक पहल से कहीं अधिक थी; इसने भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के शुभारम्भ को चिह्नित किया।

सेंट मैरी मैग्डलीन चर्च से शुरू किए गए इस अंतरिक्ष कार्यक्रम का लम्बा सफ़र भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा तय किया गया। पहले रॉकेट के प्रक्षेपण से 51 साल बाद, 2014 में मार्स ऑर्बिटर मिशन (एमओएम) के मंगल ग्रह की कक्षा में सफल प्रवेश ने भारत के हज़ारों वैज्ञानिकों और तकनीशियनों के धैर्य और दृढ़ संकल्प को देखा है, जो डॉ. विक्रम साराभाई की इस अवधारणा में विश्वास करते थे- ‘मनुष्य और समाज की वास्तविक समस्याओं के लिए हमें उन्नत तकनीकों के अनुप्रयोग में किसी से पीछे नहीं रहना चाहिए।’

डॉ. साराभाई के इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने अंतरिक्ष आयोग का गठन किया और आत्मनिर्भरता के उद्देश्य से अंतरिक्ष विज्ञान, प्रौद्योगिकी और अनुप्रयोग के विकास को बढ़ावा देने की प्राथमिक



ज़िम्मेदारी के साथ जून 1972 में अंतरिक्ष विभाग की स्थापना की। पहले साउंडिंग रॉकेट के लॉन्च के लिए रॉकेट, पेलोड, रडार और कम्प्यूटर सहित सब कुछ विदेश से आया था, जबकि मार्स ऑर्बिटर मिशन पूरी तरह से स्वदेशी मिशन था, जिसने आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी।

भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम अंतरिक्ष की दौड़ जीतने के लिए नहीं है। बल्कि, इसका प्राथमिक उद्देश्य हमेशा राष्ट्र के सर्वांगीण विकास को सुगम बनाना रहा है। इसरो द्वारा विकसित भारत की अपनी क्षेत्रीय नेविगेशन उपग्रह प्रणाली IRNSS या NavIC वाहन ट्रैकिंग सिस्टम, मोबाइल, सर्वेक्षण आदि क्षेत्रों में कार्य कर रही है।

इसरो भारत के पहले मानव अंतरिक्ष यान मिशन ‘गगनयान’ के लिए भी

*1963 में भारत के पहले प्रक्षेपण के लिए रॉकेट को लॉन्चिंग साइट तक साइकिल पर ले जाया गया था।*

कमर कस रहा है। इसके अलावा, ‘चंद्रयान-3’, ‘शुक्रयान’, मिशन ‘तृष्णा’ (फ्रांसीसी अंतरिक्ष एजेंसी सीएनईएस के सहयोग से) भी पाइपलाइन में हैं।

सरकार ने अंतरिक्ष क्षेत्र में स्टार्ट-अप्स के जीवंत इकोसिस्टम के महत्व को भी मान्यता दी है। प्रधानमंत्री ने हमेशा भारत के युवाओं और उद्यमियों की क्षमता के पूरी तरह से उपयोग के लिए अंतरिक्ष सहित सभी उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की गतिविधियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया है। उनका मानना है कि जहाँ प्रत्येक भारतीय नागरिक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभ उठा सकता है, वहीं उन्हें इस क्षेत्र के विकास में हितधारकों के रूप में भाग लेने में भी सक्षम होना चाहिए।

प्रधानमंत्री ने, अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में, भारत में निजी संस्थाओं के लिए अंतरिक्ष में नए अवसरों को बढ़ावा देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय

अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe) के गठन के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा, "आज से कुछ साल पहले तक हमारे देश में, स्पेस सेक्टर में स्टार्ट-अप्स के बारे में कोई सोचता तक नहीं था। आज इनकी संख्या सौ से भी ज़्यादा है। ये सभी स्टार्ट-अप्स ऐसे-ऐसे आइडियाज़ पर काम कर रहे हैं, जिनके बारे में पहले या तो सोचा ही नहीं जाता था, या फिर प्राइवेट सेक्टर के लिए असम्भव माना जाता था।"

भारतीय अंतरिक्ष विभाग को निजी क्षेत्र के लिए खोले जाने के बाद से, केवल दो वर्षों में, 55 से अधिक स्टार्ट-अप्स ने इसरो के साथ पंजीकरण किया है। IN-SPACe न केवल अंतरिक्ष क्षेत्र का त्वरित विकास करेगा बल्कि भारतीय उद्योग को वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भागीदार बनने में भी सक्षम करेगा। इससे प्रौद्योगिकी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर रोज़गार के अवसर उपलब्ध होंगे।

अंतरिक्ष क्षेत्र ने सरकारी नीतियों और सुधारों की सहायता से उद्यमियों और निजी व्यवसायों का एक सम्पन्न पारिस्थितिकी तंत्र प्रस्तुत किया है। वर्तमान में भारत की अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 40,000 करोड़ रुपये है। यह निश्चित रूप से तेज़ी से बढ़ेगा और भारत की आर्थिक विकास की गाथा में प्रमुख योगदानकर्ता बन जाएगा। वास्तव में भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम, आत्मनिर्भर भारत का ध्वजवाहक है।

"भारत के प्रधानमंत्री द्वारा ('मन की बात' सम्बोधन में) दिगंतरा के स्पेस वेदर मिशन के लॉन्च की घोषणा करने से ज़्यादा शानदार क्या हो सकता है! हम हमारे प्रयासों को मान्यता देने के लिए सरकार को धन्यवाद देना चाहते हैं।"

**-अनिरुद्ध शर्मा**
सह-संस्थापक और सीईओ, दिगंतरा



# आज़ादी-सैट में मेहसाणा की तन्वी का योगदान

मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ कि उन्होंने अपने 'मन की बात' में मेरा ज़िक्र किया। मेरे माता-पिता और मेरे पूरे गाँव को मुझ पर गर्व हो रहा है। Space Kidz India द्वारा हमें तालीम दी गई थी कि बोर्ड पर कैसे काम करते हैं और वह हमने किया, और दिल्ली भेजा। देश भर के 75 सरकारी विद्यालयों के 750 लड़कियों ने इस किट पर काम किया है, जिसमें गुजरात से हमारे स्कूल का चयन हुआ और Space Kidz India द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बुलाया गया। 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' मनाने की ख़ुशी में इस सैटेलाइट का नाम आज़ादी-सैट रखा गया है। स्पेस में **आज़ादी-सैट** के लॉन्च होने से इंटरनेट के साधनों पर सरलता से काम करने में मदद मिलेगी। मुझे विज्ञान में बहुत रुचि है और आगे चल कर मैं साइंटिस्ट बनना चाहती हूँ।



## भारतीय स्पेस स्टार्ट-अप्स
*अंतरिक्ष युग के उभरते सितारे*

### अग्निकूल कॉसमॉस
एक अंतरिक्ष टेक स्टार्ट-अप जो सूक्ष्म और नैनो उपग्रहों के लिए कक्षीय श्रेणी के रॉकेटों का डिज़ाइन, निर्माण, परीक्षण और प्रक्षेपण करता है। इनका लक्ष्य भारत में सभी के अंतरिक्ष तक के सफर को किफ़ायती बनाना है।

### ध्रुवा स्पेस
इनका विज़न है स्मॉल सैटेलाइट इंजीनियरिंग में अग्रणी बनना और पृथ्वी और उसके परे स्पेस-बेस्ड ऐप्लिकेशन्स के लिए बुनियादी ढांचे की पेशकश करना। ध्रुवा स्पेस उपग्रहों के लिए उच्च प्रौद्योगिकी वाले सौर पैनलों पर काम कर रहा है।

### स्काईरूट
यह स्टार्ट-अप अंतरिक्ष तक अनुक्रियाशील, भरोसेमंद और किफ़ायती पहुंच के लिए प्रौद्योगिकियों का निर्माण कर रहा है। इनका मिशन आज की तकनीक की सीमाओं को आगे बढ़ाते हुए, सभी के लिए अंतरिक्ष को सुलभ बनाना है।

### दिगंतरा
यह स्टार्ट-अप LEO (लो-अर्थ ऑर्बिट) में किफ़ायती नैनो उपग्रहों के एक समूह को तैनात करके ग्लोबल रियल-टाइम अर्थ कवरेज के साथ एक स्पेस-बेस्ड सर्विलांस प्लेटफार्म की स्थापना कर रहा है। अंतरिक्ष में मलबे को मैप करने की कोशिश भी ज़ारी है।

### ऐस्ट्रोम
यह स्टार्ट-अप मिलीमीटर वेव वायरलेस कम्युनिकेशन में कार्यरत है। ये ऐसी प्रौद्योगिकियों का विकास कर रहे हैं जो सस्ती कीमत पर 5G को रोलआउट करने में मदद करेगी। यह स्टार्ट-अप छोटे और किफ़ायती फ़्लैट एंटेना भी बना रहा है।

# अंतरिक्ष-अनुसंधान के क्षेत्र में सुधार

**डॉ. के. सिवन**

पूर्व-सचिव, अंतरिक्ष विभाग,
भारत सरकार

भारत में 1960 के दशक में अंतरिक्ष-अनुसंधान से जुड़ी गतिविधियों को राष्ट्रीय विकास से जोड़ने के प्रयास शुरू हुए। अंतरिक्ष से जुड़ी उन्नत प्रौद्योगिकियों के लाभ देश के आम लोगों, खासतौर से विकास में पिछड़े क्षेत्रों के लोगों तक पहुँचाने के प्रयास किए गए ताकि देश का नव-निर्माण और विकास हो।

इस विज़न को साकार रूप देने के लिए भारत सरकार ने देश के अंतरिक्ष-अनुसंधान कार्यक्रम को अपनाया और भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) ने प्रक्षेपण वाहन, अंतरिक्ष यान, ज़मीनी प्रणालियों के पूरे बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकियों को स्वदेश में निर्मित किया। भारत अंतरिक्ष-अनुसंधान के क्षेत्र में विश्व के अग्रणी देशों में शामिल हो गया। इस समय भारत के आम लोगों की सुरक्षा और जीवन की गुणवत्ता अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हैं।

प्रधानमंत्री ने अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की क्षमताओं का पूरा उपयोग करने का बड़ा परिदृश्य सामने रखा। इस दूरदर्शितापूर्ण विज़न में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल तीव्र राष्ट्रीय विकास, अंतरिक्ष-अनुसंधान से जुड़ी अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान बढ़ाना और इस क्षेत्र में भारत को वैश्विक नेता के रूप में प्रतिष्ठित करना शामिल हैं।

ISRO इस परिकल्पना को अकेले हासिल नहीं कर सकता है इसलिए, प्रधानमंत्री ने देश की सम्पूर्ण युवा शक्ति को इस अभियान से जोड़ने का अनुपम विचार सामने रखा और अंतरिक्ष के क्षेत्र को गैर-सरकारी संस्थाओं और व्यक्तियों, जैसे निजी उद्यमों, उभरते स्टार्ट-अप्स और अकादमिक विद्वानों आदि के लिए खोल दिया। लेकिन निजी उद्योगों द्वारा अंतरिक्ष गतिविधियों पूँजी गहन, जोखिम भरी और जटिल हैं, जिनके लिए सरकार ने कई उपाय किए हैं।

अंतरराष्ट्रीय समझौते के अनुसार, इस क्षेत्र में निजी और सरकारी उद्यमों की सभी गतिविधियों के लिए सरकार ही ज़िम्मेदार मानी जाती है। इसलिए, निजी उद्यमों की गतिविधियों को नियमित करने और उनकी अनुमति देने हेतु एक एकीकृत प्रणाली IN-SPACe बनाई गई है।

अंतरिक्ष से जुड़ी गतिविधियों में दूसरी बड़ी चुनौती बहुत अधिक लागत और विशाल बुनियादी ढांचा खड़ा करने की है। इस समस्या के समाधान का रास्ता भी सरकार ने निकाला है। निजी उद्योगों को ISRO द्वारा निर्मित बुनियादी सुविधाओं और विकसित प्रौद्योगिकियों के इस्तेमाल की अनुमति दी जाती है। एक उदार अंतरिक्ष नीति का मसौदा बना लिया गया है और इसके सरकार द्वारा स्वीकृत होने के बाद निजी उद्यमियों के लिए इस क्षेत्र में निर्बाध कार्य करना सहज हो जाएगा।

प्रधानमंत्री के निर्देशों और IN-SPACe के प्रयासों के परिणामस्वरूप, स्टार्ट-अप्स और निजी उद्यमियों ने अंतरिक्ष-उद्योगों से जुड़ी गतिविधियों के प्रति काफ़ी उत्साह दिखाया। इस बारे में जून 2021 में सरकार की घोषणा से अब तक एक सौ से ज्यादा उद्यम/स्टार्ट-अप्स कार्यरत हैं। ये स्टार्ट-अप्स छोटे सैटेलाइट प्रक्षेपण वाहनों का डिज़ाइन, विकास और निर्माण, अंतरिक्ष यान/प्रक्षेपण वाहन से सम्बंधित यंत्रों का निर्माण, नई प्रक्षेपण प्रणालियों का विकास और अंतरिक्ष के मलबे का निपटान आदि पर काम कर रहे हैं।

यह एक अच्छा संकेत है। साथ ही, यह भी अच्छी बात है कि निजी उद्यमों/ स्टार्ट-अप्स ने अंतरिक्ष से जुड़ी सभी प्रकार की गतिविधियों में पहल की है। उद्यमों/ स्टार्ट-अप्स द्वारा तेज़ी से नई-नई प्रौद्योगिकियों का विकास उत्साहजनक है और बहुत विश्वास बढ़ाता है।

दो स्टार्ट-अप्स द्वारा विकसित दो ऐसी प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन पिछले दिनों, 30 जून 2022 को PSLV-C53 के प्रक्षेपण में किया गया।

नए-नए प्रकार की उच्च-स्तरीय अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के विकास में तेज़ी लाई जा रही है। इस क्षेत्र में प्रगति की रफ़्तार को देखते हुए मुझे विश्वास है कि जल्दी ही युवा टीमें, खास-तौर से स्टार्ट-अप्स उद्यमी प्रक्षेपण यान तैयार कर सकेंगे, जिनसे निजी सैटेलाइट प्रक्षेपित जा सकेंगे और विश्वभर में अंतरिक्ष-उद्योग से जुड़ी सेवाएँ प्रदान की जा सकेंगी।

इस प्रकार, अंतरिक्ष-उद्योग से जुड़े सुधारों के परिणामस्वरूप, जल्दी ही देश को न केवल उच्च स्तर की कम क़ीमत वाली सटीक अंतरिक्ष-आधारित सेवाएँ सुलभ हो सकेंगी, बल्कि निजी उद्यमी वैश्विक बाज़ार में पहुँच बना सकेंगे और बड़े पैमाने पर अंतरिक्ष-उद्योग के आर्थिक लाभ भारत को मिल सकेंगे। अंतरिक्ष-उद्योग से जुड़े सुधारों के परिणामस्वरूप, अंतरिक्ष-उद्योग से जुड़ी गतिविधियों के देश में विस्तार से बड़ी संख्या में रोज़गार के अवसर मिलने की भी सम्भावनाएँ हैं।

# भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम:

## प्रमुख मील के पत्थर

**21 नवंबर, 1963:**
TERLS से पहले साउंडिंग रॉकेट को प्रक्षेपित किया गया।

**19 अप्रैल, 1975:**
आर्यभट्ट, पहला भारतीय उपग्रह लॉन्च किया गया।

**10 अगस्त, 1979:**
SLV-3 का पहला प्रायोगिक प्रक्षेपण। SLV-3 भारत का पहला प्रक्षेपण यान है।

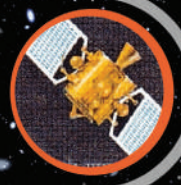

**19 जून, 1981:**
प्रायोगिक जिओ-स्टेशनरी संचार उपग्रह APPLE को लॉन्च किया गया।

**17 मार्च, 1988:**
पहला ऑपरेशनल भारतीय रिमोट सेंसिंग सैटेलाइट, IRS-1A लॉन्च किया गया।

**23 जुलाई, 1993:**
पहला स्वदेशी संचार उपग्रह इनसेट-2B लॉन्च किया गया।

**15 अक्टूबर, 1994:**
PSLV का पहला सफल प्रक्षेपण, जिससे PSLV की अत्यधिक सफल गाथा की शुरुआत हुई।

**20 सितंबर, 2004:**
GSLV की पहली सफल परिचालन उड़ान।

**5 मई, 2005:**
कार्टोसैट-1, भारत का पहला रिमोट सेंसिंग उपग्रह, जो कक्षा में स्टीरियो इमेज प्रदान करने में सक्षम है।



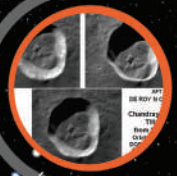

**8 नवंबर, 2008:**
भारत चंद्रयान-1 के साथ चंद्रमा के ऑर्बिट में अंतरिक्ष यान पहुँचाने वाला दुनिया का पांचवा देश बन गया।

**1 जुलाई, 2013:**
भारत का पहला नेविगेशन उपग्रह IRNSS-1A लॉन्च किया गया।

**5 नवंबर, 2013:**
मार्स ऑर्बिटर मिशन, मंगल ग्रह पर भारत का पहला इंटरप्लेनेटरी मिशन। अंतरिक्ष यान ने 24 सितंबर, 2014 को मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश किया।

**5 जनवरी, 2014:**
स्वदेशी क्रायोजेनिक अपर स्टेज के साथ अपनी पहली सफल उड़ान में, GSLV-D5 ने GSAT-14 को GTO में सफलतापूर्वक स्थापित किया।

**15 फरवरी, 2017:**
104 उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण, एक ही उड़ान में प्रक्षेपित किए गए उपग्रहों की सबसे अधिक संख्या।

**22 जून, 2019:**
चंद्रमा के लिए भारत का दूसरा मिशन, चंद्रयान-2 लॉन्च किया गया। इसमें पूरी तरह से स्वदेशी ऑर्बिटर, लैंडर और रोवर शामिल थे।

**10 जून, 2022:**
प्रधानमंत्री ने भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe) का उद्घाटन किया।

**पवन गोयनका**
चेयरमैन, IN-SPACe

प्रधानमंत्री जो 'मन की बात' करते हैं, ये लोगों को बहुत प्रोत्साहन देता है। जिस तरह से वे (इस कार्यक्रम के माध्यम से) से आम जन से बात करते हैं, इसका काफी गहरा प्रभाव होता है। उन्होंने IN-SPACe और स्टार्ट-अप्स की बात की जिससे हमारी टीम और स्टार्ट-अप्स का प्रोत्साहन ख़ासा बढ़ गया है। जिन स्टार्ट-अप्स का उल्लेख प्रधानमंत्री ने किया वह क्लाउड-9 पर हैं क्योंकि उन्होंने सोचा भी नहीं था कि प्रधानमंत्री पूरे देश के सामने उनका नाम लेंगे। मेहसाणा तन्वी, जिसका ज़िक्र कार्यक्रम में किया गया, वह आज अपने स्कूल में हीरो बन गई है, सभी बच्चे उससे बात करना चाहते हैं।

आम लोगों में स्पेस के बारे में जानकारी बहुत कम है और 'मन की बात' के द्वारा प्रधानमंत्री ने बताया कि अंतरिक्ष की हमारे जीवन में कितनी अहमियत है। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र में और कितना काम हो सकता है, जो अभी तक शायद न हुआ हो, और किस तरह से स्टार्ट-अप्स इस तरफ काम कर रहे हैं और IN-SPACe इन स्टार्ट-अप्स का किस तरह से सहयोग कर रहा है।

IN-SPACe के ब्रांड एम्बेस्डर ख़ुद प्रधानमंत्री हैं। करीबन 80 से अधिक एप्लिकेशन्स आ चुके हैं और निरंतर इस नम्बर में बढ़ोतरी हो रही है। 'मन की बात' में IN-SPACe का ज़िक्र होने से और भी लोगों में इसकी जिज्ञासा बढ़ रही है और मुझे उम्मीद है कि कुछ दिनों में ही हम एप्लिकेशन्स से ओवरलोडेड होंगे।

प्रधानमंत्री जब IN-SPACe के उद्घाटन में आए तो उन्होंने यहाँ आकर स्टार्ट-अप्स का काम केवल देखा ही नहीं बल्कि उन्होंने उनके बारे में सोचा भी कि ये क्या कर रहे हैं और क्या और कर सकते हैं और उसका देश पर कैसा प्रभाव पड़ेगा। यह छोटी-छोटी बातें हैं, पर इनका जो इम्पैक्ट होता है, वह बहुत गहरा होता है। अंतरिक्ष की बात को पूरे देश में फैलाने का ज़िम्मा प्रधानमंत्री ने अपने ऊपर ले लिया है और मुझे लगता है कि इससे बहुत फ़र्क पड़ रहा है।

पवन गोयनका से जानिए भारत के निजी क्षेत्र के लिए अंतरिक्ष में नए अवसरों के बारे में। QR कोड स्कैन करें।



# IN-SPACe: भारतीय स्पेस सेक्टर का गेम-चेंजर

10 जून, 2022 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा उद्घाटन किया गया।

गुजरात में अहमदाबाद के बोपल में स्थित IN-SPACe अंतरिक्ष विभाग के तहत एक एकल-खिड़की स्वतंत्र नोडल एजेंसी की तरह काम करेगा।

भारत के युवाओं और देश के सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों के लिए अपनी प्रतिभा दिखाने और अधिक से अधिक निजी भागीदारी की अनुमति देने के लिए एक मंच।

लॉन्च मैनिफ़ेस्ट को प्राथमिकता देने के साथ-साथ गैर-सरकारी निजी संस्थाओं (NGPI) द्वारा अंतरिक्ष गतिविधियों और डॉस-स्वामित्व वाली सुविधाओं के उपयोग की अनुमति देता है।

यह संस्थागत और नियामक तंत्र अंतरिक्ष गतिविधियों को अंजाम देने के लिए निजी खिलाड़ियों के प्रचार, हैंडहोल्डिंग, प्राधिकरण और लाइसेंस का कार्य करेगा।

तकनीकी सहायता प्रदान करने, नकद गहन सुविधाओं को साझा करने, न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) से आने वाली आवश्यकताओं के लिए बोली लगाने की अनुमति देने और विज्ञान और अंतरिक्ष अन्वेषण मिशनों में भागीदारी करने में निजी क्षेत्र को सुविधा और समर्थन देगा।

निजी कम्पनियाँ उपग्रहों के निर्माण में भाग ले सकते हैं, वाहन लॉन्च कर सकते हैं, एप्लिकेशन विकसित कर सकते हैं और अंतरिक्ष-आधारित सेवाएं प्रदान कर सकते हैं, अंतरिक्ष क्षेत्र की गतिविधियों के लिए सबसिस्टम और सिस्टम विकसित कर सकते हैं।

"IN-SPACe इज़ फ़ॉर स्पेस, IN-SPACe इज़ फ़ॉर पेस, एंड IN-SPACe इज़ फ़ॉर ऐस।"

# स्पेस को सस्टेनेबल बनाने के मिशन पर है दिगंतरा

*दिगंतरा, एक स्पेस टेक स्टार्ट-अप है जो रियल-टाइम ऑर्बिटल इनसाइट्स के माध्यम से एक सस्टेनेबल स्पेस और स्पेस स्टेकहोल्डर्स के लिए संचालन को सरल बनाने के मिशन के साथ स्पेस ऑपरेशन्स और सीचुएशनल अवेयरनेस की कठिनाइयों को दूर करने के लिए दो-आयामी प्रणाली विकसित कर रहा है। हमारी दूरदर्शन टीम ने इस स्टार्ट-अप के सह-संस्थापक **अनिरुद्ध शर्मा** और **तनवीर अहमद** से बात की।*

दिगंतरा के सह-संस्थापक और सीईओ अनिरुद्ध शर्मा ने बताया, "दिगंतरा अंतरिक्ष यातायात प्रबंधन और स्पेस सीचुएशनल अवेयरनेस पर काम कर रहा है। सरल शब्दों में, हम अंतरिक्ष के मानचित्र बना रहे हैं। हम अंतरिक्ष संचालन को सरल बनाते हैं, चाहे वह अंतरिक्ष उद्योग में कोई भी हो–लॉन्च कम्पनियाँ या उपग्रह ऑपरेटर।"

सह-संस्थापक और सीटीओ तनवीर अहमद ने बताया, "हमने अपने कॉलेज के दिनों में अंतरिक्ष मानचित्र बनाने के उद्देश्य से दिगंतरा की शुरुआत की थी। उस समय, यह एक छात्र परियोजना थी लेकिन कॉलेज से स्नातक होने के बाद, हमने दिगंतरा को एक कम्पनी का आकार देने का फैसला किया।" दिगंतरा ने अपना पहला मिशन 30 जून, 2022 को PSLV-C53 पर लॉन्च किया। यह अंतरिक्ष के मौसम को मापने और मैप करने वाला दुनिया का पहला व्यावसायिक मिशन है।

'मन की बात' में उनके उल्लेख के बारे में बात करते हुए अनिरुद्ध कहते हैं, **"यह काफी उत्साहजनक है कि हमें सरकार और ISRO से समर्थन मिल रहा है। हमारे द्वारा विकसित किए जा रहे समाधानों में प्रधानमंत्री की काफी दिलचस्पी है और उन्होंने हमें अंतरिक्ष मलबे को हटाने के मुद्दे को हल करने के बारे में एक चुनौती दी।"** इस पर तनवीर ने कहा, "इस दिशा में, हमने PSLV-C53 पर अंतरिक्ष मौसम उपकरण ROBI (रोबस्ट इंटीग्रेटिंग प्रोटॉन फ्लुएंस मीटर) को लॉन्च करके पहला कदम उठाया है।" ROBI दुनिया का सबसे छोटा डिजिटल स्पेस वेदर मॉनिटर है।

*ISRO अध्यक्ष डॉ. एस. सोमनाथ के साथ टीम दिगंतरा*



# 'आत्मनिर्भर भारत' पहल की तर्ज़ पर काम कर रहा है ध्रुवा स्पेस

*2012 में शुरू किया गया ध्रुवा स्पेस आज देश के स्पेस सेक्टर में निजी उद्योगों का नेतृत्व कर रहा है। हमारी दूरदर्शन टीम ने स्टार्ट-अप के सह-संस्थापकों से बात की।*

*ISRO और IN-SPACe के अधिकारियों के साथ ध्रुवा स्पेस की टीम*

ध्रुवा स्पेस के सीईओ और सह-संस्थापक **संजय नेकांति** ने कहा, **"'मन की बात' के दौरान, प्रधानमंत्री ने ध्रुवा स्पेस के बारे में बात की, जो अंतरिक्ष में अपना पहला मिशन शुरू कर रहा है। यह हमारे जैसे युवा उद्यमियों का प्रोत्साहन करता है,** जो देश में अत्याधुनिक तकनीक का निर्माण कर रहे हैं। जब हमने कम्पनी शुरू की थी, हम वैश्विक बाज़ार के लिए प्रौद्योगिकियों के निर्माण की कोशिश कर रही एक बहुत छोटी कम्पनी थे। विभिन्न बाधाओं से गुज़रते हुए हमारी 10 साल की लम्बी यात्रा रही है।"

नेकांति का मानना है कि देश में निजी अंतरिक्ष गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए नए कार्यक्रम, विशेष रूप से 'स्टार्ट-अप इंडिया' पहल और IN-SPACe, पूरे निजी क्षेत्र के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं। "आने वाले कुछ वर्षों में, हम देखेंगे कि बहुत सी निजी कम्पनियाँ अंतरिक्ष में कई उपग्रहों को लॉन्च कर रही हैं। अभी तो शुरुआत है और अभी बहुत कुछ होना बाक़ी है।"

सीटीओ और सह-संस्थापक, **अभय ईगोर** ने कहा, "यह मुझे बहुत खुशी देता है कि ध्रुवा स्पेस को प्रधानमंत्री के 'मन की बात' कार्यक्रम में जगह मिली। हमने एक DSOD बनाया है, जो रॉकेट को एक ही बार में कई क्यूबसैट लॉन्च करने में सक्षम करेगा। **ध्रुवा स्पेस में हमने पूरी तरह से स्वदेशी रूप से एक प्रणाली का निर्माण किया है जो (30 जून, 2022 को लॉन्च की गई) PSLV-C53 पर एकीकृत है। ध्रुवा स्पेस आत्मनिर्भर भारत पहल की तर्ज़ पर काम कर रहा है।** ISRO, IN-SPACe और भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम का हिस्सा रहे कई MSMEs के समर्थन के साथ, हम अपने इस नए कदम के लिए बहुत रोमांचित और उत्साहित हैं।"

# अग्निकूल : सभी के लिए अंतरिक्ष को सुलभ बनाने का है विज़न

*अग्निकूल कॉसमॉस पृथ्वी से अंतरिक्ष की यात्रा को यथासम्भव सरल, त्वरित और किफ़ायती बनाने के मिशन पर हैं। स्टार्ट-अप के सह-संस्थापक प्रोफ़ेसर **सत्या चक्रवर्ती, सैय्यद मोइन** और **श्रीनाथ रविचंद्रन** से हमारी दूरदर्शन टीम ने बात की।*

"जब हमने 2017 में शुरुआत की थी, तो हमने कभी नहीं सोचा था कि हम प्रधानमंत्री के भाषण का हिस्सा बनेंगे। **सभी के लिए अंतरिक्ष को सुलभ और वहनीय बनाने का हमारा विज़न अभी प्रधानमंत्री के विज़न के अनुरूप है,"** अग्निकूल के सीईओ सैय्यद मोइन ने कहा।

मोइन ने 10 जून, 2022 को बोपल, गुजरात में IN-SPACe मुख्यालय के उद्घाटन के अवसर पर प्रधानमंत्री के साथ अपनी बातचीत को याद करते हुए कहा, "मैंने व्यक्तिगत रूप से प्रधानमंत्री को एक फ़ुल-स्केल मौक-अप मॉडल देखने के लिए आमंत्रित किया था। जब वे हमारे साथ (अग्निकूल) रॉकेट के बगल में खड़े थे, वह हम सभी के लिए एक अद्भुत क्षण था।"

अग्निकूल के सीईओ और सह-संस्थापक श्रीनाथ रविचंद्रन ने बताया, "अग्निकूल शुरू करने से पहले मैं अमेरिका में था। जब मैं वापस आया और अग्निकूल पर काम करना शुरू किया, तो बहुत लोगों ने मुझसे कई सवाल किए। अब जब प्रधानमंत्री ने हमारा उल्लेख 'मन की बात' में किया है, तो मैं उन सभी लोगों को बताना चाहता हूँ कि आख़िरकार वह सारा जोखिम सार्थक हुआ। राष्ट्रीय-स्तर पर ध्यान आकर्षित करने से अब निवेशकों और ग्राहकों से बात करना आसान हो गया है क्योंकि अब हर कोई हमें गम्भीरता से ले रहा है।"

अग्निकूल के सह-संस्थापक और सलाहकार सत्या चक्रवर्ती का मानना है, "हमें ISRO से, IN-SPACe के माध्यम से जो सहयोग मिल रहा है, वह सराहनीय है। एक राष्ट्रीय परियोजना के रूप में हम सशस्त्र बलों सहित भारतीय अनुप्रयोगों और भारतीय ग्राहकों के लिए ऑन-डिमांड लॉन्च विकसित करना चाहते हैं, साथ ही बाक़ी दुनिया के लिए भारत में इस तकनीक को विकसित करना चाहते हैं। प्रधानमंत्रीजी की मान्यता और उनका पूरा समर्थन हमारे मनोबल को ज़बरदस्त बढ़ावा देता है।"

# 5G और ग्रामीण ब्रॉडबैंड नेटवर्क को किफ़ायती बनाता एस्ट्रोम

*एस्ट्रोम, बेंगलुरु स्थित स्टार्ट-अप, मिलीमीटर वेव वायरलेस कम्युनिकेशन के भविष्य का नेतृत्व कर रहा है, चाहे वह पृथ्वी पर हो या अंतरिक्ष से। वे स्थलीय और उपग्रह संचार नेटवर्क के लिए नवीन और किफ़ायती उत्पादों के निर्माण पर काम कर रहे हैं। हमारी दूरदर्शन टीम ने एस्ट्रोम की सह-संस्थापक और सीईओ **नेहा सटाक** से बात की।*

"जब हमने एस्ट्रोम की शुरुआत की, तो हमारी और मेरे सह-संस्थापक, प्रसाद एच.एल. भट, की सोच ये थी कि हम एक ऐसी समस्या को हल करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना चाहते हैं जो जनता को प्रभावित करती है। कनेक्टिविटी एक ऐसी चीज़ है जो हम सभी को प्रभावित करती है और महामारी के दौरान यह और भी स्पष्ट हो गया है। **हमने अंतरिक्ष के साथ-साथ 5G इंफ्रा के लिए तकनीक विकसित करना शुरू कर दिया,"** सटाक ने कहा।

**"हम जिस तकनीक का निर्माण कर रहे हैं वह बहुत ही अनोखी है। यह मल्टी-बीम ई-बैंड रेडियो का दुनिया का पहला कार्यान्वयन है।** यह तकनीक दूरसंचार ऑपरेटरों के लिए बुनियादी ढाँचे की लागत को लगभग 50 प्रतिशत तक कम करने में मदद करेगी और उन्हें 5G और ग्रामीण ब्रॉडबैंड नेटवर्क को तेज़ी से इंस्टॉल करने में मदद करेगी। हमने इस तकनीक का पेटेंट भी करा लिया है।"

एस्ट्रोम ने दूरसंचार और 5जी के लिए देश के आयात बिल को कम करने की परिकल्पना की है। **"आज, हमारे बहुत से दूरसंचार उपकरण इम्पोर्ट किए जाते हैं। और हमारे जैसे उत्पादों के आने से, और अन्य कम्पनियाँ जो विभिन्न समाधान ला रही हैं, हम एक साथ आकर इस आयात बिल को कम करने में सक्षम होंगे,"** सटाक ने बताया।

'मन की बात' में एस्ट्रोम के उल्लेख पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सटाक ने कहा, "प्रधानमंत्री द्वारा एस्ट्रोम का उल्लेख वास्तव में एक बड़ा सम्मान है। हम जो काम कर रहे हैं, उसकी राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हो रही है। अब हम और भी अधिक ज़िम्मेदारी महसूस कर रहे हैं कि हमें बेहतर करना है और हमें वैश्विक स्तर पर सफल होना है।"

एस्ट्रोम रक्षाबलों को सीमावर्ती क्षेत्रों से जोड़ने में भी मदद कर रहा है। इसके अलावा, उनके उत्पाद भारत में उपभोक्ताओं और व्यवसायों को विश्वसनीय और सस्ती उपग्रह कनेक्टिविटी प्राप्त करने में मदद करते हैं।

# भारत में फलती-फूलती खेल संस्कृति

## युवाओं के भविष्य की निर्माता

**"खेल जगत में अब भारतीय खिलाड़ियों का दबदबा बढ़ता जा रहा है। साथ ही भारतीय खेलों की एक नई छवि भी उभर रही है। इस बार खेलो इंडिया यूथ गेम्स में ओलम्पिक में शामिल होने वाली स्पर्धाओं के अलावा पाँच स्वदेशी खेल भी शामिल हुए - गतका, थांगता, योगासन, कलरीपायट्टू और मल्लखम्ब।"**

**-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
**('मन की बात' के सम्बोधन में)**

"मैं देश में युवा प्रतिभाओं को पहचानने और अपने 'मन की बात' सम्बोधन के दौरान सभी के साथ उनकी उपलब्धियों को साझा करने के लिए प्रधानमंत्री का आभारी हूँ।"

**नीरज चोपड़ा**
ओलम्पिक गोल्ड मेडलिस्ट

वर्ष 2021 में भारतीय खेलों के लिए कई ऐतिहासिक शुरुआत हुई। भारत का टोक्यो ओलम्पिक 2020 में अनोखा प्रदर्शन रहा। नीरज चोपड़ा के गोल्डन थ्रो, पीवी सिंधू के डबल, मीराबाई चानू के विश्व-रिकॉर्ड लिफ़्ट, 3 डेब्यू जीत और भारतीय हॉकी टीम के 41 साल पुराने सूखे को समाप्त करने के साथ, भारत एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदकों के साथ सात पदक अपने नाम कर, सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुँचा। टोक्यो ओलम्पिक में यादगार जीत के बाद, टोक्यो 2020 पैरालम्पिक दल ने भारतीय प्रशंसकों को और भी अधिक खुशी प्रदान की और 5 खेलों में 5 स्वर्ण, 8 रजत और 6 कांस्य सहित 19 पदक जीते।

भारत की बहुत पुरानी और समृद्ध खेल संस्कृति रही है जिसने कई बेहतरीन खिलाड़ियों को जन्म दिया। भारत का खेल मेजर ध्यानचंद जैसे नामों का पर्याय है, जिनके असाधारण गोल-स्कोरिंग कौशल ने 1920 और 30 के दशक में अंतरराष्ट्रीय हॉकी पटल पर भारत का दबदबा कायम किया। 'फ्लाइंग सिख' मिल्खा सिंह जो राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय एथलीट बने, 'लिटिल मास्टर' तथा भारत में क्रिकेट के प्रतीक के रूप में जाने जाने वाले सचिन तेंदुलकर को मैदान पर एक ताकत के रूप में माना जाता है; भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान मिताली राज, जो महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे अधिक रन बनाने वाली खिलाड़ी भी हैं; विश्वनाथन आनंद, जो न केवल भारत के सबसे महान शतरंज खिलाड़ी हैं, बल्कि दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों में से एक माने जाते हैं और मैरी कॉम, पाँच बार की विश्व एमेच्योर बॉक्सिंग चैम्पियन तथा सबसे प्रसिद्ध भारतीय महिला मुक्केबाज जैसे खिलाड़ियों की सूची असीमित है।

अतीत में देश में जो बेहतरीन खिलाड़ी हुए हैं, उनकी खेल विरासत को श्रेय देते हुए, युवा खिलाड़ी आज सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उन्हें आगे बढ़ा रहे हैं और विश्व मंच पर तिरंगे की महिमा को लगातार नई ऊँचाइयाँ दे रहे हैं। प्रधानमंत्री ने अपने हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में ओलम्पिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा की तरह सुर्ख़ियों में बने रहने वाले ऐसे आइकॉनिक खिलाड़ियों को बधाई दी, जो एक के बाद एक सफलता के नए रिकॉर्ड स्थापित कर रहे हैं। फिनलैंड में पावो नूरमी खेलों में रजत

"हमारे प्रिय और सम्मानित प्रधानमंत्री द्वारा सराहना किया जाना हमेशा विशेष होता है, खासकर उस दिन जब मैंने अपना अंतरराष्ट्रीय पदार्पण किया था। आपकी शुभकामनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद सर।"

**मिताली राज**
पूर्व कप्तान,
भारतीय महिल क्रिकेट टीम

जीतने के बाद, नीरज चोपड़ा ने भाला फेंक में अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा और कुओर्टेन खेलों में स्वर्ण जीतकर देश को गौरवान्वित किया। बैडमिंटन, टेनिस, एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, कुश्ती या कोई अन्य खेल हो, हमारे खिलाड़ी हमारी उम्मीदों और आकांक्षाओं को नए पंख दे रहे हैं। नतीजतन, देश कम उम्र की कई युवा प्रतिभाओं और कुशल एथलीटों को सामने ला रहा है जिन्हें विश्व मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार किया जा सकता है। जीते गए पदक न केवल खिलाड़ियों के तप और तपस्या का परिणाम हैं, बल्कि नए भारत के उत्साह और आत्मविश्वास का भी पैमाना हैं।

प्रधानमंत्री का मानना है, "देश में खेलों के फलने-फूलने के

लिए यह आवश्यक है कि युवाओं को खेलों पर भरोसा हो और उन्हें खेल को पेशे के रूप में अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।"

देश को बदलने के लिए युवाओं और खेलों की शक्ति को महसूस करते हुए, भारत सरकार ज़मीनी-स्तर की प्रतिभाओं की पहचान, बुनियादी ढाँचे के निर्माण, कुलीन एथलीटों को सहयोग और समग्र रूप से देश में मौजूदा खेल पारिस्थितिकी तंत्र को सुधारने का प्रयास कर रही है। वह ऐसी खेल संस्कृति का विकास कर रही है जो दूर-दराज़ के क्षेत्रों की महिलाओं, दिव्यांगों और युवाओं को समान अवसर प्रदान करेगी। इसके लिए कई योजनाएँ शुरू की गई हैं- *खेलो इंडिया* जैसी योजनाएँ जो ज़मीनी-स्तर पर खेलों को बढ़ावा देती हैं; टार्गेट ओलम्पिक पोडियम योजना (टॉप्स) जो ओलम्पिक में प्रतिस्पर्धा करने वाले भारतीय एथलीटों को प्रोत्साहन प्रदान करती है और *फिट इंडिया मूवमेंट*, जो भारत के लोगों की फिटनेस को बेहतर बनाने पर केंद्रित है। ये वास्तविक क्षमता का दोहन करने और कल के युवाओं को तैयार करने के लिए लाई गई हैं। केंद्र सरकार ने खेल बजट 2014 में 864 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 2022 में 1,992 करोड़ रुपये कर दिया है, और इसके परिणाम बहुत स्पष्ट हैं।

## खेलो इंडिया प्रोग्राम

- खेलो इंडिया कार्यक्रम खेलों के विकास के लिए 2018 में शुरू की गई एक राष्ट्रीय योजना है।
- इस पहल के तहत खेलो इंडिया यूथ गेम्स (KIYG) और खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स (KIUG) की स्थापना की गई।
- KIYG में कुल 25 खेल खेले जा रहे हैं और प्रतियोगिताएं लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए अंडर-17 और अंडर-21 श्रेणियों में आयोजित की जाती हैं।
- 2018 में नई दिल्ली में पहला खेलो इंडिया गेम्स और 2020 KIIT, ओडिशा में पहला खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स का आयोजन हुआ था।

2018 में शुरू किए गए खेलो इंडिया यूथ गेम्स, भारत सरकार द्वारा देश के युवाओं को अपनी खेल प्रतिभा दिखाने के लिए एक नया मंच प्रदान करने की एक प्रमुख पहल रही है। 2018 में 18 खेलों से शुरू होकर, 2020 में खेलों की सूची बढ़कर 20 हो गई। इस बार, 5 नए पारम्परिक खेल 'खेलो इंडिया यूथ गेम्स' 2021 का हिस्सा थे, जैसे गतका, कलारीपयट्टू, थांग-ता, मल्लखम्ब और योगासन। इस तरह यह सूची 25 खेलों की हो गई है। अंतरराष्ट्रीय खेल क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाते हुए इन खेलों में कुल 12 रिकॉर्ड तोड़े गए हैं। इतना ही नहीं 11 रिकॉर्ड महिला खिलाड़ियों के नाम दर्ज हुए हैं। मणिपुर की एम. मार्टिना देवी ने भारोत्तोलन में आठ रिकॉर्ड बनाए हैं। (प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' सम्बोधन में इसका उल्लेख किया।)

इस पहल को जो बात और अधिक फायदेमंद बनाती है, वह यह है कि इन खेलों के माध्यम से सामान्य परिवारों की पृष्ठभूमि से विलक्षण प्रतिभाएँ उभर रही हैं। श्रीनगर के आदिल अल्ताफ़ जिन्होंने 70 किमी साइक्लिंग में स्वर्ण जीता, उनके पिता सिलाई का काम करते हैं, स्वर्ण विजेता एल धनुष के पिता चेन्नई में बढ़ई हैं, सांगली की बेटी काजोल सरगर, जो एक भारोत्तोलक है, अपने पिता को चाय की दुकान के काम में मदद करती है, स्वर्ण पदक विजेता तनु पहलवान के पिता राजबीर सिंह रोहतक में एक स्कूल बस चालक हैं। लेकिन इन प्रतिभाशाली युवाओं को अपने सपनों को साकार करने और खेल के क्षेत्र में जीत का परचम लहराने में कोई नहीं रोक पाया। उनके परिवार और माता-पिता के विश्वास के साथ उनकी कड़ी मेहनत इस क्षेत्र में उनकी सफलता में प्रमुख भूमिका निभा रही है।

राष्ट्र 28 जुलाई से एक अंतरराष्ट्रीय शतरंज ओलम्पियाड की मेज़बानी कर रहा है, जिसमें 180 से अधिक देश भाग लेंगे। वहीं दूसरी ओर, भारतीय डेफ़लिम्पिक्स दल ने अब तक के सर्वश्रेष्ठ पदकों के साथ इतिहास रचा है। राष्ट्र एक साथ एक नए, समावेशी, फिट इंडिया के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

विभिन्न खेलों से जुड़े खिलाड़ियों के विचार जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

# गेम, सेट, मैच : प्रधानमंत्री मोदी के खेलो इंडिया मंत्र की धूम

**अनुराग सिंह ठाकुर**
केंद्रीय मंत्री,
युवा कार्यक्रम और खेल,
और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

2018 में पहले खेलो इंडिया यूथ गेम्स का उद्घाटन करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा था, "खेलो इंडिया का उद्देश्य केवल पदक जीतना नहीं है, यह तो अधिक-से-अधिक खेलने के लिए एक जन-आंदोलन को मज़बूती देने का प्रयास है।" चार वर्ष पश्चात हम देखते हैं कि एक भविष्यद्रष्टा नेता का कथन, देश के खेल-तंत्र का आधारभूत विश्वास बन चुका है।

खेलों के एक ऐसे राष्ट्रीय मंच की कल्पना की गई जहाँ देशभर के युवाओं को अपनी खेल प्रतिभा दिखाने का अवसर मिले और प्रतिभावान खिलाड़ियों को चुन कर, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए तैयार किया जाए। **खेलो इंडिया यूथ गेम्स** बहुत ही सफल कार्यक्रम रहा। हर वर्ष देश के 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लगभग 10 हज़ार एथलीट्स, खेलो इंडिया यूथ गेम्स और खेलो इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स में हिस्सा लेते हैं। इनमें से 2,500 हज़ार खिलाड़ियों को, अपने खेल में आगे बढ़ने के लिए वज़ीफ़े दिए जाते हैं। ऐसा करने से निर्धन या वंचित परिवारों के युवक-युवतियों को भी लाभ मिलता है जो अन्यथा शायद उन्हें न मिल पाता।

चुने गए खेलो इंडिया एथलीट्स को उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतों जैसे पौष्टिक आहार, खेल उपकरण, और प्रतियोगिताओं में भाग लेने जाने के यात्रा खर्च आदि के लिए 10,000 रुपये प्रतिमाह दिए जाते हैं। इसके अलावा, खेलो इंडिया एकेडमी या एसएआई केंद्र पर उनके प्रशिक्षण, रहने-ठहरने, और कोचिंग आदि पर हर वर्ष 5 लाख रुपये खर्च किए जाते हैं।

ज़मीनी-स्तर के युवा एथलीट्स ने सरकार से मिले हर तरह के समर्थन को जिस उत्साह के साथ गम्भीरता से लिया, वह प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि और देश के युवाओं को निरंतर प्रेरणा देने के उनके अथक प्रयास का परिणाम है। प्रधानमंत्री का मानना है, "खेल, व्यक्तित्व विकास का एक महत्वपूर्ण साधन हैं... और खेलों की हमारे युवाओं के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए..."

राष्ट्रीय-स्तर की खेलो इंडिया प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में भाग लेने वाले अधिकांश युवा जो बेहद साधारण पृष्ठभूमि से आते हैं, वे केवल खेलों के प्रति अपने जुनून और अपनी प्रतिभा सिद्ध करने के संकल्प के साथ ही नहीं बल्कि खेलों में अपना भविष्य बनाने के इरादे से प्रेरित होते हैं। इन खिलाड़ियों में देश के खेल परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन देख कर उम्मीद जगती है कि खेलों में भी भविष्य बन सकता है। यह केवल

प्रधानमंत्री मोदी की दूरदृष्टि, मार्गदर्शन, और उनकी व्यक्तिगत दिलचस्पी से ही सम्भव हो सका कि एथलीट्स को उनकी सरकार से पर्याप्त और कारगर समर्थन मिले।

खिलाड़ियों के साथ व्यक्तिगत स्तर पर उनकी बातचीत, 'मन की बात' में खिलाड़ियों की उपलब्धियों का उल्लेख, और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने के बाद उन्हें फोन करके उनकी हौसला अफ़ज़ाई करने तथा विजयी खिलाड़ियों को बधाई देने से, खिलाड़ी न केवल उत्साहित महसूस करते हैं बल्कि एकाग्र निष्ठा, दृढ-संकल्प और पूर्ण समर्पण के साथ अपने खेल पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित भी होते हैं। वे जानते हैं कि जब प्रधानमंत्री साथ हैं तो उन्हें चिंता की कोई ज़रूरत नहीं, और इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

और यही आत्मविश्वास उनके खेल-प्रदर्शन में भी दिखाई देता है, जैसा टोक्यो-2020 के स्वर्ण विजेता नीरज चोपड़ा के साथ हुआ जिनकी हाल की डायमण्ड लीग स्पर्धा का ज़िक्र प्रधानमंत्री मोदी ने 26 जून को 'मन की बात' में किया था।

खेलों में प्रधानमंत्री की रुचि की एक विशेषता है कि वे एथलीट्स के बीच किसी प्रकार का भेदभाव नहीं बरतते- खिलाड़ी चाहे समाज के सबसे निचले तबके से हो या सबसे श्रेष्ठ तबके से, उसने कोई पदक जीता हो या न जीता हो, वे सभी के साथ एक अनुभवी सलाहकार की भूमिका निभाते हैं। 26 जून 2022 के 'मन की बात' के अंक में श्री मोदी ने जहाँ ओलम्पिक स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा की डायमण्ड लीग स्पर्धा में उपलब्धि का उल्लेख किया, वहीं उन्होंने हरियाणा में आयोजित खेलो इंडिया यूथ गेम्स-2021 में भाग लेने वाले खिलाड़ियों और पदक विजेताओं का भी उल्लेख किया।

प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर के **आदिल अल्ताफ़** की उल्लेखनीय उपलब्धि का भी ज़िक्र किया जो खेलो इंडिया यूथ गेम्स में 70 किमी की साइकिल-दौड़ में पहला स्थान हासिल करने वाला जम्मू कश्मीर का पहला साइक्लिस्ट बना। आदिल अल्ताफ़ एक निर्धन परिवार से है लेकिन निर्धनता उसकी राह में बाधा नहीं बनी और उसने कामयाबी हासिल की। निःसंदेह आदिल की यह कामयाबी युवाओं को प्रेरित करेगी कि कोई भी बाधा आपको अपने सपने साकार करने से रोक नहीं सकती।

इसके अलावा प्रधानमंत्री ने खेलो इंडिया यूथ गेम्स के जिन खिलाड़ियों का उल्लेख किया उनमें भारोत्तोलन प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाला एक बढ़ई का बेटा एल. धनुष, और चाय की दुकान पर पिता का हाथ बँटाने वाली सांगली, महाराष्ट्र की वेट-लिफ्टर काजल सरगर हैं, जिनकी कहानियाँ आज के युवाओं को हर तरह की चुनौतियों से पार पाने की प्रेरणा देती हैं। अपने मासिक रेडियो प्रसारण में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इन खिलाड़ियों का उल्लेख किया जाना यह साबित करता है कि प्रधानमंत्री अपने खिलाड़ियों को उत्साहित करने में सिर्फ़ गहरी रुचि ही नहीं रखते बल्कि उन्हें और बेहतर करने की प्रेरणा देने का अनूठा अंदाज़ भी रखते हैं।

ओलम्पिक खेलों में तलवारबाज़ी में पहली बार भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली **भवानी देवी** को सोशल मीडिया पर दिया गया उनका संदेश भला कौन भूल सकता है? स्पर्धा के दूसरे दौर में हालाँकि वे हार गईं, लेकिन प्रधानमंत्री ने उन्हें संदेश भेजा कि पूरे देश को उनकी उपलब्धि पर गर्व है। प्रधानमंत्री के इस संदेश के बाद तो समूचा देश ही ओलम्पिक में भारत की पहली तलवारबाज़ भवानी देवी की प्रशंसा करने लगा।

टोक्यो ओलम्पिक 2020 में भाग लेने वाली भारतीय महिला हॉकी की टीम के साथ भी ऐसा ही हुआ। रिओ ओलम्पिक्स में 12वें स्थान पर रही महिला हॉकी टीम, टोक्यो में पदक जीतने से बस कुछ कदम की दूरी से रह गई थी। खिलाड़ियों का दिल टूट गया लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने सबसे पहले उन्हें फोन किया और बताया कि समूचा देश उनके साथ है- मैच भले ही वे हार गई हों लेकिन मैदान पर दिखी उनकी हिम्मत और दृढ़-संकल्प ने करोड़ों लोगों का दिल जीत लिया है।

टोक्यो ओलम्पिक, टोक्यो पैरालम्पिक्स, डैफ़लिम्पिक्स और थॉमस कप प्रतियोगिताओं में भाग लेकर लौटने वाले खिलाड़ियों, चाहे उन्होंने पदक जीता हो या न जीता हो, सभी से प्रधानमंत्री ने मुलाक़ात की। सभी खिलाड़ियों के लिए यह एक निरंतर प्रेरणा है और उन्हें आश्वस्त करती है कि खेलों में उत्कृष्टता के लिए सरकार उन्हें सभी आवश्यक चीज़ें सुनिश्चित करने के हर सम्भव उपाय करने को प्रतिबद्ध है। भारत एक ऐसे देश में बदल रहा है जहाँ खेल, जीने की एक शैली बन रहे हैं। खेलो इंडिया अब एक जीता-जागता अनुभव है।

# 13 साल की उम्र में माउंट एवरेस्ट पर लहराया तिरंगा : पूर्णा मालावथ

**“अब तक मैं दुनिया के सभी 7 सबसे ऊँचे पहाड़ों और कुछ भारतीय पहाड़ों पर चढ़ चुकी हूँ।** जब मैं 9वीं कक्षा में थी तब मैंने स्कूल से अपनी यात्रा शुरू की। उस उम्र में यह मेरे लिए बहुत चुनौतीपूर्ण और डरावना था, लेकिन धीरे-धीरे मैं अपने प्रशिक्षण और एक शीतकालीन अभियान में अपने अग्रिम स्तर के पाठ्यक्रम के माध्यम से आश्वस्त हो गई, और अंततः माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने के लिए चुनी गई। **आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि जब मैं तेरह साल और चार महीने की थी तब मैंने अपनी यात्रा शुरू की और तेरह साल और ग्यारह महीने का होने पर माउंट एवरेस्ट पर चढ़ाई कर चुकी थी।** जब मुझे इस अवसर के लिए चुना गया, तो मैं दुनिया को यह दिखाने के लिए दृढ़ और प्रतिबद्ध थी कि लड़कियाँ कुछ भी कर सकती हैं। **जब मुझे सातवें शिखर सम्मेलन के बारे में पता चला, तो मैंने फैसला किया कि यह एक महिला की ताकत और दृढ़ता दिखाने का मेरा तरीका होगा और मैंने इसे करने का फैसला किया।**

अब तक मैंने इसे अपने जुनून के लिए किया था, **अब मैं एक उद्देश्य के लिए पर्वतारोहण जारी रखना चाहती हूँ। इसका उद्देश्य मेरी नई परियोजना को प्रेरित करना है, जिसे SHAKTI कहा जाता है, जिसका नेतृत्व दो महिलाओं ने किया है, जिसका उद्देश्य वंचित लड़कियों की शिक्षा के लिए 100% धन जुटाना है।** इस परियोजना का उद्देश्य : “हम चढ़ते हैं, ताकि वे चढ़ सकें।”

मेरी एवरेस्ट उपलब्धि के बाद, मुझे हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से मिलने का सौभाग्य मिला। यह मेरे लिए सम्मान की बात थी कि उन्होंने मेरी सराहना की और उत्कृष्टता प्रमाण पत्र भी दिया। **उन्होंने अपने ‘मन की बात’ सम्बोधन में 7 शिखर पर चढ़ने की मेरी उपलब्धियों का भी उल्लेख किया और मैं उनकी प्रशंसा से बेहद खुश और प्रेरित महसूस करती हूँ।”**



# भारतीय महिला क्रिकेट को विश्व मानचित्र पर लाने वाली मिताली राज

जब 23 साल के लम्बे कॅरियर के बाद महान भारतीय क्रिकेटर, मिताली राज ने 8 जून, 2022 को सोशल मीडिया पर अपनी रिटायरमेंट की घोषणा की, तो इसने न केवल एक युग के अंत को चिह्नित किया, बल्कि साथ ही क्रिकेट के इतिहास के बेहतरीन कॅरियरों में से एक का अंत भी हो गया। 232 एकदिवसीय मैचों में 805 रन, प्रारूप में सबसे अधिक टैली, और कुल मिलाकर 10,868 रन के साथ, यह भारतीय कप्तान वास्तव में खेल का एक प्रतीक थीं। मिताली ने 50 ओवर के छह विश्व कप खेले और 2005 और 2017 में दो विश्व कप फ़ाइनल में देश का नेतृत्व किया।

उनकी उपलब्धियों की सूची यहीं ख़त्म नहीं होती। महिला एकदिवसीय मैचों में सबसे अधिक रन बनाने वाली और महिला टी-20 में भारत की सबसे अधिक रन बनाने वाली खिलाड़ी होने से लेकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे अधिक रन बनाने और कप्तान के रूप में सबसे अधिक एकदिवसीय मैच खेलने तक–मिताली राज के नाम कई उपलब्धियाँ जुड़ी हैं। मिताली टेस्ट में दोहरा शतक लगाने वाली सबसे कम उम्र की खिलाड़ी भी हैं, जिससे वह भारतीय बल्लेबाज़ी क्रम की लिंचपिन बन गई हैं। क्रिकेट जैसे पुरुष-प्रधान खेल में ऊचाइयाँ छू कर उन्होंने देश भर की लड़कियों को प्रेरित किया है।

दो दशकों से अधिक समय तक, मिताली भारतीय महिला क्रिकेट का चेहरा और आवाज़ थीं। **“मैं एक छोटी लड़की के रूप में इंडिया ब्लूज़ पहनने की यात्रा पर निकली क्योंकि आपके देश का प्रतिनिधित्व करना सर्वोच्च सम्मान है।”**

# नीरज चोपड़ा का रिकॉर्ड तोड़ भाला फेंक

भारत के अव्वल भाला फेंक नीरज चोपड़ा का दस महीने के बाद पहला प्रतिस्पर्धी कार्यक्रम एक ऐतिहासिक क्षण बन गया क्योंकि उन्होंने स्टॉकहोम डायमंड लीग में अपना व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 89.94 मीटर फेंक कर अपना ही राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ दिया। जेवलिन थ्रो की दुनिया में गोल्ड स्टैंडर्ड माने जाने वाले 90 मीटर के निशान पर पिछले काफी समय से नज़रें गड़ाए हुए 24 साल के इस खिलाड़ी की नज़र धीरे-धीरे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है। इस महीने की शुरुआत में, नीरज ने फिनलैंड के तुर्कू में पावो नूरमी खेलों में 89.30 मीटर का राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया था।

नीरज ओलम्पिक में एथलेटिक्स में स्वर्ण पदक जीतने वाले पहले भारतीय हैं, और निशानेबाज़ अभिनव बिंद्रा के बाद ओलम्पिक स्वर्ण पदक जीतने वाले केवल दूसरे भारतीय व्यक्ति हैं। ओलम्पिक में उनकी शानदार और ऐतिहासिक जीत के लिए, उन्हें भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया। अपने प्रदर्शन से तिरंगे को बुलंद करने के बाद, हरियाणा में जन्मे एथलीट इतिहास में अपना नाम दर्ज करना ज़ारी रखेंगे और उम्मीद करते हैं कि जहाँ तक सम्भव हो भाला फेंकने के लिए अपनी पूरी ताकत लगाएँगे।

नीरज चोपड़ा ने कहा, **“‘मन की बात’ संबोधन में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कई खिलाड़ियों की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। देश में युवा प्रतिभाओं को पहचानने और उनकी उपलब्धियों को सभी के साथ साझा करने के लिए मैं उनका आभारी हूँ। देश भर के लोगों तक पहुँचने वाले इतने बड़े मंच पर पहचाने जाने से, युवा एथलीटों को और अधिक प्रेरणा मिलती है, उन्हें राष्ट्र के लिए और भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया जाता है और भारत में खेलों के प्रति सामूहिक उत्साह को प्रेरित किया जाता है। मुझे उम्मीद है कि भारत के लोग, प्रधानमंत्री की तरह, हमारा समर्थन करते रहेंगे और हम अपने-अपने क्षेत्रों में तिरंगे को प्रतिष्ठा दिलाते रहेंगे।”**



# खेलो इंडिया यूथ गेम्स के सितारों का अनुभव

**आदिल अल्ताफ़ - एथलीट साइकिलिंग**
***KIYG में 2 पदक (स्वर्ण और रजत)***

हाल ही में प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' संबोधन में मेरा उल्लेख किया। भारत में खेलो इंडिया यूथ गेम्स जैसे आयोजनों को शुरू करने के लिए मैं उनका आभारी हूँ और मुझे आशा है कि भविष्य में भी इस तरह की और पहल की जाएगी ताकि हमारे एथलीटों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक मंच मिलता रहे ताकि वे और अधिक ऊंचाइयों छू पाएं। मुझे उम्मीद है कि इस मंच के माध्यम से, हमारे भारतीय एथलीट अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचने में सक्षम होंगे जहाँ वे कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर भारत से नए रिकॉर्ड बना पाएंगे।

**काजोल सरगर - एथलीट भारोत्तोलन**
***KIYG में स्वर्ण पदक***

हरियाणा में आयोजित खेलो इंडिया यूथ गेम्स में मैंने महाराष्ट्र के लिए पहला गोल्ड मेडल जीता था। माननीय प्रधानमंत्री के 'मन की बात' संबोधन में मेरा उल्लेख और उनकी प्रशंसा न केवल मेरे लिए बल्कि मेरे पूरे परिवार और सांगली गाँव के लोगों के लिए गर्व का क्षण है। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत सरकार KIYG जैसी कई प्रतियोगिताओं के माध्यम से भारत के खिलाड़ियों का भरपूर समर्थन और प्रोत्साहन कर रही है और इसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ।

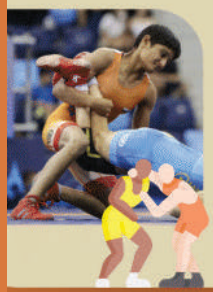

**तनु - पहलवान**
***KIYG में स्वर्ण पदक***

खेलो इंडिया यूथ गेम्स जैसा मंच स्थापित करने के लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री की आभारी हूँ। इस पहल ने भारत में युवा खिलाड़ियों को खेलों में अपना करियर बनाने के लिए बहुत बढ़ावा दिया है और उन्हें अपने संबंधित खेलों में बेहतर होने में मदद की है। KIYG ने खेल की दुनिया में बदलाव के नए, उच्च तरीके पैदा किए हैं और इसके लिए मैं प्रधानमंत्री की बहुत आभारी हूं।

# 44वाँ शतरंज ओलम्पियाड : भारत सुर्खियों में

**विश्वनाथन आनंद**

अंतरराष्ट्रीय चैस ग्रैंडमास्टर

भारत, विश्व में शतरंज की महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। भारत में पहली बार हो रहे 44वें शतरंज ओलम्पियाड के साथ, यह खेल वास्तव में अपनी जन्म स्थली की ओर लौट रहा है। देश ने पिछले दशक में शतरंज में अपने ग्रैंडमास्टर की संख्या को बढ़ाकर तिगुना करते हुए तेज़ी से प्रगति की है। आज की तारीख़ में, शतरंज की दुनिया में भारत के कुल 74 ग्रैंडमास्टर्स हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 19 जून, 2022 को नई दिल्ली के इंदिरा गाँधी स्टेडियम में 44वें शतरंज ओलम्पियाड के लिए ऐतिहासिक मशाल रिले का शुभारम्भ किया। इस वर्ष, पहली बार अंतरराष्ट्रीय शतरंज महासंघ-एफआईडीए ने शतरंज ओलम्पियाड मशाल को ओलम्पिक परम्परा का हिस्सा बनाया है। भारत शतरंज ओलम्पियाड मशाल रिले रखने वाला पहला देश है। यह पूरे देश के लिए गर्व का क्षण था जब एफआईडीए के अध्यक्ष अर्कडी ड्वोरकोविच ने प्रधानमंत्री को मशाल सौंपी, जिन्होंने मुझे एक संरक्षक के रूप में इसे आगे ले जाने का सम्मान दिया। इस मशाल को चेन्नई के पास महाबलीपुरम में गंतव्य तक पहुँचाने से पहले 40 दिनों में 75 शहरों में ले जाया जाएगा। हर स्थान पर उस राज्य के ग्रैंडमास्टर मशाल को थामेंगे।

कुछ महीने पहले तक हमने सोचा भी नहीं था कि भारत इस ऐतिहासिक अंतरराष्ट्रीय शतरंज ओलम्पियाड का आयोजन करेगा, लेकिन असम्भव सी दिखने वाली यह बात इतनी जल्दी, केवल तीन महीने में सम्भव हो गई। प्रधानमंत्रीजी की प्रतिबद्धता, मंत्रालय का निरंतर सहयोग, और प्रधानमंत्री द्वारा स्वयं इसका उद्घाटन, इस महत्वपूर्ण आयोजन की प्रतिष्ठा बढ़ाएँगे और इस खेल को अधिक-से-अधिक दृश्यता प्रदान करेंगे।

शतरंज एक ऐसा खेल है जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई है। हमारे पास शतरंज के खिलाड़ियों की एक नई पीढ़ी है जो विश्व के अभिजात्य वर्ग में अपनी जगह बना रही है। जब वे प्रधानमंत्रीजी के साथ मंच साझा करते हैं तो एक खिलाड़ी के रूप में, एक टीम के रूप में और एक राष्ट्र के रूप में सामूहिक गौरव की अनुभूति होती है।

एक खिलाड़ी के रूप में, आपके खेल

जीवन में कुछ ऐसे क्षण होते हैं जो सबसे अलग होते हैं। मुझे विश्वास है कि जब मेरी टीम के प्रत्येक सदस्य ने इस ऐतिहासिक लॉन्च पर इस मशाल को देखा और देश के महान दूरदर्शी लोगों के साथ मंच साझा किया, तो यह उनके लिए अविस्मरणीय क्षण बन गया जो हमेशा उनके साथ रहेगा। अपने भाषण के दौरान, प्रधानमंत्री ने हम सबका नाम पुकारा और भारतीय शतरंज में हमारे योगदान का उल्लेख किया। खेल और हम सभी के लिए प्रधानमंत्री का प्रोत्साहन और सहयोग क़ाबिले तारीफ़ है।

मैं प्रधानमंत्री से 2010 में मिला था जब वे मुख्यमंत्री थे। हमने एक स्थान पर खेले गए सबसे अधिक खेलों के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड का मंचन किया था। जब हमने इस कार्यक्रम की तैयारी की तो मैं उनसे कई बार मिला। वे उन सभी तथ्यों और विवरणों को जानते थे जिन्हें जानने की आवश्यकता थी और वे हमेशा उन लक्ष्यों के लिए अपना समर्थन प्रदान करने के लिए तैयार थे जिन्हें हमने प्राप्त करने की आशा की थी। उनके उत्साहजनक शब्द 'शून्य प्रतिशत तनाव या दबाव के साथ अपना सौ प्रतिशत दें', निश्चित रूप से युवा प्रतिभागियों को 28 जुलाई से शुरू होने वाले शतरंज ओलम्पियाड में शानदार प्रदर्शन के लिए प्रेरित करेंगे।

जैसा कि भारत एक खेल राष्ट्र के रूप में उभर रहा है, हमें एक देश के रूप में अपने नागरिकों के लिए खेल के महत्व के बारे में सोचने की ज़रूरत है। इस तरह की विचार प्रक्रिया तभी हो सकती है जब राष्ट्र का नेता विचारधारा में उस बदलाव को करने का फ़ैसला करे। खिलाड़ियों को प्रशिक्षण के लिए कई तरह की बुनियादी सुविधाएँ और अनुदान दिए जा रहे हैं। खिलाड़ियों की प्रतिभा और परिणामों को अधिकतम करने में मदद करने के लिए सरकार संगठनों और कॉरपोरेट्स के साथ भागीदारी कर रही है। इन पहलों से शतरंज के खिलाड़ी भी लाभांवित होते हैं। मुझे उम्मीद है कि शतरंज ओलम्पियाड का आयोजन, शतरंज को वापस उसके उद्गम स्थल पर वापस लाएगा और उसे हर भारतीय के दिल में बसाएगा। हमारे अधिक-से-अधिक युवा विश्व मंच पर अपने देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रेरित होंगे।

# विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र

## लोकतंत्र की अमर भावना को सँजोकर रखता भारत

**“उस समय भारत के लोकतंत्र को कुचल देने का प्रयास किया गया था। देश की अदालतों, हर संवैधानिक संस्था, प्रेस सब पर नियंत्रण लगा दिया गया था। सेंसरशिप की ये हालत थी कि बिना स्वीकृति कुछ भी छापा नहीं जा सकता था। लेकिन बहुत कोशिशों, हज़ारों गिरफ़्तारियों और लाखों लोगों पर अत्याचार के बाद भी, भारत के लोगों का लोकतंत्र से विश्वास डिगा नहीं, रत्ती भर नहीं डिगा।”**

**-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
**(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)**

‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ देश की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूरे होने का समारोह है। दूसरे शब्दों में, देश औपनिवेशिक शासन से मुक्ति पा कर लोकतंत्र बनने के 75 वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहा है। भारत के आज़ादी के आंदोलन में अंतर्निहित लोकतंत्र की भावना हमारी सभ्यता के मूल्यों के मर्म में रही है।

जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री ने पिछले वर्ष दिसम्बर में आयोजित ‘सम्मिट फ़ॉर डेमोक्रेसी’ में कहा था, भारत में 2,500 साल पहले ही, लिच्छवि और शाक्य गणतंत्रों जैसे निर्वाचित नगर-राज्य फल-फूल रहे थे। लोकतंत्र की वही भावना 10वीं शताब्दी के *उत्तरमेरुर* अभिलेख में निहित है जिसमें लोकतांत्रिक भागीदारी को नियमबद्ध किया गया है। इस लोकतांत्रिक भावना और मूल्यों ने ही प्राचीन भारत को समृद्ध बनाया।

सदियों तक चला औपनिवेशिक शासन भी भारत के लोगों की लोकतांत्रिक भावना को दबा न सका। इसी भावना को भारत की स्वतंत्रता में पूर्ण अभिव्यक्ति मिली जिसके बाद लोकतांत्रिक राष्ट्र-निर्माण की 75 वर्षों की बेजोड़ गाथा रची गई।

भारत को एक जीवंत लोकतंत्र बनाए रखना आसान काम नहीं है; इससे जुड़ी अनेक चुनौतियाँ हैं। लेकिन इन चुनौतियों को स्वीकार कर समय-समय पर इसकी कमियों को दूर करने का प्रयास ही भारत को बाकी विश्व की तुलना में अनूठा बनाता है। विभिन्न सामाजिक-राजनीतिक और विकास से जुड़ी चुनौतियों के बावजूद देश प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहा और, भारतीय संविधान तथा इसके लोकतांत्रिक मूल्यों के अडिग स्तम्भों पर टिका रहा।

भारत ने लम्बे, निरंतर और शांतिपूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन के बाद 15 अगस्त, 1947 को औपनिवेशिक शासन से मुक्ति पाई। इसके बाद यह ज़रूरी था कि जल्दी से जल्दी एक लोकतांत्रिक प्रणाली द्वारा देश का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हमारे पुरखों ने तीन साल से भी कम समय में भारत के संविधान का निर्माण करके भारतीय राजनीतिक प्रणाली की बुनियाद रख दी, जिससे औपनिवेशिक शासन से मुक्ति के बाद राष्ट्रीय और लोकतांत्रिक आकांक्षाओं को निश्चित स्वरूप मिला।

संविधान की आत्मा उसकी प्रस्तावना में बसती है जिसमें भारत को “सम्प्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य” घोषित किया गया है। यह प्रस्तावना भाईचारा, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता पर बल देती है। प्रस्तावना के प्रारम्भिक और अंतिम शब्दों को मिला कर कहें तो “हम भारत के लोग.... यह संविधान पारित, लागू और अपने-आप को समर्पित करते हैं।” यह स्पष्ट करता है कि सत्ता अंततः भारत के लोगों के हाथों में निहित है।

हमारा संविधान भारत के नागरिकों को मूल अधिकारों के साथ कर्तव्य भी प्रदान करता है जो हमारे लोकतंत्र के आधार हैं। हमारा संविधान नागरिकों से कुछ ऐसे कर्तव्यों की भी अपेक्षा करता है जिनसे दूसरों के अधिकार सुरक्षित होते हैं। इस तरह, भारत का संविधान हमारी लोकतांत्रिक प्रणाली का आधार भी है और हमारे

भावी प्रयासों का दिशानिर्देशक भी है।

लोकतंत्र की राह पर चलते हुए, देश में पहले आम चुनाव 1952 में हुए। सभी वयस्क नागरिकों को मतदान का अधिकार लोकतांत्रिक शासन की अनिवार्य शर्त है और भारत के स्वतंत्रता प्राप्त करने के तुरंत बाद ही यह बुनियादी अधिकार उसके वयस्क नागरिकों को प्राप्त हो गया। आज, लोकतंत्र के तीनों स्तरों पर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव विश्व के इस सबसे बड़े लोकतंत्र की कार्य-प्रणाली की केंद्रीय विशेषता है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 में कहा गया है कि "किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से, विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अलावा, वंचित नहीं किया जाएगा।" लेकिन, 25 जून, 1975 को देश के नागरिकों का यह मूल अधिकार छीन लिया गया। करीब दो वर्षों तक लगा आपातकाल भारत के लोकतंत्र का अंधकारमय समय था। उस दौर में भारत के लोगों को बर्बर दमन और यातनाएँ झेलनी पड़ीं। 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता' का अधिकार छीन लिया गया और देश का लोकतांत्रिक स्वरूप ही खतरे में पड़ गया। 1975-1977 के दौरान 21 महीनों तक देश की अदालतों, हर संवैधानिक संस्था, प्रेस, सब पर नियंत्रण लगा दिया गया था। सेंसरशिप की ये हालत थी कि बिना स्वीकृति कुछ भी छापा नहीं जा सकता था। जब मशहूर गायक किशोर कुमार ने सरकार की तारीफ करने से इंकार कर दिया तो आकाशवाणी और दूरदर्शन से उनके गानों का प्रसारण बंद करवा दिया गया। लेकिन बहुत कोशिशों, हज़ारों गिरफ़्तारियों और लाखों लोगों पर अत्याचार के बाद भी, भारत के लोगों का, लोकतंत्र से विश्वास रत्ती भर नहीं डिगा। 'मन की बात' कार्यक्रम में प्रधानमंत्री मोदी ने उस दौर का ज़िक्र करते हुए कहा, "भारत के हम लोगों में सदियों से जो लोकतंत्र के संस्कार चले आ रहे हैं, जो लोकतांत्रिक भावना हमारी रग-रग में है, आख़िरकार जीत उसी की हुई। भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से ही इमरजेंसी को हटाकर, वापस, लोकतंत्र की स्थापना की।"

लोकतंत्र फलदायी होता है और लोकतंत्र ने अपना प्रसाद हमें दिया। प्रधानमंत्री के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' मंत्र के साथ आज का भारत अगले पच्चीस वर्षों तक एक मजबूत बुनियाद बनाने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है।

भारत के नागरिकों का उल्लेख करते हुए, एक बार प्रधानमंत्री ने कहा था कि भारत में लाखों समस्याओं के लिए करोड़ों समाधान निहित हैं। कभी 'सँपेरों का देश' कहा जाने वाला भारत आज समय पर सही बदलाव लाने वाली अपनी सेवाओं से विश्वभर में अपनी अनुपम छवि बना रहा है। आज भारत का हर गाँव खुले में शौच जाने के अभिशाप से मुक्त हो गया है और बिजली से युक्त है। 99 प्रतिशत गाँवों में रसोई के लिए स्वच्छ ईंधन सुलभ हो गया है। पूरा भारत 'एक देश, एक राशन कार्ड' की सुविधा से जुड़ गया है जिससे पिछले दो वर्षों में 80 करोड़ से भी ज्यादा ग़रीबों को मुफ्त राशन दिया गया। इतना ही नहीं, विश्व का 40 प्रतिशत डिजिटल लेन-देन भारत से हो रहा है।

'रिफॉर्म, परफ़ोर्म एंड ट्रांसफोर्म' (सुधार करो, कर्मठता से कार्य करो और बदलाव लाओ) के मंत्र के साथ आगे बढ़ते भारत की श्रेष्ठता अब विश्वभर में चर्चा का विषय बन गई है। आज भारत विश्व की नवाचार लाने वाली 50 प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो गया है। विश्वभर में नए स्टार्ट-अप लाने वाले देशों में भारत का तीसरा स्थान है। भारत के विशाल आकार, प्राकृतिक और मानवीय विविधताओं और आपदा प्रबंधन में अग्रणी होने के कारण, आज पूरी दुनिया जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक

बदलावों का मुक़ाबला करने के लिए उसकी ओर उम्मीद से देख रही है।

भारत आज बदलते समय में गर्व और दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ रहा है और यही 'अमृत काल' में भारत को नई बुलंदियों पर ले जाएगा।

# आपातकाल की गाथा

आज तक 21 महीने की इस अवधि को हमारे लोकतांत्रिक राष्ट्र की कहानी के एक काले अध्याय के रूप में याद किया जाता है।

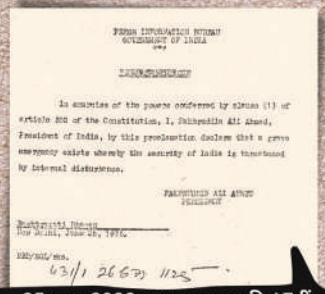

PRESS INFORMATION BUREAU
GOVERNMENT OF INDIA

In exercise of the powers conferred by clause (1) of article 352 of the Constitution, I, Fakhruddin Ali Ahmed, President of India, by this proclamation declare that a grave emergency exists whereby the security of India is threatened by internal disturbance.

FAKHRUDDIN ALI AHMED
President

25 जून, 2022—आपातकाल की 47वीं वर्षगांठ। 1975 में इसी दिन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति फ़ख़रुद्दीन अली अहमद ने उस समय केंद्र में सरकार की सिफ़ारिश पर देश भर में आपातकाल की घोषणा की थी।

आपातकाल के दौरान आर.के. लक्ष्मण का कार्टून

INDIAN HERALD
NATIONAL ENGLISH DAILY
SPECIAL SUPPLEMENT

EMERGENCY DECLARED
JP, Morarji, Advani, Asoka Mehta & Vajpayee arrested

The Tribune

PRESIDENT DECLARES EMERGENCY
"Threat To Security From Internal Disorder"
676 Arrested All Over Country

Fundamental rights suspended

D'OCRACY — D. E. M. beloved husband of T. Ruth, loving father of L. I. Bertie, brother of Faith, Hope, Justicia, expired on 26th June.

तत्कालीन सरकार ने मीडिया को सेंसर किया, यह सुनिश्चित किया कि केवल शांति, समृद्धि और प्रगति की एक तस्वीर प्रस्तुत की जाए। कुछ अख़बारों ने सेंसरशिप का विरोध करते हुए उन जगहों को खाली छोड़ दिया जहां ख़बरों को सेंसर किया गया था।

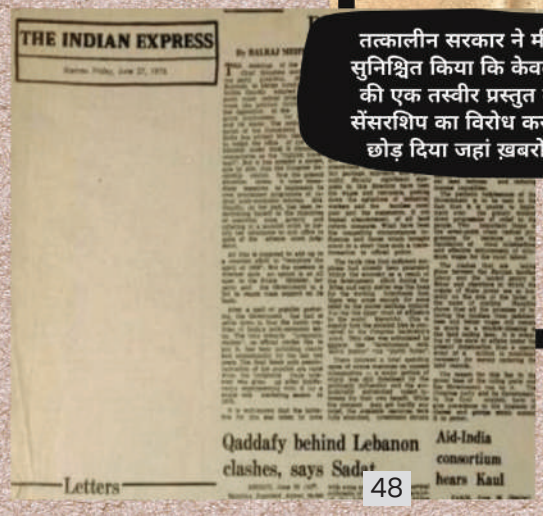

THE INDIAN EXPRESS

Qaddafy behind Lebanon clashes, says Sadat

Aid-India consortium hears Kaul

Letters

मोरारजी देसाई ने 24 मार्च 1977 को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

FREE PRESS JOURNAL

MORARJI SWORN IN PREMIER

Partial list of Cabinet today

Priorities of new Govt. outlined

THE TIMES OF INDIA

CONGRESS FACES DEFEAT
*Indira out; Sanjay Gandhi trounced*
JANATA SWEEPS POLL IN NORTHERN STATES

Ruling party holds its own in Andhra

Janata landslide in Bombay city

Janata establishes lead in Gujarat

Big jolt in state

21 मार्च, 1977 को आधिकारिक रूप से आपातकाल वापस ले लिया गया था। नए चुनाव हुए और लोगों के एक शानदार लोकतंत्र-समर्थक फैसले के बाद, पहली बार केंद्र में एक गैर-कांग्रेसी सरकार सत्ता में आई।

आपातकाल में नागरिकों की स्वतंत्रता छीन गई। जॉर्ज फ़र्नांडीस जैसे नेताओं ने सरकार के ख़िलाफ़ व्यापकविरोध प्रदर्शन किए। कई विपक्षी नेताओं को गिरफ़्तार किया गया। सरकार का विरोध करने पर हज़ारों लोगों को हिरासत में भी लिया गया।

# नागरिकों में लोकतंत्र के प्रति जागरूकता बढ़ी

**स्वपन दासगुप्ता**
पूर्व राज्यसभा सांसद

लोकतंत्र का सामान्य अर्थ है नागरिकों को सरकार चुनने का अधिकार -सरकार चाहे राष्ट्रीय हो, क्षेत्रीय हो या स्थानीय लोगों की पसंद की हो। इसका अर्थ ये हुआ कि जहाँ ज़रूरी हो तो 'हाँ' कहने का अधिकार और असंतुष्ट होने पर 'ना' कहने का भी। ये बहुत बड़े अधिकार और विशेषाधिकार हैं जिनके लिए लोगों ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जीवन बलिदान किया है, यहाँ तक कि इनके लिए बड़े पैमाने पर उथल-पुथल तक हुई हैं। यहाँ भारत में हम जिन चीज़ों की अहमियत नहीं समझते, वही दुनिया के अन्य हिस्सों में रहने वाले लाखों लोगों के नसीब में नहीं हैं, जहाँ 'ना' कहने के अधिकार पर पाबंदी है। जो है वही स्वीकार करो अथवा कुछ नहीं।

फिर भी, जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में याद दिलाया कि 1975 से 1977 के बीच लगभग 20 महीनों के दौरान हम से यही मौलिक अधिकार बेरहमी से छीन लिया गया था। स्वाधीन भारत के इतिहास में इस छोटी-सी अवधि ने गहरा और स्थायी दाग़ लगा दिया, लेकिन साथ ही इसने हमें लोकतंत्र के मूल्यों का पाठ पढ़ाया - एक ऐसी पद्धति जिसमें निःसंदेह कुछ कमियाँ हैं लेकिन फिर भी हम इसे पसंद करते हैं। आपातकाल को सामूहिक जन-इच्छा ने जहाँ पलट कर रख दिया, वहीं लोगों को एक संदेश भी दिया: आईन्दा फिर कभी नहीं। इस बात की कल्पना भी मुश्किल है कि आने वाली पीढ़ियाँ कभी इस संदेश की अवहेलना करेंगी।

अगर लोकतंत्र जीवन की सच्चाई है और इसे फिर से कुंद करने की आशंका नहीं है, तो फिर क्यों ज़िम्मेदार नेताओं के लिए इसके अस्तित्व का लगातार आह्वान करना ज़रूरी है? प्रधानमंत्री के लिए वैश्विक शिखर सम्मेलनों में भाग लेना और लोकतांत्रिक देशों के साथ गठजोड़ तैयार करना क्यों आवश्यक है? इसके लिए और क्या किया जा सकता है?

एक शब्द में उत्तर होगा- बहुत कुछ। लोकतंत्र ने लोगों को अधिकार प्रदान किए हैं, इनमें से कुछ को संविधान में संहिताबद्ध भी किया गया है। फिर भी, अधिकार प्रदान करना एक बात है, और लोगों द्वारा इन अधिकारों का लाभ उठाना एकदम अलग बात है।

भारत में, लोकतंत्र का अर्थ क्या है, इसकी जागरूकता आज़ादी के गत 75 वर्षों में बढ़ी है। इसका एक छोटा-सा संकेतक उन लोगों का बढ़ता प्रतिशत है जो मतदान के लिए कतार में खड़े दिखते हैं। एक अन्य संकेतक, चुनाव प्रणाली में प्रत्यक्ष दिखने वाले सुधार और इसे विकृतियों से छुटकारा दिलाने के वर्षों से हो रहे प्रयास हैं। लेकिन, इन प्रयासों के बावजूद लोकतंत्र ने हर नागरिक को समान रूप से स्पर्श नहीं किया है।

यह कैसे सम्भव है? लोकतंत्र को आत्मसात करने के लिए, पद्धति में भागीदारी होना आवश्यक है। दुर्भाग्य से, हमारे लाखों नागरिक अब भी अत्यंत ग़रीबी में जी रहे हैं। पर ग़रीब होने का अर्थ जागरूकता की कमी बिल्कुल नहीं है। भारत में यही ग़रीब हैं जो तथाकथित उन उन्नत लोकतंत्रों के विपरीत कहीं बड़ी

संख्या में मतदान करने निकलते हैं, जहाँ ग़रीबी और कम मतदान के बीच सीधा सम्बंध है। यहाँ तो लड़ाई हर नागरिक को उन निर्णयों में भागीदार बना कर लोकतंत्र की गुणवत्ता सुधारने की है जो लोकतंत्र का पालन करते हुए लिए जाते हैं। प्रधानमंत्री ने कल्याणकारी कार्यक्रमों का विस्तार करके उन्हें लक्षित लाभार्थियों तक कुशलतापूर्वक और ईमानदारी से पहुँचाना सुनिश्चित करके, लाखों वंचितों को इस पद्धति में ठोस भागीदारी प्रदान की है- यह भागीदारी चाहे आवास के रूप में हो या पेयजल और शौचालयों तक पहुँच प्रदान करने में हो, रसोई गैस की उपलब्धता हो या संकट के समय मुफ्त राशन देने के रूप में हो।

लोगों का जीवनयापन स्तर बेहतर होने से उन्हें गरिमा मिलती है और तंत्र में भागीदारी भी। और इसी को सही मायने में लोकतंत्र का लाभ लेना कह सकते हैं।

# भारतीय तीर्थस्थान

## सांस्कृतिक अन्वेषण की दिव्य यात्राएँ

**"संगठित समाज के तौर पर नए विचारों और परिवर्तनों को आत्मसात करके ही हम सदा आगे बढ़ते हैं। इस कार्य में हमारी सांस्कृतिक गतिशीलता और यात्राएँ बड़ी भूमिका निभाती हैं। इसलिए हमारे ऋषियों और संतों ने हमें तीर्थ यात्राओं जैसी आध्यात्मिक ज़िम्मेदारियाँ भी सौंपी थीं। उसी अनुसार हम सब भिन्न-भिन्न तीर्थ यात्राओं पर जाते हैं।"**

**-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
**('मन की बात' के सम्बोधन में)**

"प्रधानमंत्री ने सबरीमाला के बारे में जो कहा वह काफ़ी महत्वपूर्ण था और इसने लोगों का ध्यान खींचा है। इतने सारे लोग उनकी बातों को ध्यान से सुनते हैं। सिर्फ़ दक्षिण भारत ही नहीं, मुझे यकीन है कि प्रधानमंत्री के शब्दों को सुनकर सबरीमाला में दर्शन करने के लिए लाखों लोग उत्तर भारत से भी आएँगे।"

**-कांतारू राजीवरु**
सबरीमाला के प्रधान पुजारी

भारत रहस्यवादियों एवं ऋषियों, पावन नदियों और पवित्र वृक्षों, खगोलीय पर्वतों तथा दिव्य वनों के साथ-साथ विभिन्न संस्कृतियों, धर्मों और भावनाओं का देश है। दरअसल, भारत एक सतत् प्रवाहित ऊर्जा स्रोत है! सर्वप्रथम, भारत चार धर्मों - हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, सिख धर्म और जैन धर्म का उद्भव स्थल है। समृद्ध इतिहास और विविधता ने भारत को अध्यात्म के वैश्विक केंद्र का दर्जा दिलाया है। भारत की विपुल धार्मिक धरोहर ने देशवासियों को ऐसे स्थान उपलब्ध कराए हैं जो उनके अंतर्मन को ब्रह्मांड की चैतन्य शक्ति - ईश्वर से एकमेव करते हैं। आस्था के इन केंद्रों में भारत की विविधता कुछ ऐसे दृश्यमान होती है, जहाँ धनी हो या निर्धन, समृद्ध हो या दरिद्र, युवा या वृद्ध, कोई एक संस्कृति का हो या दूसरी का अर्थात् समाज के विभिन्न पक्षों से आए लोग, पवित्र भूमि के आध्यात्मिक और धार्मिक इतिहास की उपासना के लिए एकत्र होते हैं।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' सम्बोधन में - 'चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति' मंत्र का उल्लेख किया, जिसका अर्थ है चलते रहो, चलते रहो, चलते रहो। उपनिषदों से प्राप्त यह मंत्र हमारे देश के आधारभूत गुण अर्थात् चलते रहो, गतिशील रहो



को इंगित करता है। और तीर्थ यात्राओं में गतिशीलता के इसी दृष्टांत का सार समाया रहता है।

तीर्थयात्राएँ या ऐसे स्थानों की यात्राएँ जहाँ धार्मिक शक्तियाँ, ज्ञान अथवा दिव्य अनुभव प्राप्त हो सकें - इसके संदर्भ सर्वप्रथम ऋग्वेद एवं पुराणों जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलते हैं। प्रतिज्ञा एवं उपवास से शुरू होने वाली यात्रा को पूरा करने के लिए विभिन्न श्रद्धालु समूहों के गहन संयुक्त प्रयास, लम्बी पदयात्राएँ, और ऊर्जा बनाए रखने के लिए निरंतर भजन गायन इसके महत्वपूर्ण अनुष्ठान होते हैं। यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि तीर्थ यात्राओं का मूलभाव किसी व्यक्ति के स्थानांतरण से ही नहीं जुड़ा होता। हमारे ऋषियों के लिए तीर्थयात्रा बाह्य और आंतरिक दोनों अन्वेषणों हेतु महत्वपूर्ण होती थी।

तीर्थ यात्रियों के लिए यात्रा पवित्र मंदिरों और गर्भगृहों के दर्शनों से अधिक महत्वपूर्ण होती है। यह सांस्कृतिक पर्यवेक्षण, अन्य तीर्थयात्रियों, भूमि, संस्कृति और परम्पराओं के बारे में जानने के कौतुहल के कारण नैतिक और आध्यात्मिक सम्मिलन के रूप में भी आवश्यक होती है। भारत की सम्मिलित चेतना का प्रतिनिधित्व करने वाली चार धाम यात्रा इसका सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। अप्रैल या मई माह में शुरू होने वाली ऊँचे पर्वतों की यह यात्रा अक्तूबर तक चलती है। 2019 में देश भर से इस यात्रा पर 34 लाख से भी अधिक लोग गए थे। इस वर्ष पहले ही महीने में 16 लाख से अधिक का

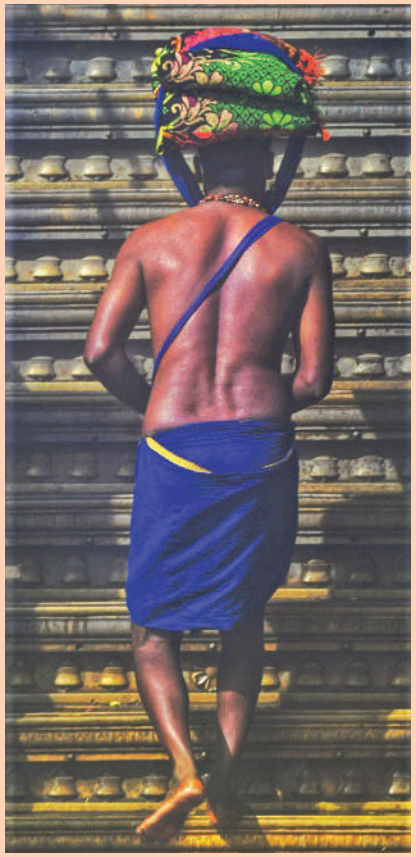

आंकड़ा दर्ज़ किया जा चुका है। अन्य उदाहरण, 1 जुलाई 2022 से पुरी की जगन्नाथ यात्रा का है। यह यात्रा दो वर्ष की कोविड पाबंदियों के बाद आरम्भ हुई है। देशभर से भगवान् जगन्नाथ और उनके भाई-बहन के तीन रथ को खींचने के लिए 10 लाख से अधिक श्रद्धालु वहाँ पहुँचे।

मौजूदा सरकार केवल आर्थिक समर्थता हेतु ही नहीं बल्कि साम्प्रदायिक सौहार्द के तौर पर धार्मिक पर्यटन के महत्व के प्रति जागरूक है। पर्यटन मंत्रालय, अपनी

स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत देश भर में चुने गए स्थानों पर योजनाबद्ध और प्राथमिकता से पर्यटन अवसंरचनात्मक ढाँचे का विकास कर रहा है। योजना के तहत, देश भर में धार्मिक/आध्यात्मिक स्थलों पर विकास हेतु पंद्रह थीम्ड सर्किट्स की पहचान की गई है : आध्यात्मिक सर्किट, रामायण सर्किट, कृष्ण सर्किट, बौद्ध सर्किट, तीर्थंकर सर्किट, सूफ़ी सर्किट और ग्रामीण सर्किट। 'प्रशाद' योजना के अंतर्गत, धार्मिक एवं हेरिटेज स्थलों पर एकीकृत पर्यटन अवसंरचना विकास किया जा रहा है। इसका लक्ष्य धार्मिक पर्यटन अनुभव को समृद्ध बनाने के लिए भारत भर में तीर्थस्थानों की पहचान और विकास करना है।

इस पवित्र भूमि में, जहाँ विश्वास और आध्यात्मिकता सर्वव्यापी है, तीर्थयात्राएँ बेहद लोकप्रिय हैं और पर्यटन की दृष्टि से यह सबसे महत्वपूर्ण अन्वेषणों में से एक है। हालिया वर्षों में बेहतर यातायात और संयोजकता से यह यात्राएँ और भी

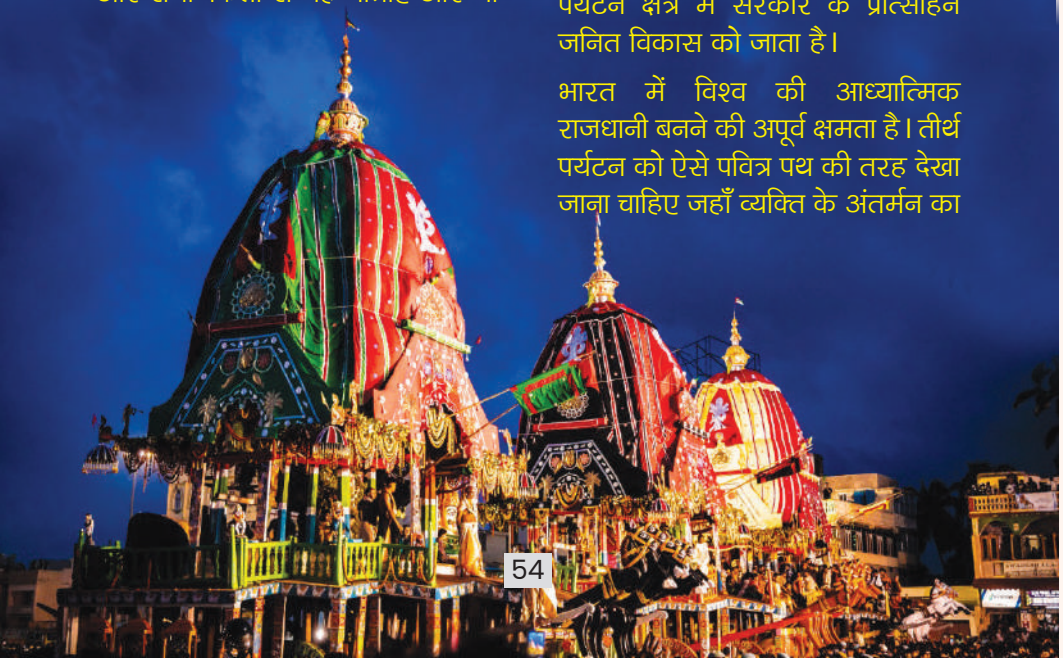

"पुरानी परम्परा, जहाँ रथ यात्रा के मार्ग को सोने की झाड़ू से साफ़ किया जाता है, पुरी में पुरी गजपति और अहमदाबाद में गुजरात के मुख्यमंत्री द्वारा किया जाता है। जगन्नाथ परिवार के सदस्यों में से एक, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 13 वर्षों तक यहाँ परम्पराओं को निभाया।"

**-महेंद्र झा**
ट्रस्टी, जगन्नाथ मंदिर, अहमदाबाद

लोकप्रिय हो गई हैं।

जून 2022 तक, कोविड पाबंदियों में ढील के बाद ऋषिकेश, हरिद्वार, वाराणसी और चार धाम जैसे आध्यात्मिक पर्यटन स्थलों में पर्यटन तथा होटल उद्योग के व्यवसाय में 35-40 प्रतिशत वृद्धि देखी गई है। वृद्ध ही नहीं, बल्कि युवा पीढ़ी भी देश के आध्यात्मिक स्थलों की ओर उन्मुख हो रही है और इसका श्रेय पर्यटन क्षेत्र में सरकार के प्रोत्साहन जनित विकास को जाता है।

भारत में विश्व की आध्यात्मिक राजधानी बनने की अपूर्व क्षमता है। तीर्थ पर्यटन को ऐसे पवित्र पथ की तरह देखा जाना चाहिए जहाँ व्यक्ति के अंतर्मन का

परमात्मा से अटूट सम्बंध बनता है। यह जागृति हमें भारतीय परम्परा और प्रकृति के मातृ स्वरूप के स्वाभाविक गुणों के प्रति सचेत करती है। इसी तरह, हमारे देश के भीतर सभी यात्राओं के दौरान अमीर और ग़रीब, बड़े या छोटे के बीच कोई अंतर नहीं होता। चेन्नई के किसी परिवार को अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के दर्शन करते या उत्तर भारत के किसी परिवार को तिरुमला तिरुपति मंदिर की यात्रा करते देखा जा सकता है। तमाम भेदभाव से ऊपर उठते हुए, यात्रा रूपी लक्ष्य सर्वोपरि होता है। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' अभियान के शुभारम्भ के अवसर पर प्रधानमंत्री ने भारत की ऐसी ही छवि की कल्पना की थी।

जगन्नाथ, पंढरपुर, अमरनाथ और सबरीमाला की यात्रा के बारे में जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

## अमीश त्रिपाठी

लेखक और निदेशक, नेहरू सेंटर, लंदन

अमीश त्रिपाठी द शिव ट्रायलॉजि और रामचंद्र सीरीज़ जैसी सुप्रसिद्ध पुस्तकों के जाने-माने लेखक हैं जो भारतीय प्रकाशन के इतिहास में सबसे तेज़ बिकने वाली पुस्तकों में क्रमशः पहले और दूसरे स्थान पर रहीं। उन्होंने भारतीय तीर्थ-यात्राओं के महत्व और मूल्यों तथा भारत के बहुसांस्कृतिक स्वरूप के बारे में अपने विचार साझा किए।

भारतीय पौराणिक कथाओं या धार्मिक ग्रंथों के अनुसार, 'तीर्थ' शब्द का अर्थ वह घाट या उथले पानी वाली जगह है जहाँ से कोई नदी को पार करता है। इस शब्द के पीछे एक दार्शनिक सोच भी है। हालाँकि आज इसका अर्थ तीर्थ-यात्रा माना जाता है, लेकिन हमारे पूर्वजों ने इसे एक ऐसा बिंदु माना था जहाँ से वे मानव संसार को पार करके दिव्य संसार में पहुँच कर, दिव्यता का स्पर्श करेंगे। हमारे देश में ऐसे विशिष्ट स्थान हैं जिन्हें हमारे पूर्वजों ने विशेष माना था। ऐसे स्थानों की अपनी एक ऊर्जा थी जो सहस्र वर्षों में तीर्थ-यात्रियों की ऊर्जा से मिलकर हमें दिव्यता का स्पर्श करने में सहायक होते हैं। हमारी ऊर्जा ऐसे स्थानों से मिलकर उसे पवित्र बनाती है। ऐसे विशेष स्थानों के प्रति हज़ारों वर्षों से चली आ रही हमारी भक्ति और लगाव, इसे विरासत से जोड़ता है।

तीर्थस्थल दूरदराज़ और सुदूर क्षेत्रों में स्थित हैं जहाँ पहुँचने के लिए अथक प्रयास की आवश्यकता होती है। यह उस स्थान के प्रति श्रद्धा ही है जो भक्तों को वहाँ तक पहुँचने में कठिनतम इलाकों को पार करने के लिए प्रेरित करती है, अमरीकी विद्वान डयाना ऐक ने हमारे देश के बारे में अद्भुत पंक्तियाँ लिखी हैं कि "भारत को, राजा-महाराजाओं और सरकारों की सत्ता ने नहीं, तीर्थ-यात्रियों के पदचिह्नों ने बनाया है।"

सांस्कृतिक गतिशीलता के महत्व के बारे में 'मन की बात' में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों को दोहराते हुए अमीश ने कहा, सहस्राब्दियों से भारत और भारतीय धर्म के कोमल किंतु स्थाई सूत्र से बँधे हुए हैं। इसलिए, जब आप किसी अन्य स्थान की यात्रा पर जाते हैं तो कुछ तो ऐसा होता है जो आपको उस स्थान से बाँधता है। मैं केरल में त्रिशूर के श्री वडक्कनाथन मंदिर गया तो इसलिए गया क्योंकि मैं एक शिवभक्त हूँ। हालाँकि मुझे वहाँ की मलयालम भाषा नहीं आती, लेकिन इसने मुझे मंदिर जाने से रोका नहीं। मंदिर में हम किसी भाषा के आधार पर विभाजित नहीं थे, अपितु शिव के प्रति भक्ति की भावना और श्लोकोच्चार से जुड़े थे जिसे हम सब जानते थे। जैसे विभिन्न फूलों के बीच प्रत्येक फूल की अपनी पहचान है, लेकिन सब एक धागे से बँधे हैं जिसे हम धर्म कहते हैं।

जगन्नाथ यात्रा, अमरनाथ यात्रा, सबरीमाला यात्रा जैसी इन यात्राओं में भारत के कोने-कोने से लोग शामिल होते हैं। विदेशी भी इन यात्राओं में भाग लेते हैं। जगन्नाथ रथ यात्रा एक प्राचीन परम्परा है जो भारत के अधिकांश शहरों में निकाली जाती रही है। इन यात्राओं की सुंदरता उन लोगों की भागीदारी में निहित है जो देवी-देवताओं की सेवा के लिए एक साथ एकत्र होते हैं। चूंकि ये रथ यात्राएँ मुख्य सड़कों से होकर गुज़रती हैं, इसलिए शहर के

समग्र बुनियादी ढांचे में सुधार होता है।

सरकार की प्रशाद योजना, स्वदेश दर्शन योजना, 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' जैसी पहल के बारे में उन्होंने कहा कि इन योजनाओं के अलावा देश की शिक्षा नीति में भी सुधार हो रहे हैं जिससे युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों से जुड़ने में मदद मिलेगी। जिन योजनाओं का अभी हमने उल्लेख किया, उनकी बात करें तो यदि सभी सुविधाएँ मुहैया हों और यात्रा आसान हो तो हर कोई उन स्थानों पर जाना पसंद करेगा। हवाई अड्डों और रेलवे स्टेशनों के माध्यम से बेहतर सम्पर्क बनने से लोगों की मानसिकता भी सकारात्मक होती है। बुनियादी ढांचा अच्छा हो तो विदेशी भी वहाँ आसानी से पहुँच सकते हैं। ये सब स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अमीश ने तीर्थ-स्थलों पर स्वच्छता के अत्यधिक महत्व पर बल देते हुए कहा कि यदि आप केदारनाथ जाते समय सड़क पर प्लास्टिक पाते हैं, तो आपको लगेगा कि यह न केवल पर्यावरण की दृष्टि से ख़तरनाक है, बल्कि यह हमारे देवी-देवताओं का भी अपमान है। जब आप तीर्थ पर जाएँ तो सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जाएँ। तीर्थयात्रियों को मेरी यही सलाह होगी कि वे यहाँ-वहाँ कचरा न फेंके और कूड़ेदान का उपयोग करें।

# दो साल बाद भव्य तरीके से निकली पुरी की रथ यात्रा

"भगवान जगन्नाथ की यह शुभ रथ यात्रा दो साल बाद हो रही है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी यह उत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। यहाँ भक्त तीन भव्य रथों कि पवित्र रस्सियों को खींचकर श्री गुंडिचा मंदिर ले जाते हैं। इस पावन अवसर पर हम भगवान् जगन्नाथ से प्रार्थना करते हैं कि वह पूरे विश्व को समृद्धि प्रदान करें। हरि ओम!"

रथ यात्रा या रथ उत्सव प्रमुख हिंदू त्योहारों में से एक है जो हर वर्ष आषाढ़ के महीने में शुक्ल पक्ष के दूसरे दिन से मनाया जाता है। इस त्योहार का सबसे प्रमुख केंद्र ओडिशा में जगन्नाथ पुरी मंदिर है, जो चार प्रमुख हिंदू धामों में से एक है। यह त्योहार भगवान् जगन्नाथ के अपने भाई-बहनों के साथ रानी गुंडिचा के मंदिर की यात्रा का जश्न मनाता है। समारोह में भाग लेने के लिए हर साल हज़ारों तीर्थयात्री पुरी आते हैं।

*हमारी दूरदर्शन टीम ने जगन्नाथ मंदिर के प्रमुख पूजारी* ***गजपति महाराज दिव्यसिंह देव*** *से बात की।*

# अहमदाबाद में श्री जगन्नाथ की रथ यात्रा

इसी तरह के नज़ारे देश के कई राज्यों में देखे जा सकते हैं। ऐसी ही एक जगह है गुजरात के अहमदाबाद में स्थित भगवान् जगन्नाथ मंदिर। मंदिर के ट्रस्टी महेंद्र झा ने हमारी दूरदर्शन टीम को बताया, **"वर्ष में एक बार, भगवान् जगन्नाथ भक्तों के दर्शन देने हेतु गर्भगृह से बाहर आते हैं। सदियों पुरानी परम्परा, जहाँ रथ यात्रा का मार्ग सोने की झाड़ू से साफ़ किया जाता है–पुरी में पुरी गजपति और अहमदाबाद में गुजरात के मुख्यमंत्री द्वारा यह कार्य किया जाता है। जगन्नाथ परिवार के सदस्यों में से एक, भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने 13 वर्षों तक यहाँ परम्पराओं को निभाया है। भक्त अपने जात-पात को भुलाकर भगवान् जगन्नाथ के अनुयायियों के रूप में इस आयोजन को सफल बनाने के लिए एक साथ आते हैं।"**

# केरल की सबरीमाला तीर्थयात्रा का महत्व

सबरीमाला मंदिर, भगवान् अयप्पा को समर्पित, केरल के पथानामथिट्टा ज़िले में सबरीमाला नामक एक पहाड़ी की चोटी (समुद्र तल से लगभग 3,000 फ़ीट) पर स्थित है। मंदिर सभी धर्मों के लोगों के लिए खुला है। देश भर से लाखों तीर्थयात्री अप्रैल में 'विशु विलक्कू', नवंबर-दिसंबर में 'मंडलपूजा', और जनवरी में 'मकरविलक्कु' नामक सबसे कठिन त्योहारों के दौरान यहाँ इकट्ठा होते हैं। *हमारी दूरदर्शन की टीम ने सबरीमाला के तंत्री (प्रधान पुजारी),* ***कांतारू राजीवारु*** *से सम्पर्क किया।*

"प्रधानमंत्री ने ('मन की बात' के सम्बोधन में) सबरीमाला का उल्लेख किया और काफ़ी प्रासंगिक दृष्टिकोण दिया। सबरीमाला दक्षिण भारत के सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में से एक है। तीर्थयात्रियों के बीच भेदभाव की कोई प्रथा कभी नहीं रही है। भारत के विभिन्न स्थानों से समूह यहाँ आते हैं और एक साथ भोजन करते हैं। एक बार जब वे तीर्थयात्रा शुरू करते हैं, तो भक्त एक-दूसरे को स्वामी या अयप्पा कहते हैं।"

"इतने सारे ग़रीब लोग अपनी आजीविका के लिए सबरीमाला पर निर्भर हैं। बहुत सारे व्यापारी तीर्थयात्रियों को अपनी सेवाएँ प्रदान करने और राजस्व अर्जित करने में सक्षम हैं। हेड-लोड वर्कर्स से लेकर बड़े पैमाने के व्यापारियों तक, सबरीमाला तीर्थयात्रा से सभी को फायदा होता है।"

"प्रधानमंत्री ने सबरीमाला के बारे में जो कहा वह काफ़ी महत्वपूर्ण था और इसने लोगों का ध्यान खींचा। इतने सारे लोग उनकी बातों को ध्यान से सुनते हैं। सिर्फ़ दक्षिण भारत ही नहीं, मुझे यकीन है कि प्रधानमंत्री के शब्दों से प्रेरणा लेकर सबरीमाला में दर्शन करने के लिए लाखों लोग उत्तर भारत से भी आएँगे। मैं प्रधानमंत्री को सबरीमाला आने के लिए पूरे सम्मान के साथ आमंत्रित करता हूँ।"

# अमरनाथ की गुफ़ा में बसे शिवधाम तक की ऐतिहासिक यात्रा

*अमरनाथजी को प्रमुख हिंदू धामों में से एक माना जाता है। जम्मू और कश्मीर में लिद्दर घाटी के सुदूर छोर पर एक संकरी घाटी में स्थित यह पवित्र गुफ़ा भगवान् शिव का निवास है। इस गुफ़ा में भगवान् एक बर्फ़-लिंग के रूप में विराजमान हैं, जो प्राकृतिक रूप से बना है। हमारी दूरदर्शन टीम ने श्री अमरनाथजी श्राइन बोर्ड के सीईओ* ***नितीश्वर कुमार*** *से बात की।*

"प्रधानमंत्री ने अपने 'मन की बात' सम्बोधन में स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने वाले आध्यात्मिक पर्यटन के बारे में बहुत अच्छी बात कही। अमरनाथ यात्रा एक ऐतिहासिक धरोहर है जो लम्बे समय से अमरनाथजी श्राइन बोर्ड के साथ स्थानीय लोगों के योगदान से आयोजित की जाती है। स्थानीय लोग और श्राइन बोर्ड यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि यात्रा के दौरान भक्तों को बेहतर और आध्यात्मिक अनुभव मिले।

सभी भक्तों को RFID कार्ड जारी करना एक बहुत ही उपयुक्त व्यवस्था है ताकि हम यात्रा के दौरान उनकी सुरक्षा पर नज़र रख सकें। यह हमें भीड़ को बेहतर तरीके से प्रबंधित करने में भी मदद करता है। हमने पंजीकरण के समय सभी भक्तों को यात्रा के दिशानिर्देश भी दिए हैं क्योंकि यह 14,000 से 15,000 फ़ीट की ऊँचाई वाला ट्रेक है। हमने आधार शिविरों, ट्रेक पर और धर्मस्थल पर स्वास्थ्य केंद्रों की भी पुख़्ता व्यवस्था की है। ये स्वास्थ्य केंद्र किसी भी आपात स्थिति से निपटने में सक्षम हैं।

हम दूरदर्शन और दो अन्य निजी कम्पनियों की मदद से भक्तों के लिए ऑनलाइन दर्शन भी आयोजित कर रहे हैं। यह सुबह और शाम की आरती के दौरान निःशुल्क उपलब्ध है। अमरनाथ श्राइन बोर्ड की ओर से, हम सभी भक्तों से मंदिर में आने और दर्शन करने का आग्रह करते हैं।"

# वेस्ट टू वेल्थ

## स्वच्छ, हरित और विकसित भारत की ओर

**“हम ‘मन की बात’ में वेस्ट टू वेल्थ से जुड़े सफल प्रयासों की चर्चा करते रहे हैं। इस तरह के प्रयास प्रेरणादायी तो है ही, सिंगल यूज प्लास्टिक के ख़िलाफ़ भारत के अभियान को भी गति देते हैं। हमारा पर्यावरण स्वच्छ रहे, हमारे पहाड़-नदियाँ, समंदर, स्वच्छ रहें, तो स्वास्थ्य भी उतना ही बेहतर होता जाता है।”**

**-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी**
**(‘मन की बात’ के सम्बोधन में)**

“यह एक बहुत ही सुखद अनुभव था कि हमारे देश के सर्वोच्च नेता ने हमारे काम की सराहना की है। ‘मन की बात’ में उल्लेख किया जाना हमारे लिए बहुत गर्व का क्षण है और यह हमें भविष्य में भी ऐसे और काम करने के लिए प्रेरित करता है, जहाँ पर्यावरण उत्थान के साथ हमारे समाज का सांस्कृतिक उत्थान भी हो।”

**-सुनील एस. लढा**
आर्किटेक्ट, असेप अकैडमिक फाउंडेशन

आज देश चारों ओर स्वच्छता की अनोखी लहर देख रहा है। छोटे बच्चों और बुजुर्ग नागरिकों के साथ-साथ, पर्यावरण मुद्दे पर सहयोग के लिए, प्रत्येक नागरिक में जन-भागीदारी का गहरा आदर्श प्रवाहित हो रहा है।

राष्ट्र के समक्ष प्रधानमंत्री ने अपने ‘मन की बात’ संदेश में स्वच्छता और कचरा प्रबंधन के मुद्दे पर अक्सर बात की है। कार्यक्रम के नवीन संस्करण में उन्होंने स्वच्छता सेनानियों के विभिन्न गुटों द्वारा ‘वेस्ट टू वेल्थ’ के सफल प्रयासों पर रोशनी डाली। कचरा समाज के विकास और जीवन से जुड़ा नैसर्गिक उत्पाद है। 2017-18 की रिपोर्ट में, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुमान के अनुसार भारत में एक वर्ष में 9.4 मिलियन टन प्लास्टिक निर्मित होता है। यह अपशिष्ट ना केवल हमारी पृथ्वी बल्कि हमारे स्वास्थ्य, उत्पादकता और समाज की प्रगति को भी नुकसान पहुँचाता है। अतः भारत की विकास प्रक्रिया में एवं उसके लोगों के स्वास्थ्य को देखते हुए कुशल अपशिष्ट प्रबंधन महत्वपूर्ण कार्य हो जाता है।

नए भारत की विकास यात्रा में कुशल अपशिष्ट प्रबंधन एक महत्वपूर्ण प्राथमिकता है। निकट अतीत में सरकार ने अपशिष्ट-मुक्त राष्ट्र बनाने के लिए

स्वच्छ भारत अभियान और प्रधानमंत्री विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सलाह परिषद् (PMSTIAC) की शुरुआत की थी। PMSTIAC का लक्ष्य स्वच्छ और हरित पर्यावरण के लिए आधुनिक तकनीकों की पहचान एवं विकास तथा अपशिष्ट के गुणकारी इस्तेमाल, पुनर्चक्रण के लिए तकनीकों की पहचान, विकास एवं तैनाती करना है। साथ ही, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन संशोधित नियम, 2021 भी विज्ञप्त किए हैं जिसके अनुसार, 1 जुलाई 2022 से प्लास्टिक प्रदूषण रोकने के लिए सिंगल यूज़ प्लास्टिक निर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और इस्तेमाल पर रोक लगा दी गई है।

उक्त पहल एवं सामुदायिक तौर पर जागृति तथा तकनीकों में उत्थान से पुनर्चक्रण और पुनः इस्तेमाल से कचरे को मूल्यवान स्रोत में बदला जा रहा है। इससे केवल अपशिष्ट में ही कमी नहीं आती, बल्कि भारतीयों के लिए रोज़गार के नए स्रोत भी खुल रहे हैं।

एक ओर जहाँ सरकार प्लास्टिक अपशिष्ट को कम करने और पुनर्चक्रण के हर सम्भव प्रयास कर रही है, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का विश्वास है कि हरित भविष्य के लिए युवाओं के स्टार्ट-अप्स नवोन्मेष के माध्यम से स्वच्छ भारत का यह सपना सच होगा। हाल के वर्षों में, कचरे को काम के उत्पादों में बदलने के लिए, तकनीक तथा विश्वस्तरीय नवोन्मेष का इस्तेमाल करने वाले अनेक स्टार्टअप और व्यवसाय सामने आए हैं। उदाहरण के लिए, कभी परेशानी का कारण बने रहने वाले प्लास्टिक अपशिष्ट को इकट्ठा कर कपड़े में बदला जाता है जिससे आगे कपड़े और जूते बनाए जाते हैं। कभी पृथ्वी पर जमघट लगाने वाली प्लास्टिक

“यह बहुत खुशी की बात है कि प्रधानमंत्री ने ‘मन की बात’ में हमारी कम्पनी द्वारा किए जा रहे सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट का उल्लेख किया। हम इस परियोजना को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री के आभारी हैं। यह कराईकल नगरपालिका के लिए सम्मान की बात है।”

**-रमेश**
कराईकल प्रोजेक्ट मैनेजर, हैंड इन हैंड

कटलरी को बदलकर अब पर्यावरण-अनुकूल खाद्य योग्य एवं पर्यावरण-अनुकूल कटलरी बनाई जा रही है।

हालिया 'मन की बात' सम्बोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि अपने स्तर पर अनोखी पहल से कुछ स्वच्छता सेनानियों ने राष्ट्र में परिवर्तन की बयार बहाई है।

आइज़ोल के लोगों द्वारा 'सेव चिटे लुई एक्शन प्लान' अभियान ने न केवल प्लास्टिक कचरे का अम्बार बन चुकी चिटे लुई नदी को बचाया बल्कि उस प्लास्टिक का इस्तेमाल राज्य ने पहला प्लास्टिक मार्ग बनाने के लिए भी किया। कराईकल, पुदुचेरी में समुद्र किनारे से प्लास्टिक कचरा उठाने और उसके पुनर्चक्रण के लिए वहाँ के लोगों ने 'रीसाइक्लिंग फॉर लाइफ' अभियान आरम्भ किया था। हिमाचल प्रदेश में, लोगों ने साइकिल पर राज्य भर में पर्यावरण सुरक्षा और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए 175 कि.मी. की यात्रा की। राजस्थान के उदयपुर में चार्टर्ड अकाउंटेंट्स के समूह ने सुल्तान की बावली की सफ़ाई कर उसे पुनर्जीवित किया और उस स्थान पर पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए संगीत और सौहार्द कार्यक्रम शुरू कराया।

भारत आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहा है और अगले 25 वर्ष, यानी 'अमृत काल' के दौरान, देश के प्रत्येक नागरिक द्वारा उठाए गए कदम, आने वाले वर्षों में राष्ट्र का भविष्य तय करेंगे। सबका साथ और सबका प्रयास आगामी वर्षों का स्वच्छ, हरित और विकसित भारत तैयार करेगा।

### *सासेवाडी गाँव : प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन का आदर्श*

जब पुणे ज़िले का सासेवाडी गाँव प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन (PWM) से संघर्ष कर रहा था तब स्थानीय लोगों ने

> "'सेव चिटे लुई कोर्डिनेशन कमिटी की तरफ़ से, मैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उनके 'मन की बात' कार्यक्रम में हमारे चिटे लुई को बचाने के लिए चल रहे प्रयास और संघर्ष का उल्लेख करने और समर्थन करने के लिए धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूँ।"
>
> **-श्री रोचमलियाना**
> महासचिव, सेव चिटे लुई मिशन

गाँव की सफ़ाई और उसे कूड़े से मुक्त कराने का ज़िम्मा लिया। निकटवर्ती शिंदेवाडी, वेलु और कसुर्दी गाँव भी इसी प्रकार की समस्या से जूझ रहे थे। पंचायतों ने इस समस्या को पहचाना और स्वच्छ भारत ग्रामीण मिशन फेज़ तृतीय के अंतर्गत कार्रवाई की।

एक निजी कम्पनी से साझेदारी कर, पंचायतों ने प्लास्टिक को उद्योगों में जलाए जाने वाले एक प्रकार के कच्चे तेल में बदलवाने का काम किया। सासेवाडी गाँव ने अपशिष्ट को इकट्ठा करने, अलग करने और स्थानांतरण का तंत्र तैयार कर, मौजूदा संसाधनों का कुशलतम इस्तेमाल किया।

कम कीमत वाले PWM निर्माण के लिए, प्रस्तावित वर्मि-खाद इकाइयों को रिसोर्स रिकवरी केंद्रों में बदला गया जहाँ प्लास्टिक कचरा इकट्ठा कर के रखा गया। कम्पनी ने कचरा रु. 8 प्रति कि.ग्रा. लागत से खरीदा। इस पैसे को फिर से काम करने एवं प्रबंधन के लिए इस्तेमाल किया गया।

आज प्रोसेसिंग इकाइयाँ सभी तरह का प्लास्टिक अपशिष्ट लेती हैं और इससे बने उत्पाद पर्यावरण के लिए भी हानिकारक नहीं होते। दरअसल, उत्पाद से निर्मित गैस से खुद संयंत्र के उपकरणों को ऊर्जा मिलती है।

इस नवप्रवर्तनशील, कम-कीमत, समूह-स्तरीय और पर्यावरण हितैषी पहल और गाँववासियों के संयुक्त प्रयास से, प्लास्टिक कचरा समाप्त करने और पूर्ण-स्वच्छता उपलब्धि की दिशा में सासेवाडी ग्राम पंचायत ने सबके सामने स्वस्थ उदाहरण रखा है।

देश के अलग-अलग क्षेत्रों में 'वेस्ट टू वेल्थ' के लिए हो रहे प्रयासों के बारे जानने के लिए QR कोड स्कैन करें।

# सेव चिटे लुई मिशन : मरती हुई नदी का कायाकल्प

मिज़ोरम के आइज़ोल में बहती एक खूबसूरत नदी चिटे लुई, वर्षों की उपेक्षा के कारण गंदगी और कचरे के ढेर में बदल गई थी। नदी को फिर से जीवंत करने के लिए स्थानीय अधिकारियों, गैर सरकारी संगठनों और सबसे महत्वपूर्ण, स्थानीय लोगों का 'सेव चिटे लुई मिशन' के रूप में सामूहिक प्रयास औपचारिक रूप से वर्ष 2017 में शुरू हुआ था। मिशन के तहत, नदी से प्लास्टिक कचरे की सफ़ाई से लेकर एकत्रित कचरे से बनी राज्य की पहली प्लास्टिक सड़क के निर्माण तक, कई पहल की गई हैं।

*दूरदर्शन टीम से बात करते हुए, **श्री रोचमलियाना,** महासचिव, सेव चिटे लुई मिशन, ने इस पहल और उनकी उपलब्धियों के बारे में बताया:*

"पहला काम जो हमने किया वह था जागरूकता पैदा करना, जनता को शिक्षित करना और हितधारकों को संवेदनशील बनाना। राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के सहयोग से बड़े पैमाने पर कई नदी सफ़ाई कार्यक्रम किए। कई गैर सरकारी संगठन और धार्मिक संगठन भी आगे आए और मिशन के लिए मदद का हाथ बढ़ाया। चिटे लुई (जल प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 2018 का विधान एक उपलब्धि रही है। यह अधिनियम नदी की सीमा से 50 मीटर की दूरी पर, दोनों तरफ़ नदी तट सहित, चिटे लुई में जल प्रदूषण के रोकथाम और नियंत्रण को अनिवार्य बनाता है। अधिनियम के बाद चिटे लुई रोकथाम और जल प्रदूषण नियंत्रण नियम 2020 लाए गए। एक और उल्लेखनीय बात है चिटे लुई नदी से एकत्र किए गए पॉलीथिन कचरे से बनी प्लास्टिक की सड़क, जो कि एक मुख्य जंक्शन और पर्यटन स्थल के बीच बनाई गई है।

यह काफी अद्भुत है कि जीवन के सभी क्षेत्रों, विभिन्न जगहों और इलाकों के लोग चिटे नदी पर एक साथ आ रहे हैं और न केवल नदी को बचाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास कर रहे हैं, बल्कि कचरे से कुछ नया व उपयोगी बनाकर क्षेत्र की प्रगति में योगदान दे रहे हैं।"



# पर्यावरण संरक्षण के लिए हिमाचल की अनोखी साइकिल रैली

हिमाचल प्रदेश बड़ी संख्या में लोगों के लिए गर्मी से निजात पाने और प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने के लिए पसंदीदा स्थलों में से एक है। लेकिन यह राज्य प्रदूषण और कचरा इकट्ठा होने के खतरे से अछूता नहीं है। वहीं पहाड़ी सड़कों पर चलने वाले मोटर वाहनों की बढ़ती संख्या राज्य के प्राकृतिक पर्यावरण को और नुकसान पहुँचा रही है। अतः वर्ष 2004 में हस्तपा (हिमालयन एडवेंचर स्पोर्ट्स एंड टूरिज्म प्रमोशन एसोसिएशन) के संस्थापक, **श्री मोहित सूद** ने प्राकृतिक सुंदरता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने और क्षेत्र में पर्यटन को आगे बढ़ाने हेतु एमटीबी साइकिल रैली शुरू की। यह साइकिल रैली न केवल एक ऐसा आयोजन है जिसमें दुनिया भर के प्रसिद्ध साइकिल चालक भाग लेते हैं, बल्कि अनेक राष्ट्रीय स्तर के साइकिल चालक भी इसकी देन हैं।

*दूरदर्शन की टीम ने श्री मोहित सूद से उनकी पहल के बारे में जानने के लिए बात की।*

**"साइक्लिंग एक बहुत ही इको फ्रेंडली, नेचर फ्रेंडली और एनवायरमेंट फ्रेंडली एक्टिविटी है। शुरू से ही हमें पूर्ण विश्वास और उत्साह था कि यदि हम अपने सुंदर प्रदेश में साइक्लिंग को बढ़ावा दें तो आने वाले समय में न केवल पर्यटन के लिए, अपितु परिवहन और खेल के लिए भी एक बहुत अच्छा कल्चर डेवेलप कर सकते हैं। हमारा मानना है कि साइकिल चलाना एक ऐसी गतिविधि है जो युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा में ले जा सकती है। हमारी यह मुहिम 'फिट इंडिया' के तहत भी बहुत सही बैठती है।"**

श्री मोहित सूद ने उनकी पहल का उल्लेख करने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का धन्यवाद किया और कहा कि इसने उन्हें 18 साल पहले शुरू की गई इस पहल की दिशा में काम करने के लिए और अधिक उत्साह और जुनून से भर दिया है।

# 'रिसाइकल फ़ॉर लाइफ़' : वेस्ट टू वेल्थ की एक अनुकरणीय कहानी

पुदुचेरी में कराईकल कचरे को धन में बदलने की राह दिखा रहा है। पुदुचेरी में हर वर्ष पर्यटन के लिए बड़ी संख्या में लोग यहाँ आते हैं। लेकिन समुद्र तट पर प्लास्टिक कचरे की वृद्धि होने लगी, जिससे यहाँ का इकोसिस्टम अस्त-व्यस्त होने लगा था। इसलिए, समुद्र, तटों और इकोलॉजी को बचाने के लिए लोगों ने 'रिसाइकल फ़ॉर लाइफ' अभियान शुरू किया। यही नहीं, इस बंदरगाह शहर का कचरा डंपिंग यार्ड अब केवल डंपिंग यार्ड नहीं है, बल्कि उन्नत वैज्ञानिक तरीकों के उपयोग से यहाँ उचित वेस्ट मैनेजमेंट का कार्य किया जा रहा है।

अलग किया गया ठोस कचरा अब धन पैदा करता है। उदाहरण के लिए, होटलों से निकलने वाले खाद्य अपशिष्ट का उपयोग बायोगैस और जैव उर्वरक के उत्पादन के लिए किया जाता है। गैर-खाद कचरे का उपयोग उद्यानों में फूलों के गमले और पक्षियों और जानवरों जैसी सजावटी वस्तुएँ बनाने के लिए किया जाता है।

इस कार्य के लिए एक एनजीओ 'हैंड इन हैंड इनक्लूसिव डेवलपमेंट एंड सर्विसेज़' ने ज़बरदस्त काम किया। हैंड इन हैंड के कराईकल परियोजना प्रबंधक **श्री रमेश** ने बताया कि कैसे उन्होंने घरों से आने वाले कचरे को छाँटकर उसे उपयोगी बनाया।

कराईकल नगर पालिका के इंजीनियर **श्री लोगनाथन** ने इस पहल के बारे में और जानकारी दी। उन्होंने बताया कि वे घर-घर जाकर कचरे का संग्रह करते हैं। **"लगभग 85 प्रतिशत ठोस कचरे का वैज्ञानिक तरीकों से निपटान किया जाता है। साथ ही कचरे से बिजली भी पैदा की जाती है,"** उन्होंने कहा। 'मन की बात' में कचरे को रिसाइकल करने की उनकी इस पहल के उल्लेख के लिए उन्होंने प्रधानमंत्री के प्रति आभार व्यक्त किया। "यह हमें बहुत खुशी और प्रेरणा देता है।"

**मारिया रोज़,** सर्किल मैनेजर, हैंड इन हैंड एनजीओ, ने कचरे के पुनर्चक्रण के बारे में विस्तार से बताया और कहा, **"कचरे को बायोडिग्रेडेबल और नॉन-बायोडिग्रेडेबल कचरे में अलग किया जाता है। रिसाइकिल किए गए कचरे को उपयोग में लाया जाता है। इस परियोजना से 200 से अधिक परिवारों की महिलाएँ लाभान्वित हुई हैं। यह खुशी की बात है कि भारत के प्रधानमंत्री ने हाल ही में 'मन की बात' में हमें हाइलाइट किया।"**



# सुल्तान से सुर-तान : कायाकल्प की मिसाल

एक महत्वपूर्ण वास्तुशिल्प तत्व, जो जल प्रदान करता था और जिसे भारत के शुष्क क्षेत्रों में खास माना जाता था, वह थी बावड़ी। ऐसा ही सैकड़ों साल पुरानी हैरत भरी बावड़ी है 'सुल्तान की बावड़ी', जो राजस्थान के उदयपुर के बेदला गाँव में स्थित है। इसे राव सुल्तान सिंह ने बनवाया था। लेकिन, उपेक्षा के कारण, धीरे-धीरे यह स्थान वीरान हो गया और कूड़े के ढेर में बदल गया। लेकिन, एक दिन, युवाओं का एक समूह अचानक वहाँ पहुँचा और उसकी दुखद स्थिति को देखकर, बावड़ी को बहाल करने और पुनर्जीवित करने का कार्य उन्होंने अपने हाथों में ले लिया।

उन्होंने अपने मिशन को 'सुल्तान से सुर-तान' नाम दिया। **श्री सुनील एस. लढा,** असेप अकेडमिक फाउंडेशन के वास्तुकार और इस पहल के लीडर, बताते हैं कि इसका नाम वास्तव में सुर तान बावड़ी था। उन्होंने न केवल बावड़ी का कायाकल्प किया बल्कि इसका एक वैकल्पिक उपयोग भी बनाया ताकि यह फिर से न मरे। **"चूंकि अब नल के माध्यम से घरों में पानी उपलब्ध है, बावड़ी का कोई उपयोग नहीं रहेगा। इसलिए हमने वहाँ एक संगीत समारोह किया, जहाँ हमने कलाकारों को बुलाया, जिन्होंने संगीत के साथ पेंटिंग की जुगलबंदी की। इस तरह, यह ग्रामीणों के दिलों में बैठ गया कि यह स्थान उनका सांस्कृतिक केंद्र है, जिसका वे विभिन्न उद्देश्यों के लिए उपयोग कर सकते हैं।"** बावड़ी ने विदेशी आगंतुकों को भी चकित कर दिया है, जिनमें जापान और डेनमार्क के प्रतिनिधिमंडल और विश्व प्रसिद्ध वास्तुकार **श्री बिल बेंसले** भी शामिल हैं।

**श्री अमित गौरव,** वास्तुकार, असेप अकेडमिक फाउंडेशन ने बताया **"इसकी हालत देखकर हमारे दिमाग में स्वच्छ भारत अभियान का विचार आया और हमने इसके जीर्णोद्धार का काम शुरू किया। हमारे देश में हज़ारों-लाखों बावड़ियाँ हैं और हमें उन्हें जीवित करने के लिए एक अभियान शुरू करना चाहिए।"** उन्होंने प्रधानमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा, **"हमने यह कार्य दिल से शुरू किया लेकिन हमने कभी नहीं सोचा था कि प्रधानमंत्री इसकी सराहना करेंगे। यह एक महान प्रेरणा है। उनकी वजह से, शायद यह छोटी-सी पहल बहुत बड़ी हो जाए।"**

# मन की बात

*प्रतिक्रियाएँ*

Mangal Pandey
@mangalpandeybjp

भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से ही 'आपातकाल' को हटाकर, वापस, लोकतंत्र की स्थापना की।
तानाशाही की मानसिकता को, तानाशाही वृत्ति-प्रवृत्ति को लोकतांत्रिक तरीके से पराजित करने का ऐसा उदाहरण पूरी दुनिया में मिलना मुश्किल है।
@narendramodi

#MannKiBaat

Translate Tweet

11:22 · 26 Jun 22 · Twitter for Android

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

चेन्नई और हैदराबाद के दो Start-Ups हैं- अग्निकुल और स्काईस्ट।

ये Start-Ups ऐसे Launch Vehicle विकसित कर रही हैं जो अन्तरिक्ष में छोटे payloads लेकर जायेंगे।

इससे Space Launching की कीमत बहुत कम होने का अनुमान है: PM @NarendraModi जी

#MannKiBaat

Translate Tweet

6,795 views

12:10 · 26 Jun 22 · Twitter for Android

Bhupender Yadav
@byadavbjp

PM Shri Narendra Modi ji shares inspiring examples of individual and community efforts that are turning 'Waste to Wealth.'

#MannKiBaat

PMO India

11:26 AM · Jun 26, 2022 · Twitter Web App

Syed Shahnawaz Hussain
@ShahnawazBJP

आज हमारा भारत जब इतने सारे क्षेत्रों में सफलता का आकाश छू रहा है, तो आकाश, या अन्तरिक्ष, इससे अछूता कैसे रह सकता है! बीते कुछ समय में हमारे देश में स्पेस सेक्टर से जुड़े कई बड़े काम हुए हैं। देश की इन्हीं उपलब्धियों में से एक है In-Space नाम की एजेंसी का निर्माण : PM #MannKiBaat

Translate Tweet

708 views 0:18 / 2:06

1:20 PM · Jun 26, 2022 · Twitter Web App

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

विजनरी लीडर, वैश्विक नेता और हमारे प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी की प्रेरणा का ही यह प्रताप है कि मिजोरम के नागरिकों ने नदी की सफाई के साथ-साथ 'Waste to Wealth' का उपयोग करते हुए स्वच्छता के क्षेत्र में एक नया इतिहास रच दिया। #MannKiBaat

Translate Tweet

PMO India @PMOIndia · Jun 26
Inspiring examples of individual and community efforts who are working on 'Waste to Wealth.' #MannKiBaat

1:16 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for Android

Anurag Thakur
@Anuragthakur

खेलो इंडिया यूथ गेम्स में इस बार भी कई ऐसी प्रतिभाएं उभरकर सामने आई हैं, जो बहुत साधारण परिवारों से हैं।

इन खिलाड़ियों ने अपने जीवन में काफी संघर्ष किया।

पीएम श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Translate Tweet

11:25 AM · Jun 26, 2022 · Twitter for iPhone

Meenakashi Lekhi
@M_Lekhi

अमृत महोत्सव सैकड़ों वर्षों की गुलामी से मुक्ति की विजय गाथा ही नहीं, बल्कि, आज़ादी के बाद के 75 वर्षों की यात्रा भी समेटे हुए है। इतिहास के हर अहम पड़ाव से सीखते हुए ही, हम, आगे बढ़ते हैं: प्रधानमंत्री @narendramodi जी
#MannKiBaat

Translate Tweet

11:48 AM · Jun 26, 2022 · Twitter for iPad

Smriti Z Irani
@smritiirani

साधारण परिवार से आने वाली सांगली की बेटी काजोल और रोहतक की तनु ने "खेलो इंडिया यूथ गेम्स" में सफलता प्राप्त कर यह सिद्ध किया है कि प्रतिभा के दम पर जीवन में मुकाम हासिल किया जा सकता है।

#MannKiBaat में इन दो बेटियों की प्रेरणादायी चर्चा के लिए PM @narendramodi जी का आभार।

Translate Tweet

8,193 views 0:09 / 1:21

1:21 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for iPhone

Manohar Lal
@mlkhattar

कड़ा अभ्यास, संघर्ष और जज़्बा हरियाणा के खिलाड़ियों की पहचान है और इसी के बल पर @Neeraj_chopra1 जैसे खिलाड़ी नए कीर्तिमान स्थापित करते रहते हैं।

बिटिया तनु का भी प्रयास सराहनीय है जिन्होंने @kheloindia में गोल्ड मेडल जीतकर अपने माता-पिता का सपना पूरा किया।
#MannKiBaat

Translate Tweet

1:26 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for Android

Dr Mansukh Mandaviya
@mansukhmandviya

कोरोना के ख़िलाफ़ सावधानी को भी हमें ध्यान रखना है। हालाँकि संतोष की बात है की आज देश के पास वैक्सीन का व्यापक सुरक्षा कवच मौजूद है। हम 200 करोड़ वैक्सीन डोज के क़रीब पहुँच गए है।

अगर आपकी दूसरी डोज के बाद प्रिकॉशन डोज का समय हो गया है तो ज़रूर लें। #MannKiBaat

Translate Tweet

1,934 views 0:30 / 1:15

11:55 AM · Jun 26, 2022 · Twitter Web App

Dharmendra Pradhan
@dpradhanbjp

1 जुलाई से होने वाली महाप्रभु जगन्नाथ जी की पवित्र रथ यात्रा और इस पावन पर्व के ज़रिए मिलने वाले गहरे मानवीय संदेश का आज के #MannKiBaat कार्यक्रम में प्रधानमंत्री @narendramodi जी के द्वारा चर्चा ओड़िशा समेत विश्व के करोड़ों जगन्नाथ भक्तों को प्रफुल्लित करेगा।

Translate Tweet

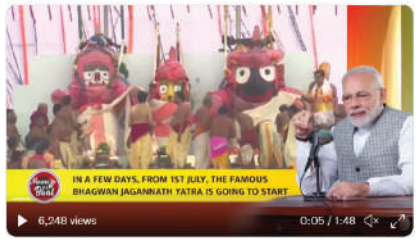


6,248 views 0:05 / 1:48

12:41 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for iPhone

Gajendra Singh Shekhawat
@gssjodhpur · Jun 26

आज मन की बात में माननीय मोदी जी ने उदयपुर की सुल्तान की बावड़ी का ज़िक्र किया।

उन्होंने बताया कि कैसे जागरूक पुजारी ने सुल्तान शब्द को सुर-तान की उपमा देकर उपेक्षित और वीरान पड़ी बावड़ी को न केवल स्वच्छ किया बल्कि यहां सुर और संगीत का आयोजन भी होने लगा।

#Rajasthan
#MannKiBaat

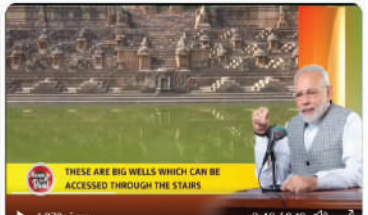


1,879 views 0:40 / 2:12

8 37 154

Nitin Gadkari
@nitin_gadkari · Jun 26

मन की बात में प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी ने देश के विभिन्न राज्यों में चल रही और आगामी रथ यात्रा के बारे में बात की। इसमें उन्होंने महाराष्ट्र के पंढरपूर वारी का ज़िक्र किया।

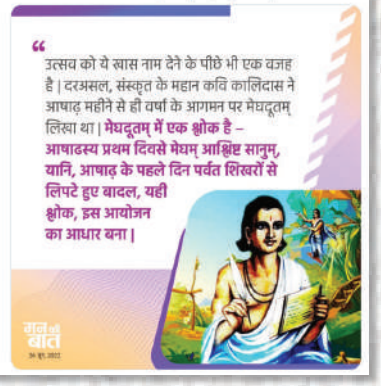

**Dr Tamilisai Soundararajan** @DrTamilisaiGuv

Thank Honb @PMOIndia for mentioning the efforts of Youth of Puducherry & Karaikal for "Recycling for Life"to save sea,beaches & ecology,in today's #MannKiBaat.
The organic waste collected were made into as compost.
Recalled massive cleaning initiative at 75 places in #Puducherry



Narendra Modi and 9 others

11:55 AM · Jun 26, 2022 · Twitter for Android

**Mithali Raj** @M_Raj03

To be appreciated by our beloved and respected Hon'ble Prime Minister of India Shri @narendramodi ji is always special, especially on the day I made my International debut. Thank you so much for your kind wishes Sir 🙏

PMO India @PMOIndia · 4d
India will always be grateful to @M_Raj03 for her monumental contribution to sports and for inspiring other athletes. #MannKiBaat



12:36 · 26 Jun 22 · Twitter for Android

**AgniKul Cosmos** @AgnikulCosmos

Humbled by this recognition. Lucky to be doing this when such historic reforms are happening. Thank you Hon'ble Shri. @narendramodi Ji. We are grateful to have the Govt's support & will make sure we use this opportunity to make original tech in India @PMOIndia @isro @INSPACeIND



**Kiren Rijiju** @KirenRijiju

Some incredibly inspiring stories of determination and grit today from @KheloIndia Youth Games on Hon'ble PM Sh @narendramodi's #MannKiBaat.




4:28 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for iPhone

**Devendra Fadnavis** @Dev_Fadnavis

When a Maharashtra's daughter Kajol Sargar gets mentioned by Hon PM @narendramodi ji, for her achievements in weight lifting along with helping her father at his tea stall in Sangli..
Proud of you, Kajol !
#MannKiBaat @mannkibaat




7:07 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for iPhone

**Vinod Tawde** @TawdeVinod

जल संरक्षण से जीवन संरक्षण!

मोदी जी ने मन की बात के माध्यम से जल संरक्षण के अनुकरणीय प्रयास कर रहे लोगों की कहानी से संदेश दिया कि हम सब को मिलकर इस दिशा में जिम्मेदारी से भाग लेना होगा।

#MannKiBaat
Translate Tweet




12:32 PM · Jun 26, 2022 · Twitter for Android

**Dr Jitendra Singh** @DrJitendraSingh

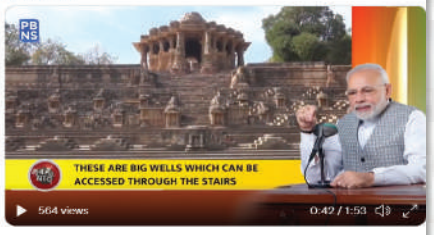

"तन्वी की तरह ही देश के करीब साढ़े सात सौ School Students, अमृत महोत्सव में ऐसे ही 75 Satellites पर काम कर रहे हैं, और भी खुशी की बात है, कि, इनमें से ज्यादातर Students देश के छोटे शहरों से हैं।"

- पीएम श्री @narendramodi.

#MannKiBaat





'పూర్ణ' భారత్

# 'মন কি বাত' অনুষ্ঠানে মিতালি ও নীরজের ভূয়সী প্রশংসায় প্রধানমন্ত্রী নরেন্দ্র মোদি



# पहाड़ों में स्वच्छता संदेश लेकर निकली साइकिल रैली को पीएम ने अनोखी बताई

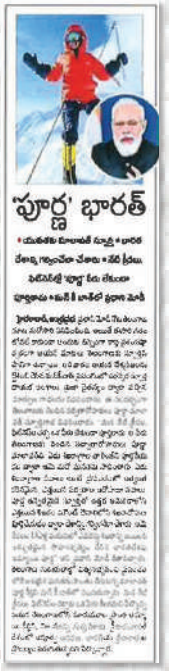

**मन की बात: पीएम ने इमरजेंसी को लेकर की कांग्रेस की आलोचना**



# PM Modi hails KIYG medallists

## He appreciated the fact that many youngsters came from humble backgrounds

Asian News International
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi praised the performance of youngsters who excelled at the recently concluded Khelo India Youth Games held in Haryana.

While addressing the nation during the latest episode of Mann ki Baat, PM Modi said "This zest is the hallmark of today's youth. From Start-Ups to the Sports World, the youth of India are making new records. In the recently held Khelo India Youth Games too, our players set many records. You would love to know that a total of 12 records have been broken in these games - not only that, 11 records have been registered in the names of female players. M. Martina Devi of Manipur has made eight records in weightlifting." "Similarly, Sanjana, Sonakshi and Bhavna have also made different records. With their hard work, these players have proven how much India's prestige is going to rise in the international sports arena in the coming times. I also congratulate all these players and wish them all the best for the future," added PM Modi.

> Friends, there has been another special feature of Khelo India Youth Games. This time too, many such talents have emerged, who are from very ordinary families. These players have struggled a lot in their lives to reach this stage of success. In their success, their family, and parents too, have had a big role to play
> **Narandra Modi**, Prime Minister



Prime Minister Narendra Modi also appreciated the fact that many youngsters came from humble backgrounds and came from small villages and towns. Despite all the difficulties, their families supported their children to play sports.

"Friends, there has been another special feature of Khelo India Youth Games. This time too, many such talents have emerged, who are from very ordinary families. These players have struggled a lot in their lives to reach this stage of success. In their success, their family, and parents too, have had a big role to play," said the PM.

"Father of Adil Altaf from Srinagar, who won the gold in 70 km cycling, does tailoring work, but, has left no stone unturned to fulfil his son's dreams. Today Adil has brought pride to his father and the entire Jammu-Kashmir. Gold winner L. Dhanush's father is a carpenter in Chennai. Sangli's daughter Kajol Sargar's father works as a tea vendor. Kajol would help her father and practise weight lifting as well. This hard work of hers and her family paid off and Kajol has won a lot of accolades in weight lifting. Tanu of Rohtak has performed a similar kind of miracle. Tanu's father Rajbir Singh is a school bus driver in Rohtak. By winning the gold medal in wrestling Tanu has realized her own, her family's and her father's dream," added PM Modi.

Prime Minister was happy to see the induction of five indigenous sports in this edition of Khelo India Youth Games with sports like Gatka, Thang Ta, Yogasan, Kalaripayattu and Mallakhamb.

## 'Mithali Raj is an inspiration to many'

Indo-Asian News Service
New Delhi

Prime Minister Narendra Modi on Sunday called Mithali Raj an inspiration to many and conveyed his best wishes to the legendary former Indian skipper who announced her retirement earlier this month.

Having made her debut as a 16-year-old in 1999, Mithali's career spanned nearly 23 years across four different decades during which time she became the central cog in the growth of the women's game in India and beyond.

In Sunday's episode of 'Mann Ki Baat', Modi described Mithali as "one of the most talented cricketers in India."

"Her retirement from cricket has emotionally moved many sports lovers. Mithali has not only been an extraordinary player but has also been an inspiration to many players. I wish Mithali all the very best for her future," the prime minister said.

# മൻ കി ബാത്തിൽ മോദി

## ബഹിരാകാശ മേഖലയിൽ സ്റ്റാർട്ടപ്പുകൾ പുത്തൻ പ്രതീക്ഷ



## ശബരിമല തീർത്ഥാടനത്തെ പരാമർശിച്ച് മോദി

**PM lauds Khelo India Games**

Chandigarh: Prime Minister Narendra Modi in his 'Mann Ki Baat' programme on Sunday appreciated Khelo India Youth Games 2021, which was held at Tau Devi Lal Sports Complex, Panchkula, under the leadership of Chief Minister Manohar Lal Khattar. The PM also appreciated the records set by girls in sports. TNS

# Democratic ethos won against Emergency: PM

HT Correspondent
letters@hindustantimes.com

NEW DELHI: India's democratic ethos prevailed over the internal Emergency imposed in the country in 1975, Prime Minister Narendra Modi said in his monthly radio broadcast, praising those who resisted the move.


Narendra Modi

"The democratic values ingrained in us since centuries, the spirit of democracy that flows in our veins, ultimately triumphed through the democratic process. People of India got rid of the Emergency and restored democracy," Modi said in the 90th edition of Mann ki Baat.

"There is no other example in the world to such victory over dictatorship through the democratic process. I was fortunate to be a witness as well as a participant in the struggle of our countrymen during the Emergency."

People did not lose their faith in democracy despite the draconian measures during the Emergency, the Prime Minister said. The country's courts, every constitutional institution and even the free press was brought under state control, and censorship was so stringent that nothing could be published without approval, he said.

He remembered the public opposition of legendary singer Kishore Kumar to the Emergency. "I remember when famous singer Kishore Kumar refused to praise the government, he was banned," he said. "He was not allowed on radio." Modi exhorted citizens not to forget the dark days of the Emergency. "Today, when the country is celebrating 75 years of Independence, we must not forget the dark period of Emergency. The future generations also must not forget it," he said. "Amrit Mahotsav not only tells us stories of Independence from foreign rule, but also tells us the journey of 75 years of Independence. We move ahead only by learning from every important juncture in our history."

Today, India's youth are ready to touch the sky, the Prime Minister said, highlighting the big strides made by Indians in the space sector.

"During one's childhood, stories of the moon and stars in the sky attracted everyone. For the youth, touching the sky is synonymous with making dreams come true. Today, when our India is touching the sky of success in so many fields, how can the skies, or space, remain untouched by it!" he said. "In the past few years, many big feats related to the space sector have been accomplished in our country."

Emphasising the role of the pilgrimages in Indian culture, he said these journeys create opportunities to serve the poor.



## मन की बात का 90वां एपिसोड

### मोदी ने कहा- इमरजेंसी लगाकर लोगों के अधिकार छीने गए, दुनिया में तानाशाही का ऐसा उदाहरण मिलना मुश्किल

[illegible]

#### गायक किशोर कुमार ने सरकार की वाह-वाही करने से मना किया तो उन पर बैन लगा दिया

[illegible]

#### भारत के लोगों ने लोकतांत्रिक तरीके से ही इमरजेंसी को हटाकर, वापस, लोकतंत्र की स्थापना की

[illegible]

#### हमारा भारत कई क्षेत्रों में सफलता का आकाश छू रहा

[illegible]

#### देश के करीब साढ़े सात सौ स्कूली छात्र 75 सैटेलाइट्स पर काम कर रहे

[illegible]

#### मोदी ने किया ओलंपिक गोल्ड मेडल विजेता नीरज चोपड़ा का जिक्र

[illegible]

#### स्टार्ट-अप्स से लेकर स्पोर्ट्स वर्ल्ड तक भारत के युवा नए-नए रिकॉर्ड बना रहे

[illegible]

# ઈસરો માટે લાડોલની છાત્રા તન્વી પટેલે સેટબોક્સ બનાવ્યું PM મોદીએ મન કી બાતમાં યાદ કરી



[illegible]

રથયાત્રામાં સેવા કરવાનું સૌભાગ્ય મળ્યું હતું : મોદી

# અમદાવાદ શહેરની રથયાત્રાને મોદીએ મન કી બાતમાં યાદ કરી

### રથયાત્રામાં ગરીબો અને વંચિતોની ભાગીદારી હોય છે



[illegible]

# രാജ്യപുരോഗതിക്ക് യുവാക്കൾ കുതിപ്പേകുന്നു: നരേന്ദ്ര മോദി

**മൻ കി ബാത്തിൽ ശബരിമല തീർഥാടനം പരാമർശിച്ച് പ്രധാനമന്ത്രി**

[illegible]

# PM lauds India's success in sports

Ravi Dutta Mishra
ravi.dutta@livemint.com

NEW DELHI

Prime Minister Narendra Modi on Sunday reached out to the youth, lauding India's success in sports, space technology and other areas.

Amid a worrying increase in the number of covid-19 cases, Modi also urged people to take the booster dose.

"If it is time for a precaution dose after your second dose, then you must take this third dose. Make your family members, especially the elderly, take a precautionary dose," Modi said in his *Mann Ki Baat* radio address.

**The PM reached out to the youth, reiterating India's success in sports and space in his 'Mann Ki Baat' address**

"We also have to take necessary precautions like hand hygiene and masks. We also have to be alert of the diseases caused by the surrounding filth during the rainy season," he added.

Modi said the youth of the country are ready to touch the sky and are launching their own satellites. "Till a few years ago, in our country, in the space sector, no one even thought about startups. Today their number is more than a hundred. All these startups are working on ideas, which were either not thought about earlier, or were considered impossible for the private sector," he said.

Modi said that startups such as Digantara and Dhruva Space are set to make their first launch from Indian Space Research Organization's (Isro) launch vehicle on 30 June. In sports, the dominance of Indian players is rising, Modi said, adding that talent is emerging from ordinary families in Khelo India Youth Games.

"Father of Adil Altaf from Srinagar, who won the gold in 70 km cycling, does tailoring work, but has left no stone unturned to fulfil his son's dreams. Today, Adil has brought pride to his father and the entire Jammu-Kashmir," PM Modi said.

# 'We have over 100 space startups'

**Highlighting giant strides by Indian youth in the space sector, PM Modi, in his Mann Ki Baat, said "the country cannot lag behind as youth is ready to touch the sky. A few years ago, people never thought of space startups. But today, their number has crossed 100", reports Surendra Singh.**

**Modi said, "One of the big achievements in space is the creation of In-Space, which is creating new opportunities for the private sector." He said, "Earlier youth thought of the space sector as a "secret mission," but after the country undertook space reforms, the same youth are now launching own satellites." He said that over 750 school students are now working on 75 small satellites.**

# Never forget dark days of 1975 when all rights were taken away, says Modi

EXPRESS NEWS SERVICE
@ New Delhi

STATING that the "dark days of Emergency" had "shaken" the conscience of the nation, Prime Minister Narendra Modi on Sunday said the country should never forget the "dreadful period".

Delivering the 90th edition of his radio programme 'Mann Ki Baat', the PM recalled the Emergency imposed in the country in 1975 curtailing fundamental rights.

"Today, when the country is celebrating 75 years of Independence as Aazadi Ka Amrit Mahotsava, we should never forget that dreadful period of emergency. The generations to come should also not forget it," the PM asserted, adding that it was in the month of June the Emergency was imposed.

"During that time, all the rights were taken away from the citizens. One amongst those rights was the 'right to life and personal liberty' provided to all Indians under Article 21 of the Constitution. The country's courts, every Constitutional institutions and the press were put under control," the PM said, adding an instance as how famous singer Kishore Kumar's entry on the radio was banned when he refused to applaud the government. "But the people of India re-established democracy in a democratic way. It is difficult to find such an example of defeating a dictatorial mindset, a dictatorial tendency in a democratic way, in the whole world," he claimed.

Dwelling upon other subjects, the PM lauded Tanvi Patel, a schoolgirl in Mehsana, who is working on a tiny satellite. He said that India is doing well in the space start ups with a huge influx of new talents flocking towards it. He also spoke about Tanveer Ahamad who is trying to map waste in space and also lauded Neha, who is the founder of Astrome, a space start-up.

# India can't lag behind as youth is ready to touch the sky: PM

PM mentioned about two start-ups - Agnikul and Skyroot from Chennai and Hyderabad





[illegible]

**PM MODI LAUDS OLYMPIC MEDALIST NEERAJ CHOPRA**

[illegible]

**PM MODI INVOKES 1975 EMERGENCY IN MANN KI BAAT**

[illegible]

**'CLOSE TO 200 CRORE COVID VAX ADMINISTERED'**

[illegible]



# मिताली राज ही महिलांसाठी प्रेरणा

### पंतप्रधान नरेंद्र मोदी यांनी केले 'मन की बात'मधून कौतुक



[illegible]

**मितालीचे पराक्रम**

[illegible]

# Increase uptake of boosters: PM

**Amid upsurge in Covid cases in many states, PM Narendra Modi urged people to increase uptake of booster or precaution doses while also following Covid protocol including hand hygiene and use of masks to prevent a further spread of infection, reports Sushmi Dey.**

**"If it is time for a precaution dose after your second dose, then you must take this third dose. Make your family members, especially the elderly, take a precautionary dose. We also have to take necessary precautions like hand hygiene and masks," Modi said making an appeal to countrymen during his 'Mann ki Baat' address.**

# Take precautionary dose of COVID vaccine on time: PM Modi to people

NEW DELHI, June 26 (PTI)

PRIME Minister Narendra Modi on Sunday urged people to ensure that they along with their family members, especially the elderly, get the precautionary dose of the vaccine against coronavirus on time and take necessary precautions like hand hygiene and masks.

In his Mann Ki Baat radio broadcast, Modi also said that it is a matter of satisfaction that today the country has a comprehensive protective shield of vaccines. "We have reached close to 200 crore vaccine doses. The precaution dose is also being rapidly administered in the country," he noted.

"If it is time for a precaution dose after your second dose, then you must take this third dose. Make your family members, especially the elderly, take a precautionary dose. We also have to take necessary precautions like hand hygiene and masks," Modi said.

The Prime Minister also called on people to be alert to diseases caused by the surrounding filth during the rainy season.

"All of you stay alert, stay healthy and keep moving forward with similar positive energy," he said in his radio broadcast.

The cumulative number of COVID-19 vaccine doses administered in the country crossed 197 crore on Saturday, according to the Union Health Ministry.

India began administering precaution doses of vaccines to healthcare and frontline workers and those aged 60 and above with comorbidities from January 10. The country began inoculating children aged 12-14 from March 16 and also removed the comorbidity clause, making all people aged above 60 eligible for the precaution dose of COVID vaccine.

# 200 करोड़ कोविड वैक्सीन डोज के पार हो चुका है देश : आदेश

नई दिल्ली। आज कोरोना वैक्सीन की संख्या पूरे विश्व में सबसे अधिक है और हमारा देश 200 करोड़ वैक्सीन डोज के पार हो चुका हैं। एनडीएमसी फ्लैट में आयोजित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम को सुनने के बाद दिल्ली प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष आदेश गुप्ता ने पत्रकारों से बात करते हुए उक्त बाते कहीं। उन्होंने कहा कि आज मन की बात के 90वें संस्करण में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के विभिन्न राज्यों में चल रहे खेल आयोजनों का जिक्र किया और साथ ही देश को एक बार फिर से गौरवांवित करने वाले नीरज चोपड़ा की चर्चा की जिन्होंने देश को एक और गोल्ड देने का अवसर प्रदान किया है। बता दें कि रविवार को दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर आयोजित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

# PILGRIMAGES OFFER SPIRITUAL CONNECT, OPPORTUNITY TO SERVE THE POOR: PM MODI



NEW DELHI: Emphasising the role of the Yatras in Indian culture, Prime Minister Narendra Modi in his monthly radio broadcast Mann Ki Baat on Sunday said the pilgrimages in the country do not just offer spiritual vibes but also create opportunities to serve the poor.

In the 90th episode of his monthly radio programme 'Mann Ki Baat', Prime Minister Modi said, "Upanishads mention a life mantra-'Charaiveti-Charaiveti-Charaiveti'. It means keep going, keep going. This mantra is so popular in our country because it is part of our nature to keep moving and be dynamic. As a nation, we have come this far through a journey of development spanning thousands of years."

Prime Minister said the country has always moved ahead by accepting new ideas and new changes.

"Our cultural mobility and travels have contributed a lot to this. That is why our sages and saints had entrusted us with spiritual responsibilities like pilgrimage. All of us go on varied pilgrimages," he said.

PM Modi said a large number of devotees participated in the Chardham Yatra this year.

Referring to Lord Jagannath Rath Yatra, Prime Minister said, "In our country, different Dev-yatras also take place time to time. In Dev Yatras, not only the devotees but also our Gods go on a journey. In just a few days from now on July 1, the famous journey of Lord Jagannath is going to commence. All of us are familiar with the Puri yatra in Odisha. People make efforts to ensure that on this occasion they get the good fortune of going to Puri."

In other states too, he said Jagannath Yatras are taken out with great gaiety and fervour. Lord Jagannath Yatra begins on Dwitiya, the second day of the month of Ashadha in the Hindu calendar.

He said, "In our texts 'Ashadhasya Dwitiya divase... Rath Yatra', this is how the description is found in Sanskrit shlokas. In Ahmedabad, Gujrat too, every year Rath Yatra begins from Ashadh Dwitiya. I was in Gujarat, so I also used to get the privilege of serving in this Yatra every year."

Ashadha Dwitiya, also known as Ashadhi Bij, marks the beginning of the new year of Kutch on this day.

"For me this day is also very special - I remember, a day before Ashadha Dwitiya, that is, on the first Tithi of Ashadha, we started a Sanskrit festival in Gujarat, which comprises songs, music and cultural programmes in Sanskrit language. The name of this event is - 'Ashadhasya Prathum Diwase'.

PM Modi said the yatra of Lord Jagannath be it Ahmedabad or Puri, gives many deep human messages.

"Bhagwan Jagannath is the lord of the world, but the poor and downtrodden have a special participation in his journey. God also walks along with every section and person of the society. Similarly, in all the journeys that take place in our country, there is no such distinction between poor and rich, high and low. Rising above all discrimination, the journey itself is paramount," he said.

# ମୋଦୀଙ୍କ ମନ୍ କି ବାତ୍‌ରେ ପୁରୀ ରଥଯାତ୍ରା



### ଘୋଷଯାତ୍ରା: ମୁତୟନ ହେବେ ୧୮୦ ପ୍ଲାଟୁନ ଫୋର୍ସ

[illegible]

# अंतरिक्ष क्षेत्र में सफलता का आकाश छू रहा है देश

नई दिल्ली, 26 जून (ए)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि विभिन्न क्षेत्रों में मिल रही उपलब्धियों के साथ ही देश अब अंतरिक्ष क्षेत्र में भी नया आकाश छू रहा है और स्टार्टअप जैसे कार्यक्रम के जरिए युवा अंतरिक्ष के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर रहे हैं। मोदी ने रविवार को रेडियो पर प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में कहा कि स्टार्ट अप उनकी सरकार की अनूठी योजना है और इसके जरिये देश का युवा नए आकाश को छूने की कोशिश में लगा है। अन्तरिक्ष कार्यक्रम में जब से निजी क्षेत्र को मौका दिया गया है देश के युवा भी इससे जुड़ रहे हैं और विभिन्न कहेनों में प्रतिभा का परिचय दे रहे हैं।

उन्होंने कहा बीते कुछ समय में हमारे देश में अन्तरिक्ष क्षेत्र से जुड़े कई बड़े काम हुए हैं। देश की इन्हीं उपलब्धियों में से एक इन स्पेस नाम की एजेंसी है जो स्पेस के क्षेत्र में निजी क्षेत्र के लिए नए अवसर दे रही है। इस शुरुआत ने देश के युवाओं को विशेष रूप से आकर्षित किया है।



कुछ दिन पहले जब मैं इन स्पेस के लोकार्पण के लिए गया था तो मैंने कई युवा स्टार्ट अप के आईडिया और उत्साह को देखा। मैंने उनसे काफी देर तक बातचीत भी की। आप भी जब इनके बारे में जानेंगे तो हैरान हुए बिना नहीं रह पाएँगे। प्रधानमंत्री ने कहा, आज से कुछ साल पहले तक हमारे देश में स्पेस सेक्टर में स्टार्ट अप के बारे में कोई सोचता तक नहीं था। आज इनकी संख्या सौ से भी ज्यादा है। ये सभी स्टार्ट अप ऐसे ऐसे आईडिया पर काम कर रहे हैं जिनके बारे में पहले या तो सोचा ही नहीं जाता था या फिर निजी क्षेत्र के लिए असंभव माना जाता था। उदाहरण के लिए, चेन्नई और हैदराबाद के दो स्टार्टअप हैं अग्निकुल और स्काईरूट ये स्टार्ट अप ऐसे लांच व्हेहकल विकसित कर रहे हैं जो अन्तरिक्ष में छोटे लोड लेकर जायेंगे।

ऐसे ही हैदराबाद का एक और केंद्र है जो उच्च तकनीकी के सोलर पैनल बना रहा है। एक और स्पेस स्टार्टअप दिगंतरा के तनवीर अहमद से भी मिला था जो अंतरिक्ष के कचरे को मैप करने का प्रयास कर रहे हैं।

### जल संरक्षण के लिए विशेष प्रयास करने की जरूरत : मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा है कि जल संरक्षण समय की जरूरत है और देश की आबादी को पर्याप्त जल पहुंचाने के लिए वर्षा जल का संरक्षण आवश्यक हो गया है। मोदी ने रविवार को रेडियो पर प्रसारित अपने मासिक कार्यक्रम मन की बात में कहा कि अब बरसात का समय आने वाला है और देश में जल संरक्षण को लिए इस अवसर का लाभ उठाने की जरूरत है। बरसात के दिन जो अवसर उपलब्ध कराते हैं उनका पूरा उपयोग किये जाने की जरूरत है उन्होंने कहा कि गांव में पर्याप्त जल उपलब्ध कराने के लिए पुरानी बावड़ियों को सुधार कर उन्हें अच्छा बनाने की जरूरत है।

# पीएम मोदी ने मन की बात में मिताली राज का किया जिक्र



नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मन की बात कार्यक्रम के जरिए देश को संबोधित किया. अपने संबोधन में उन्होंने आपातकाल, युवाओं, मानसून समेत कई मुद्दों पर चर्चा की. कार्यक्रम के दौरान पीएम मोदी ने भारतीय क्रिकेट टीम की पूर्व कप्तान मिताली राज को भी याद किया. 1999 में महिला वनडे में डेब्यू करने वाली मिताली राज ने 8 जून को अपने 23 साल के इंटरनेशनल करियर पर पूर्ण विराम लगा दिया था। पीएम ने अपने संबोधन में कहा कि मैं आज भारत की सर्वाधिक प्रतिभाशाली क्रिकेटरों में से एक मिताली राज की भी चर्चा करना चाहूंगा. उन्होंने इसी महीने क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की है, जिसने कई खेल प्रेमियों को भावुक कर दिया है. मैं, मिताली को उनके भविष्य के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं देता हूं।

gujaratvaibhav.com

પીએમ મોદીએ મન કી બાતમાં યાદ કર્યો દેશના કાળા ઈતિહાસને

# કટોકટીકાળમાં લોકતંત્રને કચડવાનો હીન પ્રયાસ કરાયો હતો : PM મોદી

### હાલમાં દેશના તમામ ક્ષેત્રોમાં યુવાનો નવી ઊંચાઈઓ સર કરી રહ્યા હોવાનો દાવો

[illegible]



# मन की बात : 'खेलो इंडिया' से सामने आई साधारण परिवारों की कई असाधारण प्रतिभायें : पीएम मोदी



[illegible]

# ശബരിമല തീർഥാടനത്തിന് വലിയ പ്രാധാന്യം: മോദി

[illegible]

# Lord Jagannath gives deep human messages through Rath Jatra journey: PM Narendra Modi

PRD BUREAU/PTI

BHUBANESWAR, JUN 26





PRIME Minister Narendra Modi Sunday said Lord Jagannath gives deep human messages to people through his journey during the Rath Jatra, which is scheduled to be held on July 1.

The Prime Minister made the observation while addressing the 90th episode of his monthly radio address 'Mann Ki Baat'.

In just a few days, the famous Rath Jatra of Lord Jagannath is going to start in Puri, and efforts are made by the people to have the good fortune of visiting Puri on this occasion, Modi said.

"Be it Ahmedabad or Puri, Lord Jagannath gives us many deep human messages through this journey. Bhagwan Jagannath is the lord of the world, but the poor and downtrodden have a special participation in his journey.

"Similarly, in all the journeys that take place in our country, there is no such distinction between poor and rich, high and low. Rising above all discrimination, the journey itself is paramount..." the PM said.

Noting that this time a large number of devotees participated in the Chardham Yatra, Modi said from time to time, different Dev Yatras also take place in our country.

In Dev Yatras, not only the devotees but also Gods also go on a journey, he said.

"Bhagwan Jagannath Yatra begins on Dwitiya, the second day of the month of Ashadha. In our texts 'Ashadhasya Dwitiya divase ... Rath Yatra', this is how the description is found in Sanskrit shlokas," Modi said.

In Ahmedabad, Gujarat, too every year Rath Yatra begins from 'Ashadh Dwitiya', he said adding 'I was in Gujarat, so I also used to get the privilege of serving in this Yatra every year'.

संवाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'मन की बात' में आपातकाल का किया जिक्र

# लोगों से कोरोना प्रिकॉशन डोज लगवाने का किया आग्रह

नई दिल्ली | एजेंसी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से देश को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने आपातकाल पर बात की। पीएम मोदी ने कहा कि अभी कुछ ही दिनों में 1 जुलाई से भगवान जगन्नाथ की प्रसिद्ध यात्रा शुरू होने जा रही है। दूसरे राज्यों में भी जगन्नाथ यात्रा खूब धूमधाम से निकाली जाती है।

भगवान जगन्नाथ यात्रा आषाढ़ महीने की द्वितीया से शुरू होती है। आषाढ़ द्वितीया, जिसे आषाढ़ी बिज भी कहते है, इस दिन से ही कच्छ का नववर्ष भी शुरू होता है। पीएम मोदी ने अमरनाथ यात्रा, सबरीमाला यात्रा और महाराष्ट्र के पंढरपुर में होने वाली यात्रा के बारे में भी जिक्र किया। उन्होंने लोगों से यह आग्रह किया कि यात्राओं के बीच कोरोना से सावधानी का खयाल रखें और प्रिकॉशन डोज लगाएं। प्रधानमंत्री ने कहा, आपातकाल के दौरान भारत के लोकतंत्र को कुचलने का प्रयास किया गया था। देश की अदालतें, हर संवैधानिक संस्था, प्रेस, सब पर नियंत्रण लगा दिया गया था। सेंसरशिप की ये हालत थी कि बिना स्वीकृति कुछ भी छापा तक नहीं जा सकता था।

### हमारा भारत कई क्षेत्रों में सफलता का आकाश छू रहा



प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज हमारा भारत जब इतने सारे क्षेत्रों में सफलता का आकाश छू रहा है, तो आकाश या अन्तरिक्ष, इससे अछूता कैसे रह सकता है। बीते कुछ समय में हमारे देश में स्पेस सेक्टर से जुड़े कई बड़े काम हुए हैं। देश की इन्हीं उपलब्धियों में से एक है। स्पेस नाम की एजेंसी का निर्माण। उन्होंने कहा, आज से कुछ साल पहले हमारे देश में स्पेस सेक्टर में स्टार्ट अप के बारे में कोई सोचता तक नहीं था। आज इनकी संख्या 100 से भी ज्यादा है। उन्होंने कहा, देश का युवा आकाश छूने को तैयार है तो हमारा देश कैसे पीछे रह सकता है।

**मिताली राज को किया याद।** पीएम मोदी ने कहा, भारत की सर्वाधिक प्रतिभाशाली क्रिकेटरों में मिताली राज भी है। उन्होंने इसी महीने क्रिकेट से संन्यास की घोषणा की है। उन्होंने कई खेल प्रेमियों को भावुक कर दिया। उन्होंने कहा, वह महज एक असाधारण खिलाड़ी नहीं है। वह अनेक खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्त्रोत भी रही है।

# 'जल संरक्षण' की दिशा में विशेष प्रयास की जरूरत : मोदी

### प्रधानमंत्री ने मन की बात कार्यक्रम के माध्यम से जनता से की अपील



### आपातकाल को आने वाली पीढ़ियों को कभी नहीं भूलना चाहिए

### अंतरिक्ष क्षेत्र में सफलता का आकाश छू रहा है देश

[illegible]

# भारत की रग-रग में लोकतंत्र की भावना : मोदी

मन की बात



यह भी कहा पीएम ने

[illegible]

THE TIMES OF INDIA

**100 space startups have come up in a few yrs; 750 students making 75 small satellites: PM Modi**

Prokerala.com

**PM Modi lauds KIYG 2021 stars in 'Mann ki Baat'**

The Tribune

'Mann ki Baat': PM Modi mentions Emergency, lauds achievers from sports, pitches for conservation of water

REPUBLICWORLD.COM

**'Waste To Wealth': PM Modi Shares Inspiring Stories Of Efforts Made Towards Cleanliness**

The Indian EXPRESS

**Lord Jagannath's Rath Yatra conveys deep human messages: PM Modi**



NEWS 18 हिंदी

**मन की बात: पीएम नरेन्द्र मोदी ने क्यों सराहा राजस्थान की सुल्तान बावड़ी को? जानिये पूरा इतिहास**

NBT

**भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के जरिये गहरा मानवीय संदेश देते हैं : प्रधानमंत्री मोदी**

tv9 भारतवर्ष

**Mann Ki Baat: जिस अग्निकुल, स्काईरूट और दिगंतरा स्टार्टअप का जिक्र PM मोदी ने मन की बात में किया वो क्या काम करते हैं?**

दिव्य हिमाचल
देवभूमि का सर्वाधिक लोकप्रिय मीडिया

**प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बोले, जल और जल संरक्षण' की दिशा में विशेष प्रयास करने की ज़रूरत**

# 'मन की बात'

## के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन करें।